हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● शुक्रवार ● 04.07.2025 ● वर्ष : 15 ● अंक : 340 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

रांची वासियों को मिली रातू रोड फ्लाईओवर की सौगात, केंद्रीय मंत्री ने किया उद्घाटन

नौजवानों को काम मिलेगा, तभी विकास संभव है : नितिन गडकरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : रांची वासियों को रातू रोड फ्लाईओवर की सौगात मिल गई है। इसका उद्घाटन केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने किया। इससे पहले उन्होंने गढ़वा में दो राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इसके बाद उन्हें दोपहर 2:30 बजे गढ़वा से रांची पहुंचना था, लेकिन रांची एयरपोर्ट के एटीसी ने खराब मौसम को देखते हुए उड़ान की अनुमति नहीं दी। जानकारी के मुताबिक मंत्री का हेलीकॉप्टर छोटा और कम पावर वाला है, जो खराब मौसम में उड़ान के लिए उपयुक्त नहीं माना गया। ऐसे में नितिन गडकरी सीधे गढ़वा से हेलीकॉप्टर से गया जी रवाना हो गए हैं। वहां से वह सर्विस प्लेन के जरिये रांची पहुंचे।

गढ़वा में दो राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

गढ़वा में दो राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास का कुल कुल लागत 2,460 करोड़ रुपये है। इस दौरान उन्होंने झारखंड में सड़क कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने, रोजगार सृजन और उद्योगों के विकास के लिए कई योजनाओं का ऐलान किया। समारोह को संबोधित करते हुए गडकरी ने कहा कि आपको बहुत अच्छी फोरलेन सड़क मिली है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति कैनेडी कहते थे कि अच्छे रास्ते होंगे, तो देश समृद्ध होगा। झारखंड खनिजों से भरपूर है। यहां के नौजवानों को काम मिलेगा, तभी विकास संभव है। गडकरी ने अपने क्षेत्र की मिसाल देते हुए कहा कि हमारे इलाके में पानी की किल्लत थी, जिससे 10 हजार किसानों ने आत्महत्या की। हमने तालाब बनाकर हालात बदल दिए। मिट्टी को सड़क निर्माण में लगाया। उसी मॉडल को झारखंड में लागू करूंगा। यहां भी 1,000 तालाब बनवाए जाएंगे।

टोरी-चंदवा और गढ़वा-अंबिकापुर सड़क को मिली मंजूरी

कार्यक्रम के दौरान गडकरी ने टोरी-चंदवा मार्ग और गढ़वा से अंबिकापुर तक फोरलेन सड़क को मंजूरी दी। यह निर्णय स्थानीय विधायक सत्येंद्र तिवारी और सांसद बीडी राम की मांग पर लिया गया। मंत्री ने कहा कि सांसद बीडी राम के प्रयासों का ही यह परिणाम है कि आज यह सड़क हकीकत बन रही है।।

किसान को बताया 'ऊर्जा दाता' पुआल से बनेगी सीएनजी

गडकरी ने कहा कि देश का किसान अब केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि ऊर्जा दाता भी होगा। झारखंड में धान की पैदावार होती है, और पुआल से बायो-सीएनजी बनाई जा सकती है। यह योजना यहां भी शुरू की जा सकती है। अंत में गडकरी ने पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की और कहा कि हेमंत सोरेन से उनकी बात हुई है। लेकिन वह उपस्थित नहीं हो सके क्योंकि वे दिल्ली में शिबू सोरेन के साथ हैं। गडकरी ने भरोसा दिलाया कि झारखंड में अधूरी कोई योजना नहीं रहेगी। उन्होंने मंच से जय जोहार, जय झारखंड और नमस्कार के साथ अपना भाषण समाप्त किया।

भारत के लिए लोकतंत्र एक सिस्टम नहीं संस्कार है : प्रधानमंत्री मोदी

एजेंसी

घाना : भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी घाना के दौरे पर हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 साल बाद घाना की यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री बने हैं। बुधवार को घाना पहुंचने पर राष्ट्रपति महामा ने हवाई अड्डे पर पीएम मोदी का गर्मजोशी से स्वागत किया था। प्रधानमंत्री मोदी को गार्ड ऑफ ऑनर के साथ 21 तोपों की सलामी भी दी गई थी। इस बीच घाना की संसद को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने जैसी ही घाना की भाषा में नमस्ते कहा, सदन तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। अपने संबोधन की शुरूआत में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज इस प्रतिष्ठित सदन को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत गौरव का अनुभव हो रहा है। घाना में होना सौभाग्य की बात है, यह एक ऐसी भूमि है जो लोकतंत्र की भावना से ओतप्रोत है। पीएम मोदी ने घाना और भारत की दोस्ती का भी जिक्र किया।

सर्वोच्च सम्मान के लिए पीएम मोदी ने जताया आभार

पीएम मोदी ने कहा, विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रतिनिधि के रूप में, मैं अपने साथ 1.4 अरब भारतीयों की सद्भावना और शुभकामनाएं लेकर आया हूं। उन्होंने कहा कि घाना की धरती सोने के लिए जानी जाती है। घाना की यह पहचान इसके लिए नहीं है कि उसकी धरती के अंदर क्या है, यह उसके लिए है कि यहां के दिल के अंदर क्या है। घाना से मिले सर्वोच्च सम्मान के लिए मैं 140 करोड़ भारतीयों की तरफ से आभार व्यक्त करता हूं। घाना की संसद को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि भारत लोकतंत्र की मां है। भारत के लिए लोकतंत्र एक सिस्टम नहीं संस्कार है। उन्होंने कहा कि भारत में 2 हजार 500 राजनीतिक दल हैं। 20 अलग-अलग पार्टियां अलग-अलग राज्यों में सरकार चला रही हैं। यही वजह है कि भारत में आने वाले लोगों का भारत में भव्य स्वागत होता है। घाना में भारतीय के लोग उसी तरह घुले-मिले हैं जैसे चाय में शक्कर मिली होती है। पीएम मोदी ने कहा, जब हम घाना को देखते हैं तो हम एक ऐसे राष्ट्र को देखते हैं जो साहस के साथ खड़ा है। समावेशी प्रगति के प्रति आपकी प्रतिबद्धता ने वास्तव में घाना को पूरे अफ्रीकी महाद्वीप के लिए प्रेरणा का केंद्र बना दिया है।

भारत लिख रहा है विकास की नई इबारत

घाना की संसंद को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा, भारत "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभाग भवेत।" की बात करता है। पीएम ने घाना की संसद में आतंकवाद का भी मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि दुनिया के लिए आतंकवाद बड़ा मुद्दा और बड़ी समस्या है, इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन भी एक बड़ा मुद्दा है। पीएम ने कहा कि भारत आज विकास की नई इबारत लिख रहा है। कितना सुखद सहयोग है कि भारत के कई गौरवमयी पलों से अफ्रीका जुड़ा हुआ है। जब भारत का चंद्रयान साउथ पोल पर लैंड हुआ था तब मैं भारत में था, आज जब भारत का एक अंतरिक्ष यात्री मानवता की भलाई के लिए स्पेस में है तब भी मैं अफ्रीका में हूं।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

'नारी शक्ति के लिए नए अवसर'

सावित्रीबाई फुले राष्ट्रीय महिला एवं बाल विकास संस्थान,
के क्षेत्रीय केंद्र, रांची के उद्घाटन के अवसर पर
समस्त झारखंडवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

"हमारी माताएं, बहनें, बेटियां, विकसित भारत के संकल्प में बढ़-चढ़कर भागीदारी निभा रही हैं। बीते 11 वर्षों में हमारी नारी शक्ति की सफलताएं देशवासियों को गौरवान्वित करने वाली हैं।"
- श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

रांची केंद्र के खुलने से लाभ:

- देश के पूर्वी क्षेत्र के राज्यों - झारखंड, बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल को मिलेगा लाभ और मंत्रालय की प्रमुख योजनाओं की विशिष्ट प्रशिक्षण और अनुसंधान आवश्यकताओं को किया जाएगा पूरा।
- केंद्र द्वारा बाल मार्गदर्शन एवं परामर्श में एडवांस डिप्लोमा पाठ्यक्रम और अग्रिम पंक्ति के कर्मियों को बेहतर प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।
- रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे।

उद्घाटन समारोह

मुख्य अतिथि
श्रीमती अन्नपूर्णा देवी
माननीय केंद्रीय मंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

गरिमामयी उपस्थिति

श्री संजय सेठ
माननीय राज्य मंत्री, रक्षा मंत्रालय

श्रीमती सावित्री ठाकुर
माननीय राज्य मंत्री, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय

श्री नवीन जयसवाल
माननीय विधायक, हटिया

श्री राजेश कच्छप
माननीय विधायक, खिजरी

दिनांक : 4 जुलाई 2025, शुक्रवार
स्थान : सावित्रीबाई फुले राष्ट्रीय महिला एवं बाल विकास संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, झारखंड शहरी नियोजन एवं प्रबंधन संस्थान, एचईसी मुख्यालय के पास, धुर्वा, रांची, झारखंड

CBC 46101/13/0013/2526

एक नजर

चौपारण में दोपहरिया मातम के साथ मुहर्रम शुरू

चौपारण : प्रखंड में गुरुवार को मुहर्रम की सातवीं तारीख को दोपहरिया मातम के साथ मुहर्रम का त्यौहार शुरू हो गया। हल्की-फुल्की वर्षा के बीच 26 पंचायत के इमामबाडों पर अकीदत के साथ लोगों ने नियाज व फातिहा किया, निशान खड़े किए। फातिहा में नौजवान, महिलाएं, बच्चे बूढ़े सभी जूटे थे। फातिहा के बाद पूरा इलाका या अली या अली या हुसैन या हुसैन के नारे से गुंज उठे। मुहर्रम की सातवीं तारीख में इमामबाड़ों पर फतिया खानी हुई। फातिया खानी से पहले मोहम्मद जब्बार ने बताया कि मुहर्रम के सातवीं के दिन फातिहा के बाद जो मन्नतें मांगी जाती है वह पूरी होती है।इमामबाडों पर हजरत इमाम हुसैन के सदके में देश में अमन व सुकून, तरक्की, खुशहाली एकता व अखंडता के लिए सामूहिक दुआएं मांगी। बता दे बकरीद का त्यौहार खत्म होते ही मुस्लिम मोहल्लों में मुहर्रम का डंका बजना शुरू हो जाता है। अखाडियों द्वारा अखाड़ों में नुमाइशी खेलों का प्रदर्शन करने के लिए देर रात तक प्रेक्टिस करते रहते हैं।

चौपारण सीएचसी की प्रभारी बनी डॉ. फरहाना महफूज

चौपारण : रिश्वत के मामले में एसीबी द्वारा गिरफ्तार किए गए डॉ. सतीश कुमार को चौपारण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के प्रभारी पद से हटा दिया गया है। उनकी जगह अब इसी केंद्र में कार्यरत महिला चिकित्सक डॉ. फरहाना महफूज को प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी की अतिरिक्त जिम्मेदारी दी गई है। 1 जुलाई 2025 को डॉ. सतीश कुमार को एसीबी, उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल द्वारा रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया गया था। इस गिरफ्तारी के बाद स्वास्थ्य केंद्र की कार्यप्रणाली व कर्मियों के वेतन भुगतान आदि में बाधा उत्पन्न होने की आशंका को देखते हुए मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, हजारीबाग कार्यालय ने त्वरित कार्रवाई करते हुए डॉ फरहाना को प्रभारी नियुक्त किया। डॉ. फरहाना महफूज पूर्व से ही चौपारण सीएचसी में चिकित्सक के रूप में कार्यरत थीं। अब उन्हें नियमित कार्यों के साथ-साथ प्रभारी चिकित्सक पद की प्रशासनिक जिम्मेदारियां भी सौंपी गई हैं। उन्हें यह भी निर्देश दिया गया है कि वे एनएचएम से जुड़े कार्यों का पालन नियमपूर्वक सुनिश्चित करें। यह आदेश असैनिक शल्य चिकित्सक-सह-मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, हजारीबाग द्वारा 2 जुलाई को जारी किया गया।

कोल इंडिया की मुआवजा नीति में ऐतिहासिक बदलाव

हजारीबाग : कोल इंडिया लिमिटेड ने भूमि अधिग्रहण की मुआवजा नीति में ऐतिहासिक परिवर्तन करते हुए रैयतों के लिए अधिक लाभकारी योजना लागू की है। 30 जून 2025 को कोल इंडिया बोर्ड की 350वीं बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस बदलाव की जानकारी सीपीएम जिला सचिव और सीटू नेता गणेश कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि अब यदि कोई रैयत 2 एकड़ भूमि के बदले नौकरी नहीं लेना चाहता, तो उसे न्यूनतम 89 लाख और अधिकतम 1.20 करोड़ तक की एकमुश्त राशि दी जाएगी। पुरानी नीति के तहत नौकरी नहीं लेने पर रैयत को मात्र 5 लाख प्रति एकड़ मुआवजा या 30 वर्षों तक 30,000 मासिक पेंशन मिलती थी, जिसमें हर साल 1 प्रतिशत की बढ़ोतरी का प्रावधान था। अब इस योजना को और अधिक लाभकारी बनाते हुए निर्णय लिया गया है।

श्री ज्वेलर्स फायरिंग कांड का खुलासा उत्तम यादव गिरोह के नौ सदस्य गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : हजारीबाग में बीते 22 जून को महावीर स्थान स्थित श्री ज्वेलर्स में दो नकाबपोश अपराधियों ने 7-8 राउंड फायरिंग कर दहशत फैला दी थी। इस फायरिंग की जिम्मेदारी उत्तम यादव नामक युवक ने सोशल मीडिया पर ली थी। घटना के बाद पूरे हजारीबाग में सनसनी फैल गई थी। भय के कारण स्वर्ण व्यवसायियों ने दो दिन तक अपनी दुकानें बंद रखीं थी और कैंडल मार्च निकालकर विरोध भी जताया था। इसके बाद व्यवसायियों को अलग-अलग नंबरों से रंगदारी वसूली और लेवी की मांग की जाने लगी, जिससे शहर में डर और अफवाहों का माहौल गहरा गया। स्वर्ण व्यवसायियों ने पुलिस से अपनी सुरक्षा की गुहार लगाई थी। इस मामले को लेकर

आज हजारीबाग पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि उत्तम यादव गिरोह के सदस्य हथियारों से लैस होकर एक काली पल्सर बाइक और ग्रैंड विटारा कार में सवार होकर शहर में बड़ी घटना को अंजाम देने की फिराक में हैं। सूचना मिलते ही एक विशेष रक्क्ष टीम का गठन किया गया और कार्मेल स्कूल मोड़ के पास एंटी क्राइम चेकिंग शुरू की गई। इसी दौरान एक काली पल्सर और एक ग्रैंड विटारा कार को रोकने की कोशिश की गई। पुलिस को देख दोनों वाहन वेल्स ग्राउंड की ओर भागने लगे। पुलिस ने पीछा कर मोटरसाइकिल सवार दो युवकों को धर दबोचा। वहीं कार में बैठे पांच युवक भी मौके से गिरफ्तार किए गए। पुलिस की पूछताछ में सामने आया कि गिरफ्तार युवक उत्तम यादव गिरोह के सदस्य हैं और उसके इशारे पर घटनाओं को अंजाम देते हैं। इनमें से शक्ति गिरी उर्फ साइको टाइगर, यह वही युवक है जिसने श्री ज्वेलर्स पर फायरिंग की थी। इसके अलावा गिरोह के दो अन्य सदस्य नीतीश कुमार और बादल कुमार सिंह को रांची के करमटोली से गिरफ्तार किया गया। इनके पास से 7.65 बोर की जिंदा गोली, दो मोबाइल और एक लाल रंग का गमछा बरामद किया गया। जब्त हथियार और सामान में एक 9एमएम पिस्टल,एक 7.65 पिस्टल, 9एमएम की 4 जिंदा गोलियां, केएफ 8एमएम की 3 गोलियां, ग्रैंड विटारा कार, बजाज पल्सर मोटरसाइकिल है। गिरफ्तार अभियुक्तों में शक्ति गिरी उर्फ साइको टाइगर (24 वर्ष), पत्थलगड़ा, चतरा,मनीष यादव (20 वर्ष), बेलवाड़ी, चतरा,मुकेश कुमार सोनी (22 वर्ष), बाजार टंड, चतरा ,राहुल कुमार वर्मा (21 वर्ष), इचाक गिद्धौर, चतरा,शुभम अग्रवाल (19 वर्ष), केसरी चौक, चतरा,गोलू कुमार (21 वर्ष), इचाक गिद्धौर, चतरा,रवि रोशन (23 वर्ष), सतरा, चतरा,नीतीश कुमार (बरकट्ठा, हजारीबाग), बादल कुमार सिंह (सोहर, चौपारण, हजारीबाग)के निवासी थे, सभी की उम्र 25 साल से कम है। गिरफ्तार 9 अभियुक्तों को हजारीबाग समाहरणालय से जिला परिषद चौक तक परेड कराते हुए ले जाया गया। इस दौरान शहरवासियों ने पुलिस की इस कार्रवाई की सराहना की। सभी अभियुक्त अपने चेहरे को छिपाते नजर आए। पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन ने कहा, हजारीबाग में अपराध बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

मुहर्रम को लेकर जिला स्तरीय शांति समिति की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चतरा : शांति, सौहार्द और समन्वय की दिशा में एक अहम पहल मुहर्रम पर्व-2025 को शांतिपूर्ण एवं गरिमापूर्ण वातावरण में संपन्न कराने हेतु समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता उपायुक्त कीर्तिश्री ने की, जबकि पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार अग्रवाल सहित जिला प्रशासन, पुलिस, ताजिया कमेटी, जनप्रतिनिधियों और समाजसेवियों की सक्रिय भागीदारी रही। उपायुक्त ने कहाः मुहर्रम आपसी भाईचारे, संयम और सद्भाव का प्रतीक है। सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए त्योहार को शांति और व्यवस्था के साथ संपन्न कराना है। पुलिस अधीक्षक ने कहाः संवेदनशील क्षेत्रों में दंडाधिकारी और पुलिस बल की तैनाती, सीसीटीवी व ड्रोन से निगरानी, सोशल मीडिया पर विशेष नजर,

अफवाह फैलाने वालों पर कड़ी कार्रवाई, जिला कंट्रोल रूम 24७७ सक्रिय रहेगा। किसी भी आपात स्थिति में तुरंत संपर्क करेंः 9334103793 बैठक में जुलूस मार्ग, साफ-सफाई, पेयजल, चिकित्सीय व्यवस्था, विद्युत आपूर्ति व ट्रैफिक कंट्रोल जैसे मुद्दों पर विस्तार से चर्चा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। समाज के प्रबुद्धजनों एवं ताजिया कमेटियों ने भी प्रशासन को पूर्ण सहयोग का भरोसा दिया। अंत में उपायुक्त महोदया ने सभी से शांति, अनुशासन और सौहार्द बनाए रखने की अपील की।

पद्म श्री से सम्मानित डॉ. अशोक भगत से विधायक ने की मुलाकात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : विधायक मनोज कुमार यादव राजधानी रांची में प्रसिद्ध समाजसेवी एवं पद्म श्री से सम्मानित डॉ अशोक भगत से आत्मीय मुलाकात की। इस मौके पर वाराणसी के पूर्व एमएलसी और वरिष्ठ भाजपा नेता शिवनाथ यादव, शशिभूषण यादव समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। गौरतलब है कि डॉ अशोक भगत झारखंड के ग्रामीण विकास के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। उन्होंने अपना जीवन राज्य के दूर-दराज के गांवों में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और आजीविका के क्षेत्र में सुधार के लिए समर्पित कर दिया है। उनके उल्लेखनीय कार्यों को देखते हुए भारत सरकार ने उन्हें वर्ष 2015 में पद्म श्री पुरस्कार से सम्मानित किया था। डॉ भगत वर्तमान में विकास भारती नामक

स्वयंसेवी संगठन के सचिव हैं। यह संगठन झारखंड के ग्रामीण इलाकों में गरीब और वंचित समुदायों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आजीविका के अवसर बढ़ाने जैसे कई महत्वपूर्ण कल्याणकारी कार्यक्रम संचालित करता है। विकास भारती राज्य सरकार समेत कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ मिलकर ग्रामीण जीवन स्तर को बेहतर बनाने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। विधायक मनोज कुमार यादव ने इस मुलाकात को अत्यंत सार्थक बताते हुए कहा कि डॉ अशोक भगत जैसे अनुभवी समाजसेवी के मार्गदर्शन से न सिर्फ बरही बल्कि झारखंड के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में भी विकास योजनाओं को नई दिशा और गति मिलेगी। उन्होंने कहा कि सामाजिक संगठनों और जनप्रतिनिधियों के बीच आपसी समन्वय से सरकार की योजनाओं को आम जनता तक प्रभावी ढंग से पहुंचाया जा सकता है।

एनटीपीसी ने शहीद स्मारक के नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण के लिए 15 लाख राशि प्रदान की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : सामुदायिक विकास एवं विरासत संरक्षण के प्रति अपनी निरंतर प्रतिबद्धता के तहत, एनटीपीसी माइनिंग लिमिटेड की पकरी बरवाडीह कोयला खनन परियोजना ने हजारीबाग स्थित शहीद स्मारक के नवीनीकरण एवं सौंदर्यीकरण के लिए अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल के अंतर्गत 15,11,137 की वित्तीय सहायता प्रदान की है। इस गौरवपूर्ण पहल के तहत पीबी-सीएमपी के परियोजना प्रमुख सुब्रत कुमार दास ने उपायुक्त हजारीबाग शशि प्रकाश सिंह को 7,55,168 की अंतिम किश्त का चेक सौंपा।यह योगदान पीबी - सीएमपी और जिला प्रशासन

हजारीबाग के संयुक्त प्रयासों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह पहल शहीदों के अदम्य बलिदान को श्रद्धांजलि देने की दिशा में एक सार्थक कदम है तथा एनटीपीसी की राष्ट्र की धरोहरों के संरक्षण एवं क्षेत्र के सामाजिक-सांस्कृतिक विकास में निरंतर भागीदारी को दशार्ता है। नवीनीकृत शहीद स्मारक आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनेगा एवं स्वतंत्रता सेनानियों को एक गरिमामयी श्रद्धांजलि अर्पित करेगा।

मुहर्रम त्योहार को लेकर प्रखंड प्रशासन ने किया क्षेत्र भ्रमण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

केरेडारी : केरेडारी प्रखंड प्रशासन ने मुहर्रम त्योहार को लेकर केरेडारी प्रखंड क्षेत्र का भ्रमण कर वास्तु स्थिति का जायजा लिया। साथ हीं मुहर्रम त्योहार शांति सौहार्द पूर्ण वातावरण में मनाने की अपील किए। और कहा कि किसी तरह के भ्रामक सूचना पर ध्यान न दें बल्कि उक्त आशय की जानकारी केरेडारी प्रखंड प्रशाशन को दे। त्योहार के मद्देनजर प्रशासनिक चौकसी रहेगी। प्रखंड प्रशाशन के द्वारा केरेडारी प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत, ग्राम पंचायत पहरा, जमीरा, केरेडारी पेटो, समेत अन्य क्षेत्रों में भ्रमण किए क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम में सीओ रामरतन कुमार वर्णवाल, बीडीओ विवेक कुमार, थाना प्रभारी विवेक कुमार, अंचला अधिकारी राम रतन कुमार वर्णवाल के द्वारा ने मुहर्रम त्यौहार

मानने वाले मुख्य मुख्य व्यक्तियों को हिदायत दिए की भाई चारे मोहर्रम त्योहार मनाए किसी प्रकार से आपस में दिवेश भावना नहीं करें थाना प्रभारी विवेक कुमार के द्वारा आदेश दिए कि केरेडारी प्रखंड में जिस तरह की मुहर्रम त्यौहार मनाया जाता है शांतिपूर्ण मनाए प्रखंड विकास पदाधिकारी विवेक कुमार के द्वारा बताए कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी मोहर्रम के त्यौहार मनाया जा है इसी प्रकार से बनाइएगा आपस में गाली गलौज एवं लड़ाई झगड़ा नहीं करना है।

कट अप डेट को लेकर ग्रामीणों की मांग जायज नहीं तो होगा उग्र आंदोलन : रोशनलाल चौधरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बड़कागांव : बड़कागांव 13 माइल के पास पिछले 24 दिनों से कट अप डेट को लेकर चल रहे अनिश्चितकालीन धरना को समर्थन देने बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी धरना स्थल पर पहुंचे। धरना कार्यक्रम का अध्यक्षता सुनील कुमार व संचालन रामदुलार साव ने किया। अनिश्चितकालीन धरना में आए सैकड़ो की संख्या में महिला पुरुष एवं युवाओं सर्वप्रथम बारी-बारी से अपनी समस्याओं को विधायक रोशन लाल चौधरी के समक्ष रखा। मौके पर धरना स्थल में उपस्थित सभी आंदोलनकारी को संबोधित करते हुए विधायक रोशन लाल चौधरी ने कहा कि आपके

आंदोलन में आपके साथ खड़ा हूँ। आपके सभी मांगे जायज है एनटीपीसी को वर्तमान कट अप डेट लागू करना ही होगा। क्योंकि यह हम सभी विस्थापितों का अधिकार है। हमने विधानसभा में सभी विधायकों से ज्यादा विस्थापितों की समस्याओं को प्रमुखता के साथ रखने का काम किया है। ताकि बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में जो विस्थापितों को जो प्रताड़ना किया जा रहा है वह बंद हो सके। साथ ही कहा कि मैं धरना स्थल से आने से पहले हजारीबाग उपायुक्त से फोन पर बात किया और उन्हें कहा कि कट अफ डेट को लेकर आंदोलन पर बैठे आंदोलनकारीओं का सभी मांग जायज है इस पर वार्ता होनी चाहिए। इसके बाद उन्होंने बड़कागांव अंचलाधिकारी मनोज कुमार को यहां भेजा है और उनके माध्यम से समस्याओं और मांग पत्र को भिजवाने की बात कही है। तत्पश्चात सभी आंदोलनकारी ने विधायक के नेतृत्व से अपने मांग पत्र को बड़कागांव अंचल अधिकारी मनोज कुमार को सौंपा। मौके पर मुख्य रूप से लखींद्र ठाकुर, आजसू पार्टी के केंद्रीय सदस्य संदीप कुमार कुशवाहा, प्रखंड सचिव मनोज दांगी,प्रखंड प्रवक्ता तपेश्वर कुमार तापस, जिला उपसचिव दिनेश महतो, प्रखंड सहसचिव घनश्याम दांगी,अमित गुप्ता, सुरेश कुमार दांगी, दिनेश कुमार दांगी, तुलेश्वर महतो, बलदेव महतो, उमेश यादव, अनिल कुमार, उदय कुमार दास ,विकास कुमार, विनय कुमार सहित सैकड़ो महिला पुरुष युवा मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

मौर्य पब्लिक स्कूल में बिरसा हरित अभियान के तहत छात्राओं को किया गया जागरूक

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड अंतर्गत कांडतरी स्थित अंग्रेजी माध्यम से संचालित मौर्य पब्लिक स्कूल में बिरसा हरित चेतना के तहत स्कूल के निर्देशक रामचंद्र कुमार के अध्यक्षता में कार्यक्रम की शुरूआत किया गया। वहीं बिरसा हरित चेतना के लोक शिक्षक पश्चिमी वन प्रमंडल हजारीबाग बड़कागांव के बालेश्वर महतो एवं फूलों देवी के द्वारा छात्राओं को पर्यावरण से संबंधित जानकारी दिया गया। जिसमें अधिक से अधिक मात्रा में पेड़ पौधा को लगाने और पर्यावरण को स्वच्छ रखने पर जोर दिया गया। वहीं फूलों देवी ने पर्यावरण से संबंधित गीत गाकर सुनाई। वही लोक शिक्षक बालेश्वर महतो एवं फूलों देवी ने संयुक्त रूप से कहा कि पर्यावरण बचाने से संबंधित जहां पर भी लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता पड़े तो हम लोगों से संपर्क करें हम लोग आएंगे और लोगों को जागरूक करने का प्रयास करेंगे। मौके पर पश्चिमी वन प्रमंडल हजारीबाग के लोक शिक्षक बालेश्वर महतो सहयोगी फूलों देवी स्कूल के निर्देशक रामचंद्र कुमार प्रधानाध्यापक संतोष कुमार सिंह वरिष्ठ शिक्षक मनजीत गंझु ,झूना कुमारी विवेक मुंडा सहिष्ता परवीन संगीता कुमारी कुंती देवी संजू देवी सुगंती देवी व छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

सीकरी आंगनबाड़ी भवन निर्माण कार्य पिछले चार वर्षों से अधूरा

बड़कागांव : सीकरी पंचायत के जमनीडीह गांव में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 220 के लिए भवन निर्माण कार्य पिछले 4 वर्षों से अधूरा पड़ा है। यह आंगनबाड़ी केंद्र पंचायत भवन से सटा हुआ है। भवन निर्माण कार्य मैं शौचालय बाथरूम और किचन रूम पूर्ण रूप से अधूरा पड़ा है। जिसके कारण सेविका अनीता देवी भाड़े के मकान में आंगनबाड़ी केंद्र को संचालन करने के लिए मजबूर हैं। एक ही मकान में बच्चों के लिए खाना बनाना पढ़ाने का कार्य हो रहा है। मामले को लेकर बड़का गांव प्रखंड विकास पदाधिकारी जितेंद्र कुमार मंडल ने कहा कि मेरे संज्ञान में है पंचायत सेवक के निधन के कारण थोड़ा डीले हुआ है मोहर्रम के बाद नव निमार्णाधीन आंगनबाड़ी केंद्र को पूर्ण रूप से कंप्लीट कराया जाएगा।

ठाकुर मुहल्ला मुहर्रम मनाने के लिए अंजुमन को करेगा शांति सहयोग

बड़कागांव : बड़कागांव मध्य पंचायत अंतर्गत मुस्लिम मुहल्ला मस्जिद के समीप इमामबाडा के पास ठाकुर मुहल्ला समाज एवं मुस्लिम मुहल्ला अंजुमन कमेटी के सदस्यों ने मोहर्रम को शांतिपूर्ण तरीके से मनाने को लेकर पंसस रितेश ठाकुर, मुखिया तकरीमुला खान की उपस्थिति में शांति समिति की बैठक हुई। । दोनों समाज के लोग एक - दूसरे को गले मिल एक- दूसरे के त्यौहार को मनाने एवं पूर्ण सहयोग करने का भरोसा दिया। मुस्लिम मोहल्ला अंजुमन कमेटी की ओर से ठाकुर मोहल्ला समाज के सदस्यों को शांति का प्रतीक सफेद अंग वस्त्र देकर स्वागत किया गया। साथ ही, मोहर्रम त्यौहार को मनाने के लिए ठाकुर मोहल्ला समाज के सदस्यों को आमंत्रित भी किया गया। मौके पर शांति समिति की बैठक में मुख्य रूप से मुखिया मो तकरीमुल्लाह, पंसस रितेश ठाकुर, ठाकुर मोहल्ला समाज के अध्यक्ष सुभाष ठाकुर, सदर अख्तर हुसैन,पप्पू खान, रामचरित्र ठाकुर, मेवा लाल नाग, सरोज सोनी, नंदकिशोर राणा, सेक्रेट्री शहजाद आलम, महिपाल सोनी, मजहर मालिक, नवीन ठाकुर, मोहम्मद गुड्डू, रौशन ठाकुर, महंगू ठाकुर, पप्पू राणा,रोहित खान, गोविंद ठाकुर, मुकेश ठाकुर, विक्रम ठाकुर, हकीम अंसारी, साहिल मलिक, राजा खान, मो रसीद, सूरज ठाकुर, टिंकू ठाकुर, वीनू ठाकुर, शशि ठाकुर के अलावा दोनों समुदाय के कई सदस्य उपस्थित थे।

27 हाथियों का झुंड हहारो नदी पार कर पहुंचा महुदी पहाड़, कोई नुकसान नहीं

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड में हाथियों का उत्पात निरंतर बढ़ता जा रहा है। पिछले एक सप्ताह से 27 हाथियों का झुंड बड़कागांव क्षेत्र में कहीं न कहीं कभी ना कभी पहुंच जा रहे हैं और डेरा जमाए हुए हैं। कभी जोराकाट्र, कभी गंगादोहर तो कभी सोनपुर और महुदी क्षेत्र में भ्रमण है। जिससे लोगों के साथ-साथ विशेष कर बच्चे काफी दशहत में है। बुधवार की रात्रि हाथियों का झुंड गंगादोर के सिमरबागी में डेरा जमा हुए थे। और फिर गुरुवार की सुबह 27 की संख्या हाथियों की झुंड ने हहारो नदी पार कर सोनपुरा गांव के नदी तट से होते हुए महुदी गांव पहुंचा। जहां कुछ समय के लिए हाथी रुक गए हाथियों का झुंड देख ग्रामीण काफी दहशत में थे।क्योंकि एक ओर बड़ी हहारो नदी और दूसरी ओर गांव ही गांव और गांव के लोग थे।हाथियों का झुंड बीच में रूककर चहल कदमी करने लगे। पर वन विभाग के लोग एवं ग्रामीणों की सूझबूझ से हाथी को भगाया गया। और सभी हाथी महुदी आंगनबाड़ी केंद्र के सामने से होते हुए सुमहागढ़ा महुदी पहाड़ की ओर चले गए। इस दरमियान सुबह-सुबह हाथी एवं हाथी के महज कुछ दिन पहले जन्म लिए दो छोटे बच्चों को देखने के लिए लोगों की काफी भीड़ उमड़ पड़ी थी।लोगों ने अपने आंखों से यह भी देखा कि जब हाथी के बच्चे पीछे छूट जाते थे तो बड़े हाथी अपने सूंड से उठाकर उसे आगे करते थे,और हाथियों के साथ हाथी के बच्चे भी झुंड में चलते थे। महुदी सोनपुरा के लोगों के लिए यह पल कुछ क्षण के लिए यदि दहशतभरा पल था। तो दूसरी ओर खुशी भरा पल भी था। इस दरमियान सबसे अजीब बात या रही की इन दोनों घनी आबादी वाले गांव में हाथियों के द्वारा किसी प्रकार का कोई बहुत बड़ी नुकसान या छती नहीं पहुंचाया गया।

एक नजर

पिछले तीन वर्षों में झारखंड में इस बार अधिक हो रही बारिश

रांची: पिछले तीन वर्षों में इस बार झारखंड में अधिक बारिश हो रही है। इस वर्ष जुलाई के पहले हफ्ते में ही सामान्य से 85 प्रतिशत अधिक बारिश दर्ज की गई है। वहीं, पिछले साल सामान्य से महज एक प्रतिशत कम बारिश हुई थी। एक जून से 30 सितंबर तक, राज्य में 1011.6 मिमी बारिश दर्ज की गई थी। वहीं, वर्ष 2023 में 26 प्रतिशत और वर्ष 2022 में 20 प्रतिशत कम बारिश हुई थी। वर्ष 2024 में राज्य के धनबाद जिले में अगस्त के महीने में सबसे ज्यादा 621.2 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई थी। जबकि सामान्य बारिश 308.3 मिमी है। मौसम विभाग ने छह जुलाई तक राज्य के विभिन्न जिलों में बारिश होने की संभावना व्यक्त की है। कहीं-कहीं भारी बारिश होने को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है। पिछले 24 घण्टों में राज्य में सबसे अधिक बारिश 59.8 मिमी सिमडेगा जिले के कुरडेग में दर्ज की गई। वहीं इस दौरान रांची में 12.5 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई। गुरुवार को रांची में अधिकतम तापमान 36.7 डिग्री, जमशेदपुर में 30.5, डालटेनगंज में 30, बोकारो में 32.1 और चाईबासा तापमान 32.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया।

माइकल राज एस बने झारखंड पुलिस के प्रवक्ता

रांची: आईजी अभियान माइकल राज एस को झारखंड पुलिस का प्रवक्ता नियुक्त किया गया है। डीजीपी अनुराग गुप्ता ने गुरुवार को इससे संबंधित अधिसूचना जारी कर दी। इससे पहले माइकल राज एस बोकारो जोनल आईजी के पद कर पदस्थापित थे। बीते दिन हुए आईपीएस के ट्रांसफर-पोस्टिंग के दौरान सरकार ने इन्हें आईजी अभियान के पद पर पदस्थापित किया है।

रातू रोड फ्लाईओवर का उद्घाटन तो हुआ, लेकिन काम अभी अधूरा है

रांची : रांचीवासियों के लिए आज का दिन ऐतिहासिक रहा। रातू रोड पर बन रहा बहुप्रतीक्षित ओवरब्रिज आखिरकार आज जनता को समर्पित कर दिया गया। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इसका उद्घाटन किया। इस फ्लाईओवर के चालू होते ही लोगों को ट्रैफिक जाम से बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। हालांकि फ्लाईओवर का ऊपरी हिस्सा पूरी तरह तैयार कर चालू कर दिया गया है, लेकिन इसके नीचे का काम अभी अधूरा है। कई पिलरों पर पेंटिंग का काम अभी बाकी है। फ्लाईओवर के नीचे ग्रिनरी डेवलपमेंट का काम अभी जारी है। पौधे लगाये जा रहे हैं, लेकिन उन्हें बचाने के लिए जो रेलिंग लगनी थी, वो भी अधूरी है। OTC ग्राउंड के पास, जहां फ्लाईओवर का रैम्प उतरता है, वहां सड़क किनारे मिट्टी और कचरे का ढेर जमा है। हालांकि आज के लिए इसे हरे कपड़े से ढंक तो दिया गया, लेकिन यह स्थायी समाधान नहीं है। इस जगह की सफाई और सौंदर्यीकरण बेहद जरूरी है।

दक्षिण पूर्व रेलवे - निविदा

ई-निविदा सूचना सं.: एसईआर-ओएचई-केजीपी-टाटा-2X25 केवी-आरटी, दिनांक 02.07.2025, भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए, मुख्य विद्युत अभियंता (परियोजना), दक्षिण पूर्व रेलवे द्वारा निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा आमंत्रित की जाती है: **कार्य का विवरण:** 3000 एमटी लोडिंग लक्ष्य को पूरा करने के लिए दक्षिण पूर्व रेलवे के खड़गपुर/चक्रधरपुर मंडल के खड़गपुर (छोड़कर)-टाटानगर (लेकर) खंड के लिए 1X25 केवी से 2X25 केवी ट्रैक्शन सिस्टम में इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम के अपग्रेडेशन के लिए डिजाइन, आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और आरंभ करना। **कार्य की अनुमानित लागत:** रु. 179,13,05,089.28, **बोली प्रतिभूति:** रु. 91,06,500/-, **निविदा कागजात की लागत:** शून्य। **कार्य की समापन अवधि:** 24 माह। **प्रस्ताव की वैधता:** निविदा खुलने की तिथि से 120 दिन। **पूछताछ प्राप्त होने की अंतिम तिथि:** दिनांक 25.07.2025, **बोली-पूर्व बैठक:** दिनांक 25.07.2025 को 11.30 बजे। **सभी कागजातों का भौतिक जमा:** दिनांक 19.08.2025, **निविदा की अंतिम तिथि :** 20.08.2025 (14.00 बजे आईएसटी)। **वेबसाइट का विवरण जहाँ निविदा का संपूर्ण विवरण देखा जा सकता है: www.ireps.gov.in** (PR-351)

15वीं नेशनल सब-जूनियर महिला हॉकी चैंपियनशिप का खेल मंत्री ने किया शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : 15वीं नेशनल सब-जूनियर महिला हॉकी चैंपियनशिप 2025 का शुभारंभ आज रांची में एक भव्य समारोह के साथ हुआ। यह प्रतियोगिता 3 जुलाई से 14 जुलाई तक मारंग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में आयोजित की जा रही है, जिसमें देशभर के 28 राज्यों से आई 540 महिला खिलाड़ी भाग ले रही हैं। आयोजन स्थल पर खेल भावना और उत्साह का अनूठा नजारा देखने को मिल रहा है। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि झारखंड के खेल मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाते

हुए कहा कि हॉकी झारखंड की पहचान है। यह टूर्नामेंट युवा खिलाड़ियों के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने और अनुभव प्राप्त करने का एक शानदार मंच है। राज्य सरकार खेल के बुनियादी ढांचे को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।

मंत्री ने यह भी जानकारी दी कि जल्द ही झारखंड की अपनी स्वतंत्र हॉकी टीम होगी, जो अन्य राज्यों के लिए नहीं खेलेगी। इसके लिए योजनाएं तैयार की जा रही हैं, जिन्हें शीघ्र ही धरातल पर उतारा जाएगा। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीमों में झारखंड, तेलंगाना, बिहार, जम्मू-कश्मीर, पुदुचेरी, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, हरियाणा, ओडिशा, असम, मणिपुर सहित कुल 28 राज्यों की टीमें शामिल हैं। सब-जूनियर आयु वर्ग की इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता को प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के लिए करियर की शुरूआत का एक महत्वपूर्ण अवसर माना जा रहा है।

केंद्र सरकार झारखंडवासियों पर टोल टैक्स थोपकर छलावा कर रही है : झामुमो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी की गढ़वा और रांची में सड़क परियोजनाओं के शिलान्यास और लोकार्पण को लेकर तीखा हमला बोला है। उन्होंने गुरुवार को हरमू स्थित पार्टी कार्यालय में प्रेस वार्ता में कहा कि हेमंत सरकार ने कम खर्च में गुणवत्तापूर्ण सड़कें बनाईं, वह भी बिना किसी टोल के जबकि केंद्र सरकार महंगे ठेके देकर गरीबों से टैक्स वसूलती है। भट्टाचार्य ने कहा कि केंद्र सरकार झारखंडवासियों पर टोल टैक्स थोपकर और ज्यादा लागत दिखाकर छलावा कर रही है। भट्टाचार्य ने कहा कि हेमंत सरकार ने कांटाटोली और सिरमटोली फ्लाईओवर सिर्फ 580 करोड़ रुपये में बनवाए, जबकि केंद्र ने सिर्फ रातू रोड एलिवेटेड कॉरिडोर पर ही 558 करोड़ खर्च कर दिए । सुप्रियो ने कहा कि गढ़वा बाइपास का उद्घाटन नहीं हुआ, क्योंकि वहां पहले से ही टोल वसूला जा रहा था। उन्होंने रातू रोड प्रोजेक्ट की लागत में 158 करोड़ की वृद्धि पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह घोटाले की तरह है। उन्होंने बताया कि सिरमटोली फ्लाईओवर हाईटेक केबल ब्रिज तकनीक से बना है, फिर भी उसकी लागत सिर्फ 355 करोड़ रही। यह झारखंड सरकार की उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि ना सिर्फ रातू रोड बल्कि झारखंड के कई हिस्सों में टोल टैक्स का वसूली जारी है। जो झारखंडवासियों के साथ केंद्र का सौतेला ब्यवहार को दर्शता है।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की जनसुनवाई में सुनील जायसवाल ने विभिन्न मांगों को उठाई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : गुरुवार को राजकीय अतिथिशाला मोरहाबादी रांची में राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग का दल दिल्ली से रांची झारखंड दौरे पर पहुंचे थे। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के माननीय अध्यक्ष हंसराज गंगाराम अहीर एवं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के माननीय सदस्य भुवन भूषण कमल झारखंड सरकार के मुख्य सचिव अलका तिवारी एवं झारखंड राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग एवं झारखंड सरकार के उपस्थित अनेकों पदाधिकारियों के समक्ष राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष हंसराज गंगाराम अहीर ने अपने कोर्ट में कर्म संख्या 19 को पुकारते हुए झारखंड प्रदेश के विभिन्न शौंडिक सुंडी संगठन के अगुवाओं से संयुक्त रूप से सुंडी जाति को राष्ट्रीय स्तर पर ओ बी सी की सुचि में शामिल करने की बातें रखने को कहा जिसपर

तर्क संगत मांग रखते हुए आयोग के समक्ष बात रखने वालों में रमेश साहु, बीरेंद्र साहु, सनत मंडल, अशोक कुमार प्रसाद, ने बारी बारी से झारखंड प्रदेश में सुंडी शौंडिक जाति को बि सी अनुसूची 1 में रखा गया है, उसी प्रकार केंद्रीय सूची भारत सरकार के पास आयोग के माध्यम से वस्तु स्थिति से अवगत कराया गया उन्हें कागजात के साथ बहस करते हुए आयोग के आसन को सिलसिलेवार बातें रखते हुए अवगत कराया। सभी की बातों को उपस्थित आयोग ने सुनते हुए सुंडी शौंडीक जाति से संबंधित कागजात को उन्होंने स्वय बुलाकर ग्रहण किया। सभी की बातों को ध्यान से सुनने के बाद सुंडी शौंडिक जाति को राष्ट्रीय सुची में शामिल करने हेतु आश्वस्त करते हुए साकारात्मक बातें राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के माननीय अध्यक्ष हंसराज गंगाराम अहीर जी ने कही, बहस से पूर्व आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं माननीय सदस्य को सुंडी समाज द्वारा जनजातीय चादर एवं अंग वस्त्र धारण कराकर उन्हें सुंडी शौंडिक जाति के संयुक्त दलों द्वारा स्वागत किया गया।

सरला बिरला पब्लिक स्कूल में प्रतिध्वनि का उत्साहपूर्ण हुआ शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : सरला बिरला पब्लिक स्कूल रांची में गुरुवार को राष्ट्रीय अंतर-विद्यालय कला संगोष्ठी, प्रतिध्वनि-2025 के तीसरे संस्करण का शानदार उद्घाटन हुआ। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम ज्ञान संसाधन क्यूरेटर मुखर्जी पी. की देखरेख में आदिवासी जननायक एवं क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती वर्ष को समर्पित था। उद्घाटन समारोह में देशभर के 30 से अधिक विद्यालयों के प्रतिभागी छात्रों की सहभागिता रही। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. गोपाल पाठक, महानिदेशक, सरला बिरला विश्वविद्यालय, रांची रहे, जिन्होंने समारोह की गरिमा को बढ़ाया। इस अवसर पर शिक्षा जगत की प्रतिष्ठित हस्तियाँ भी उपस्थित रहीं, जिनमें राजेश पिल्लई, प्रेमलता, डॉ. सुभाष कुमार तथा शालिनी विजय, प्राचार्या, गुरु गोबिंद सिंह पब्लिक स्कूल, रांची सम्मिलित थीं। इस अवसर पर अभिनव चटर्जी, देवांशु सेनगुप्ता, विश्वजीत दास और पार्थ बनर्जी निर्णायक के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत एक सुमधुर स्वागत गीत से हुई, जिसने वातावरण को उल्लासपूर्ण बना दिया। आज के कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था उलगुलान आंदोलन पर आधारित एक विशेष नृत्य-नाटिका। इस प्रस्तुति ने ह्यधरती आबाह्य बिरसा मुंडा के योगदान की स्मृति को पुनर्जीवित किया और यह दशार्या कि समाज की प्रगति में विद्यार्थियों के बीच सहयोग और समन्वय कितना महत्वपूर्ण है। पहले दिन टॉर्क-इन्टीग्रेटेड डान्स डायलॉग, प्ल्यूरिलॉग्स- मल्टी फॉर्मेट इंग्लिस डिबेट और फ्रेम्स - रील्स मेकिंग जैसी कई प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं, जिनमें विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता और फिल्म निर्माण कौशल का प्रदर्शन किया। आज के कार्यक्रम का समापन विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। मुख्य अतिथि प्रो. गोपाल पाठक ने कहा कि जब छात्रों को ऐसे मंच मिलते हैं तो उनकी रचनात्मकता को संबल मिलता है और यह उनके आत्मविश्वास और दक्षता में वृद्धि करता है।

नगर निगम की टीम ने कांके रोड स्थित दुकानों की जांच की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : गुरुवार को रांची नगर निगम राजस्व शाखा की टीम ने वार्ड नंबर 01 के कांके रोड स्थित पैंटालूंस बिल्डिंग और रिलायंस ट्रेंड्स बिल्डिंग का निरीक्षण किया। जांच के क्रम में इन बिल्डिंगों के होल्डिंग टैक्स, ट्रेड लाइसेंस और भवनों के क्षेत्रफल की मापी की गयी। जांच अभियान में सहायक प्रशासक, नगर प्रबंधक, निगम के कर संग्रहकर्ता और मेसर्स श्री

पब्लिकेशन एंड स्टेशनर्स के कर संग्रहकर्ता शामिल हुए। नगर निगम की ओर से यह अभियान लगातार चलाया जा रहा है ताकि सभी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों से सही टैक्स वसूला जा सके।

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विवि के कुलपति ने विभागाध्यक्षों के साथ चर्चा की

रांची : डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची के कुलपति प्रो अंजनी कुमार मिश्रा ने आज दोपहर 3 बजे कुलपति कक्ष में बैठक की। बैठक में उन्होंने विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के अध्यक्षों के साथ संवाद किया। बैठक में 10 विभागों के प्रमुख शामिल हुए। कुलपति ने प्रत्येक विभाग की वस्तुस्थिति की समीक्षा की। उन्होंने विभागाध्यक्षों से विद्यार्थियों की संख्या, कक्षा में उपस्थिति का प्रतिशत, आधारभूत संरचना की स्थिति, पुस्तकालय सुविधाएं सहित शैक्षणिक शोध गतिविधियों से संबंधित विस्तृत जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिया कि प्रत्येक विभागाध्यक्ष यह सुनिश्चित करे कि विद्यार्थियों की उपस्थिति न्यूनतम 75 प्रतिशत हो।

सावित्रीबाई फुले राष्ट्रीय महिला एवं बाल विकास संस्थान के नए क्षेत्रीय केंद्र का आज होगा शुभारंभ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी शुक्रवार को रांची में सावित्रीबाई फुले राष्ट्रीय महिला एवं बाल विकास संस्थान के नए क्षेत्रीय केंद्र का उद्घाटन करेंगी। भारत के पूर्वी क्षेत्र में क्षमता निर्माण प्रयासों को विकेंद्रीकृत करने और सेवा वितरण में सुधार लाने की दिशा में नया क्षेत्रीय केंद्र बड़ा कदम साबित होगा। नया क्षेत्रीय केंद्र विशेष रूप से मंत्रालय की झारखंड, बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के लिए की गई प्रमुख पहलों के लिए प्रशिक्षण और अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करेगा। उद्घाटन समारोह में महिला एवं बाल

विकास राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर, रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ, खिजरी के विधायक राजेश कच्छप और हटिया निर्वाचन क्षेत्र के विधायक नवीन जायसवाल और मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षु लड़कियों के साथ बातचीत, अनुभव साझा करना और व्यावसायिक प्रशिक्षण पूरा करने वालों के लिए नौकरी के प्रमाणपत्रों का वितरण भी शामिल होगा। इस कार्यक्रम में संस्थान के नए लोगो का शुभारंभ भी किया जाएगा। यह नया क्षेत्रीय केंद्र भारत के पूर्वी क्षेत्र में क्षमता निर्माण प्रयासों को विकेंद्रीकृत करने और सेवा वितरण में सुधार करने की दिशा में एक बड़ा कदम होगा। यह नया क्षेत्रीय केंद्र विशेष रूप से मंत्रालय की प्रमुख पहलों- मिशन शक्ति, मिशन वात्सल्य और मिशन सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 के लिए प्रशिक्षण और अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करेगा। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने गुरुवार को बताया कि यह नया केंद्र केंद्रीय योजनाओं के जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नया क्षेत्रीय केंद्र बाल मार्गदर्शन और परामर्श में उन्नत डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी प्रदान करेगा। अग्रिम पंक्ति के कार्यकताओं को उन्नत प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इससे क्षेत्र में रोजगार के नए अवसरों का मार्ग प्रशस्त होगा। इससे पहले, इन राज्यों के पास इस तरह की समर्पित प्रशिक्षण सुविधाएं सीमित मात्रा में थी। आमतौर पर गुवाहाटी और लखनऊ के क्षेत्रीय केंद्रों पर निर्भर राज्यों को रसद सम्बंधी कठिनाइयां आती थीं। रांची केंद्र प्रमुख संसाधनों और बुनियादी ढांचे को क्षेत्र-स्तरीय श्रमिकों के करीब लाकर इन बाधाओं को दूर करेगा और इससे सभी तक सेवाओं को प्रभावी ढंग से वितरित करने की उनकी क्षमता बढ़ेगी।

संक्षिप्त खबरें

शोहदा-ए-करबला की याद में रांची में रक्तदान शिविर संपन्न

रांची: रज्जा यूनिट फाउंडेशन की ओर से लहू बोलेगा संस्था के सहयोग से शोहदा-ए-करबला की याद में गुरूवार को डोरंडा में एक दिवसीय रक्तदान शिविर संपन्न हुआ। रक्तदान शिविर में 20 यूनिट रक्त संग्रह किया गया। एकत्रित रक्त को सदर अस्पताल ब्लड बैंक रांची को सौंपा गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के केंद्रीय वरीय उपाध्यक्ष देवेंद्रनाथ महतो ने रक्तदाताओं को प्रमाण-पत्र देकर प्रोत्साहित किया। देवेन्द्र महतो ने कहा कि राज्य सरकार की ओर से अबतक रक्तदाताओं के प्रति उदासीन रवैया रहा है। आए दिन रक्त की कमी के कारण राज्य में सैकड़ो लोगों की आकस्मिक मृत्यु हो रही है।
ब्लड डोनेशन और स्टोरेज पर राज्य सरकार को गंभीर होनी चाहिए। ब्लड डोनेशन कैंप आर्गेनाइजेशन को आर्थिक सहयोग और ब्लड डोनर को 25 रुपये से बढ़ाकर 250 रुपये तक रिफ्रेशमेंट राशि होनी चाहिए। राज्य के सभी 24 जिलों में वोल्वो लाल एसी बस उपलब्ध कराया जाय। वर्तमान समय में झारखंड में एक मात्र वोल्वो लाल एसी बस है, वह भी खराब है। शिवरि में मुख्य रूप से फाउंडेशन कमेटी असफर खान, नदीम खान, शाहनवाज अब्बास, मोहम्मद फहीम, साकिब रज्जा, बबर खान सहित अन्य लोग मौजूद थे।

स्वास्थ्य मंत्री ने अस्पताल पहुंचकर हॉकी खिलाड़ी विमल की ली सुधी

रांची: स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने गुरुवार को क्युरिस्टा अस्पताल में भर्ती राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी विमल लकड़ा से अस्पताल पहुंचकर मुलाकात की और हालचाल जाना। अस्पताल में मेडिकल टीम को तत्काल बुलाया। इलाज संबंधित जानकारी ली। डॉक्टरों को निर्देश दिया कि किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो। विमल को सर्वोत्तम चिकित्सा सुविधा तत्काल उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि वह पूरे उपचार को निजी रूप से खुद मॉनिटर कर रहे हैं। आवश्यकता पड़ी तो देश-विदेश के सर्वश्रेष्ठ न्यूरो सर्जनों से विमल का इलाज करवाया जाएगा। मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का भी स्पष्ट निर्देश हैं कि इस होनहार खिलाड़ी के इलाज में कोई कमी न रह जाए। राज्य सरकार का पूरा स्वास्थ्य विभाग उनके साथ खड़ा है। हर आवश्यकताओं का ख्याल रखा जा रहा है। मंत्री ने कहा कि विमल लकड़ा केवल एक खिलाड़ी नहीं बल्कि झारखंड और भारत का गौरव हैं। उनके इलाज में किसी भी तरह की कमी नहीं होने दी जाएगी। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि विमल लकड़ा शीघ्र पूर्ण रूप से स्वस्थ हों जाएं। और फिर से मैदान में अपना जलवा दिखाएं।

राज्यपाल ने पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी विमल लकड़ा के स्वास्थ्य की ली जानकारी

रांची: राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने गुरुवार को दीपाटोली स्थित क्यूरेस्टा अस्पताल जाकर पूर्व अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी विमल लकड़ा से मुलाकात की और उनके स्वास्थ्य की जानकारी ली। राज्यपाल ने वहां उपस्थित चिकित्सकों से भी विमल लकड़ा के उपचार की प्रगति के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त की और उनके शीघ्र पूर्ण स्वस्थ होने की कामना की। उन्होंने कहा कि विमल लकड़ा ने हॉकी के क्षेत्र में देश एवं राज्य को गौरवान्वित किया है। संपूर्ण राज्यवासी उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंतित है और उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प्रार्थना कर रही है।

रांची की जर्जर सड़कों को लेकर हाई कोर्ट ने सरकार से मांगा जवाब

रांची : राजधानी रांची की मुख्य सड़कों को छोड़कर अन्य जर्जर सड़कों की मरम्मत को लेकर दायर जनहित याचिका पर झारखंड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश एसएम रामचंद्र राव और न्यायमूर्ति राजेश शंकर की खंडपीठ में गुरुवार को सुनवाई हुई। इस सुनवाई के दौरान प्रार्थी के अधिवक्ता शुभम कटारूका ने अदालत को बताया कि रांची की कई सड़कें मामूली बारिश में भी तालाब बन जाती हैं। सेवा सदन के सामने की सड़क और तपोवन मंदिर के पास की सड़क की हालत बरसात में अत्यंत दयनीय हो जाती है। इस कारण नागरिकों को रोजाना जान-माल की खतरे का सामना करना पड़ता है। अदालत ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा मरम्मत का दावा और जिला विधिक सेवा प्राधिकार (डालसा) की रिपोर्ट परस्पर विरोधाभासी हैं। डालसा की रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि जिन सड़कों की बात की गई है, वे अत्यंत खराब स्थिति में हैं और उनकी शीघ्र मरम्मत अत्यंत आवश्यक है। अदालत ने कहा कि सड़कें बरसात से पूर्व ही मरम्मत की जानी चाहिए ताकि नागरिकों को कठिनाई न हो। यह याचिका शुभम कटारुका द्वारा दायर की गई थी। राज्य सरकार ने बताया कि रांची नगर निगम को फंड दे दिया गया है। नगर निगम ने भी स्वीकार किया कि सड़कों की मरम्मत जल्द शुरू की जाएगी। हालांकि अदालत ने स्पष्ट रूप से कहा कि यह कार्य टालमटोल न करते हुए बरसात से पहले हो जाना चाहिए। अदालत ने मामले में सरकार से जवाब भी मांगा है। लेकिन अब बारिश का मौसम यानी मानसून सीजन चल रहा है। पूर्व की सुनवाई में सरकार ने पहले यह दावा किया था कि सभी सड़कों की मरम्मत हो चुकी है और फोटो भी प्रस्तुत किए थे। प्रार्थी की ओर से कहा गया कि सरकार ने जिन सड़कों की तस्वीर दिखाई, वह याचिका में उल्लिखित सड़कों से अलग हैं। इसके बाद अदालत ने डालसा को मौके पर जाकर रिपोर्ट देने का आदेश दिया था, जिसके आधार पर याचिकाकर्ता के दावे सही पाए गए। हाई कोर्ट ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि सड़कों की मरम्मत में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

झारखंड मुक्ति मोर्चा ने भाजपा का पुतला फूंका

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : झारखंड मुक्ति मोर्चा ने बोकारो जिला मुख्यालय के समक्ष भाजपा का पुतला दहन किया। यह विरोध प्रदर्शन झामुमो के बोकारो जिलाध्यक्ष रतनलाल मांझी के नेतृत्व में किया गया। पुतला दहन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष रतनलाल मांझी ने भाजपा पर गंभीर आरोप लगाए। रतनलाल ने कहा कि आप सभी को ज्ञात है कि विगत दिनांक 30 जून 2025 को हूल दिवस के दिन भोगनाडीह में भाजपा द्वारा संथाल परगना को अस्थिर करने के उद्देश्य से असफल कोशिश की गई। यह न सिर्फ झारखंड के शहीदों का अपमान है, बल्कि झारखंड के आदिवासियों-मूलवासियों को गुमराह करने की साजिश भी है। आगे कहा कि यह घटनाक्रम दशार्ता है कि भाजपा अपने चाल-चरित्र के अनुरूप सत्ता पर काबिज

होने के लिए किसी भी स्तर तक जा सकती है, और ऐसी स्थिति में झारखंड के आदिवासियों मूलवासियों में भाजपा के प्रति गहरा रोष व्याप्त है। इस अवसर पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के बोकारो महानगर अध्यक्ष मंटू यादव ने भी भाजपा पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा झारखंड को मणिपुर बनाना चाहती है। झारखंड मुक्ति मोर्चा किसी भी सूरत पर भाजपा का यह दोहरा चरित्र बर्दाश्त नहीं करेगी, भाजपा के हूल दिवस पर किए गए कृत्य की निंदा करते हुए कहा कि इससे पूरे झारखंड की जनता आहत है। आरोप लगाया कि भाजपा की गंदी राजनीति और साजिशें यह साफ दशार्ती हैं कि वे नहीं चाहते कि झारखंड में शहीदों को सम्मान मिले और उनके परिवारों को जो सुविधाएं मिल रही हैं ना मिले, उन्होंने कहा कि भाजपा चाहती है कि हेमंत सरकार द्वारा राज्य में चौतरफा विकास का जो कार्य किया जा रहा है, वह सफल न हो। श्री यादव ने विश्वास व्यक्त किया कि जनता सब जानती है और अगर झारखंड प्रदेश का कोई भला कर सकता है तो वह एकमात्र नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री हेमंत सोरेन और उनकी सरकार है। उन्होंने कहा कि भाजपा द्वारा जितनी भी साजिशें की जाएंगी, वे सभी नाकाम होंगी।पुतला दहन कार्यक्रम में मुख्य रूप से केंद्रीय सदस्य हीरालाल मांझी अशोक मुर्मू बीके चौधरी जिला कोषाध्यक्ष पंकज जयसवाल, जिला सचिव मुकेश महतो, प्रवक्ता आकाश टुडू, इमाम हसन, संजय केजरीवाल, विजय रजवार,बम पांडे, प्रमोद तापड़िया, रामदयाल सिंह भागीरथ शर्मा, आलोक सिंह,राकेश सिन्हा, पंकज मरांडी, लूदु मांझी, सोनाराम हेंब्रम सदानंद गोप, कालीपद महतो, अभिषेक पांडे, कन्हैया सिंह, दीपक बंसल, शांति सोरेन, कुसुम भारती,राम किशोर ठाकुर, मिथुन मंडल, दीपक महतो सुनील टुडू रंजीत महतो मस्तान अंसारी मिथुन महतो, कलीम अंसारी शांति किसकू, मगाराम दे, सुखविंदर सिंह तपेश्वर महतो, गणेश महतो, मुकेश बास्के फिरोज अंसारी, सानिया बेगम, रूबी खातून, फिरदौस नूरी,सृष्टि देवी, रिंकू राय, रेनू शर्मा,कलावती देवी, शम्भू गुप्ता, मनोज महतो, कलीम बाबू अंसारी, दिनेश बेसरा, अजय हेमब्रम, संतोष हेमब्रम, फारुख अंसारी, सोमनाथ घोष, संगीता राय, भीमसेन सोरेन, सुमन वर्मा, दिनेश यादव राजकुमार सोरेन इत्यादि।

चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज ने नगर सेवा विभाग के मुख्य महाप्रबंधक से की मुलाकात

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज का एक प्रतिनिधिमंडल कुंदन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, नगर सेवा विभाग, बोकारो इस्पात संयंत्र से उनके कार्यालय में एक महत्वपूर्ण बैठक हेतु मिला। बैठक के दौरान नगर क्षेत्र से संबंधित कई जनसमस्याओं पर चर्चा हुई। प्रतिनिधिमंडल ने सड़क, जल आपूर्ति, साफ-सफाई, ट्रैफि क प्रबंधन और मूलभूत नागरिक सुविधाओं को लेकर विभिन्न मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। अध्यक्ष मनोज चौधरी ने चैंबर की तरफ से कुंदन कुमार को सिटी सेंटर बी ब्लॉक में जलापूर्ति हेतु नई पाइपलाइन के निर्माण करने के लिए धन्यवाद दिया । महामंत्री राजकुमार जायसवाल ने कहा कि सिटी सेंटर में विद्युत आपूर्ति में काफी अनियमितता है विभिन्न ब्लाकों में स्थापित विद्युत पैनल एवं ट्रांसफार्मर जर्जर हो चुके हैं इनकी थोड़ी मरम्मत एवं पदस्थापना सुनिश्चित किया जाए सिटी सेंटर के बी ब्लॉक में सिवरेज लाइन काफी जाम हो गया है। जिसके कारण बदबू गंदगी और जल जमाव की स्थिति बनी रहती है ।इस समस्या का तत्काल समाधान किया जाए ।पार्किंग की अनुपलब्धता पूर्व निर्धारित पार्किंग क्षेत्र को पुनः व्यवस्थित किया जाए। ताकि यातायात व्यवस्था में सुधार हो सके और व्यापारिक गतिविधियां सुचारू रूप से संचालित हो सके। सिटी सेंटर के मुख्य एवम अन्य ब्लाकों की सड़कों की मरम्मत अथवा पुनर निर्माण को प्राथमिकता दी जाए ।

ट्रेड यूनियन संयुक्त मोर्चा ने 9 जुलाई की हड़ताल को सफल बनाने के लिए की सभा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : गुरुवार को ट्रेड यूनियन संयुक्त मोर्चा, बोकारो के आह्वान पर ब्लास्ट फर्नेस कैंटीन रेस्ट रूम में एक सभा आयोजित कर आगामी 9 जूलाई की देशव्यापी हड़ताल को सफल बनाने का आह्वान किया गया। सभा को संबोधित करते हुए एटक के रामाश्रय प्रसाद सिंह ने कहा कि वर्तमान केन्द्र की मोदी सरकार अपने कॉरपोरेट आकाओं को दी गई चुनाव-पूर्व मोदी -गारंटी यानी व्यापार करने में आसानी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, राहत, रियायतें, छूट और प्रोत्साहन प्रदान करने के अलावा एमडीओ आदि निजीकरण के विभिन्न तरीकों के माध्यम से राष्ट्रीय संपत्ति और संसाधनों को सौंपने के साथ-साथ, अगला

विनाशकारी कदम 29 मौजूदा श्रम कानूनों को निरस्त निरस्त करते हुए उन्हें चार श्रम संहिताओं में शामिल करने का निर्णय लिया है। सीटू के आर के गोराई ने कहा कि श्रमिकों के एक बड़े वर्ग को लेबर कोड से बाहर रखा गया है।। कोड के कार्यान्वयन के लिए श्रमिकों के न्यूनतम संख्या की सीमा को इस स्तर तक बढ़ा दिया गया है कि नियोक्ता आसानी से सुरक्षा अधिकारी, कल्याण अधिकारी, कैंटीन, विश्राम कक्ष या भोजन कक्ष, एम्बुलेंस आदि दायित्वों से बच सकते हैं।श्रम विभाग द्वारा कार्यस्थल निरीक्षण के प्रावधान समाप्त कर दिए जाएंगे, जिससे कानूनों के खुलेआम उल्लंघन का रास्ता खुल जाएगा। एआईयूटीयूसी के सुभाष प्रमाणिक ने कहा कि काम के घंटे, ओवरटाइम, साप्ताहिक विश्राम दिवस आदि से संबंधित पूरा मामला संबंधित राज्य सरकारों के अधीन कर दिया गया है, जिससे मजदूरों के संघर्षों द्वारा प्राप्त अधिकार बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं।

भोगनाडीह में भाजपा ने संथाल परगना को अस्थिर करने की असफल कोशिश की : विरेन्द्र

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : हूल दिवस के ऐतिहासिक दिन भोगनाडीह में भारतीय जनता पार्टी के द्वारा संथाल परगना को अस्थिर करने की असफल कोशिश, उनकी मानसिक दिवालियापन और झारखंड में खोती अपनी राजनीतिक शाख का सीधा प्रमाण है। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की बढ़ती लोकप्रियता और राज्य की जनता का झारखंड मुक्ति मोर्चा तथा अपने मुख्यमंत्री के प्रति समर्पण को देखकर भाजपा इन दोनों बौखलाहट में है और तरह-तरह के हथकंडे अपना करके माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन जी एवं अबुआ सरकार को बदनाम एवं अस्थिर करने का प्रयास करती रही है लेकिन हर बार भारतीय जनता पार्टी के राज्य विरोधी प्रयासों को राज्य की सवा तीन करोड़ जनता असफल करती रही है। झारखंड के शहीदों का अपमान एवं झारखंड के मूलवासियों, आदिवासियों को गुमराह करने की साजिश के खिलाफ गुरुवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा कोडरमा जिला समिति के तत्वाधान में महाराणा प्रताप चौक से जुलूस के रूपें हजारों की संख्या में झामुमो कार्यकर्ता झुमरी तिलैया के झंडा चौके पहुंचे जहां आदिवासी एवं मूलवासी विरोधी भारतीय जनता पार्टी का पुतला दहन किया गया। यह पुतला दहन कार्यक्रम सह आक्रोश मार्च, झामुमो जिला समिति कोडरमा के अध्यक्ष विरेन्द्र पांडेय के नेतृत्व में संपन्न हुई। जिला अध्यक्ष वीरेंद्र पांडे ने भाजपा पर तीखा प्रहार करते हुए कहा कि, हूल दिवस के दिन भोगनाडीह में भाजपा के द्वारा किया गया कुकृत्य संथाल परगना को अस्थिर करने के उद्देश्य से किया गया असफल प्रयास है जिससे भाजपा की आदिवासी हितैषी होने का मुखौटा उतर चुका है और पूरे राज्य की जनता ने देखा कि किस प्रकार से आदिवासियों और मूलवासियों को लड़ाने एवं बदनाम करने का काम बीजेपी करती है। यह न सिर्फ झारखण्ड के शहीदों का अपमान है बल्कि झारखण्ड के आदिवासियों-मूलवासियों को गुमराह करने की साजिश भी है।

प्रधान जिला सत्र न्यायाधीश बालकृष्ण तिवारी ने अधिवक्ताओं के साथ की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकार नालसा एवं माननीय सर्वोच्च न्यायालय के मध्यस्थता और सुलह परियोजना समिति द्वारा चलाये जा रहे 90 दिवसीय विशेष मध्यस्थता अभियान कार्यक्रम के सफलता पूर्वक संचालन को लेकर प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अध्यक्षता में व्यवहार न्यायालय में 01 जुलाई से 30 सितंबर तक विशेष मध्यस्थता अभियान की शुरूआत की गई है । इस अभियान को सफल बनाने के लिए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश कोडरमा के प्रकोष्ठ में मोटर दुर्घटना मुआवजा अधिनियम से सम्बंधित वादों से सम्बंधित अधिवाक्ताओ की एक बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष बाल कृष्ण तिवारी ने बताया कि 90 दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान राष्ट्रीय कानूनी

सेवा प्राधिकरण, सुप्रीम कोर्ट की मध्यस्थता और सुलह परियोजना समिति द्वारा शुरू किया गया है। अभियान के तहत जिला एवं अनुमंडल विधिक सेवा प्राधिकार, जिला अदालत से लेकर उच्च न्यायालयों तक समझौता के लिए सभी उपयुक्त मामलो को निपटाने का प्रयास किया जायेगा। जिसमे मध्यस्थता के लिए पात्र लंबित मामलो में दुर्घटना दावा मामले, घरेलू हिंसा मामले, चेक बाउंस मामले, सर्विस मोटर, आपराधिक समझौता योग्य मामले, उपभोक्ता विवाद मामले, ऋण वसूली मामले, अन्य उपयुक्त सिविल मामले, राजस्व प्रकरण सहित अन्य मामले शामिल है।

नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों का सम्मान सह नियुक्ति पत्र वितरण समारोह का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कोडरमा : भारतीय कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन के निर्देश एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता सह सांसद राहुल गांधी के आह्वान तथा झारखंड कांग्रेस प्रभारी के. राजू प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निर्देश पर जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में एवं जिला अध्यक्ष भागीरथ पासवान के अध्यक्षता में दिन गुरुवार को समय 11:00 बजे कोडरमा परिदन परिसर में मंडल अध्यक्षों का सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कोडरमा संगठन पर्यवेक्षक राजीव रंजन प्रसाद एवं विशिष्ट सह जिला प्रशिक्षक संतोष कुमार देव मौजूद थे। सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के द्वारा सभी नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों को नियुक्ति पत्र व फूल माला पहनाकर देखकर सम्मानित किया

गया। सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए कोडरमा पर्यवेक्षक राजीव रंजन ने कहा यह वर्ष 2025 संगठन सृजन का वर्ष है इसलिए पार्टी नेता तथा कार्यकर्ता पूरी निष्ठावान होकर अपने दायित्व को समझे और कार्य को करें इसके साथ ही उन्होंने कहा कि सभी पार्टी कार्यकर्ता अपने घर व आसपास पर पार्टी का झंडा लगाकर लोगों को जागरूक करें संगठन को मजबूत करना हम सबों का नैतिक कार्य है। भाजपा सरकार द्वारा लगातार देश को संविधान के साथ छेड़छाड़ करने की कोशिश की जा रही है। लेकिन इसका विरोध लगातार हमारे नेता राहुल गांधी के द्वारा संसद से लेकर रोड मार्च करके विरोध किया जा रहा है। यह सांप्रदायिक सरकार देश के गरीब वंचित लोगों को गुमराह करके एवं लगातार महंगाई का मार देकर परेशान कर रही है आने वाले दिन में इनके ।बहकावे में लोग नहीं आने वाले हैं। देश में फिर एक बार राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी की सरकार बनेगी। वही प्रखंड पर्यवेक्षक प्रखंड अध्यक्ष, नगर अध्यक्ष एवं को नवनियुक्त मंडल अध्यक्षों को एक दिवसीय प्रशिक्षण संतोष कुमार देव के द्वारा दिया गया। वहीं संयुक्त रूप से राजेंद्र जयसवाल, मनोज सहाय पिंकू, चंद्रभूषण साव, संजय सेठ , नवनीत ओझा दशरथ पासवान रामलखन पासवान आशीष पाण्डेय ने संबोधित किया। मौके पर सतगांव प्रखंड विजय सिंह प्रदीप सिंह प्रमोद बरनवाल राजू सिंह प्रभात राम मो० मिसबाहुद्दीन सरवन सिंह चौधरी पासवान मिथलेश सिंह जहीर अब्बास संतोष राम रफीक मियां जहीर मियां जैनुल हक पवन कुमार दास कुंदन साहू मनोज शर्मा सुखलाल दास जितेंद्र कुमार काजल कुमारी अर्जुन पासवान समेत सैकड़ो की संख्या में कांग्रेस जान रहे मौजूद।

एक नजर

लोड हाईवा पलट गई और चालक की घटना स्थल पर हीं मौत

कोडरमा : थाना क्षेत्र अंतर्गत कोडरमा घाटी मे बागीटॉड अस्थायी चेकनाका के आगे गुरुवार को 5 बजे सुबह ऐश लोड हाईवा पलट गई और चालक की घटना स्थल पर हीं मौत हो गई। मृतक बिहार के नालंदा निवासी बताया जा रहा है। घटना स्थल पर पुलिस पहुंच कर वाहन को अपने कब्जे मे लेकर शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल कोडरमा भेज दिया है। हालांकि हाइवा के सड़क के किनारे पलटने से सड़क पर जाम नहीं लगी और आवागमन बाधित नहीं हुआ।

मंत्री योगेंद्र प्रसाद के छोटे भाई भरत कपूर का हुआ अंतिम संस्कार

बोकारो : राज्य सरकार में मंत्री योगेंद्र प्रसाद के छोटे भाई भरत कपूर का अंतिम संस्कार आज गुरुवार सुबह बोरोबिंग स्थित दामोदर नदी के तट पर शोकाकुल माहौल में संपन्न हुआ। सुबह 8 बजे उनके आवास मुरुबंदा से अंतिम यात्रा निकली, जिसमें हजारों की संख्या में कार्यकर्ता, शुभचिंतक, पारिवारिक सदस्य और आमजन शामिल हुए। अंतिम यात्रा में मंत्री योगेंद्र प्रसाद, उनके मंझले भाई चित्रगुप्त महतो, बड़े पुत्र विनय कपूर सहित कई परिजनों ने कंधा दिया। दिवंगत भरत कपूर को उनके पुत्र आदित्य कपूर ने मुखाग्नि दी। इस अवसर पर झामुमो के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य, दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री फागू बेसरा, गिरिडीह सांसद चंद्रप्रकाश चौधरी, विधायक रोशनलाल चौधरी सहित कई वरिष्ठ नेता, अधिकारी एवं समाजसेवी उपस्थित रहे। सभी ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की और मंत्री योगेंद्र प्रसाद व उनके परिजनों को इस कठिन समय में सांत्वना दी।

मुहर्रम शांतिपूर्वक कराने को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

चंदवारा : थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता अंचलाधिकारी अशोक कुमार भारती एवं संचालन थाना प्रभारी धनेश्वर कुमार ने किया। बैठक में मुहर्रम के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने, ताजिया जुलूसों के शांतिपूर्ण ,अफवाहों से निपटने एवं सोशल मीडिया पर निगरानी सहित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई। वहीं शांति समिति बैठक को संबोधित करते हुए अंचलाधिकारी अशोक कुमार भारती ने कहा कि प्रखंड में हर पर्व त्यौहार मिल जुलकर सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में मनाने की परंपरा रही है। हमें उस परंपरा को कायम रखना है। अफवाहों पर ध्यान नहीं देना है। किसी तरह की अफवाह की जानकारी मिले तो तुरंत उसकी सूचना प्रशासन को दें। वहीं थाना प्रभारी धनेश्वर कुमार ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि शांति, कानून व्यवस्था और सामाजिक सौहार्द के साथ कोई भी समझौता नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि ताजिया जुलूस के लिए पूर्व अनुमति आवश्यक होगी और सभी समितियों को प्रशासन द्वारा तय किये गये मार्गो का कड़ाई से पालन करना होगा। चंदवारा थाना क्षेत्र में लगभग उन्नीस अखाड़ा है सभी अखाड़ा कमिटी के सदस्य अपने अपने अखाड़े में वॉलेंटियर रखेंगे साथ ही अखाड़ा के सदस्य अपने अपने अखाड़े में ड्रोन कैमरा की निगरानी में जुलूस में शामिल होंगे।

संक्षिप्त खबरें

डोमचांच थाना परिसर में मुहर्रम को लेकर शांति समिति की हुई बैठक

डोमचांच (कोडरमा): डोमचांच थाना परिसर मे गुरुवार को मुहर्रम को लेकर शांति व सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने को लेकर शांति समिति की बैठक आहूत की गई। बैठक की अध्यक्षता मे डोमचांच थाना प्रभारी ओमप्रकाश ने किया। बैठक का संचालन डोमचांच अंचल पुलिस निरिक्षक विनोद कुमार ने किया। थाना प्रभारी और सीओ रविंद्र पाण्डेय ने त्योहार को शांति एवं भाईचारे माहौल में मनाने की अपील की। दोनों समुदाय के लोग कंधे से कंधे मिलाकर चलें। थाना प्रभारी ने कहा कि मुहर्रम को लेकर प्रशासन सजग है। किसी भी समस्या पर प्रशासन को सूचित करें। पुलिस निरीक्षक ने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा जारी किया गया दिशा निर्देश का सख्ती से अनुपालन करना है, साथ हीं कहा की निर्धारित समय और निर्धारित मार्ग से ताजिया जुलूस निकालने को कहा गया है। आपसी सद्भाव के साथ संपन्न कराने में प्रशासन को सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि किसी भी परिस्थिति में विवाद न करे। किसी भी हाल में विवाद उत्पन्न करने वाले और असामाजिक तत्व बक्से नहीं जाएंगे। सोशल मीडिया पर पुलिस की पैनी नजर होगी। सोशल मीडिया पर किसी भी तरह का आपत्ति जनक भड़काऊ पोस्ट नही करेंगे। ऐसे लोगों पर कठोर कार्रवाई की जाएगी। मुहर्रम को लेकर चिन्हित जगहों पर गश्ती की जाएगी। मौके पर भाजपा नेता महेंद्र वर्मा, झामुमो नेता प्रदीप चौधरी, नावाडीह पसंस देवंती देवी, मसनोडीह मुखिया प्रतिनिधि रामदेव पासवान, समाजसेवी प्रवेज खान, असलम अंसारी, सलीम मियां, हाजी मुस्लिम अंसारी, पूर्व मुखिया सुरेश साव, मुकेश कुमार, एसआई सुबोध पाठक, एसआई अजीत महतो, यदि अन्य लोग मौजूद थे।

9 जुलाई को देशव्यापी हड़ताल के लिए सीटू का अभियान तेज

मरकच्चो : सीटू सहित दस केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों के आह्वान पर मजदूर विरोधी लेबर कोड के खिलाफ और न्यूनतम 26 हजार वेतन, पेंशन व ग्रेच्युटी देनें सहित 17 सूत्री मांगों को लेकर 9 जुलाई को देशव्यापी हड़ताल की सफलता के लिए सीटू ने अभियान तेज कर दिया है। प्रखंड स्तर पर बैठकों का दौर जारी है। गुरूवार को झारखंड राज्य आंगनबाड़ी सेविका सहायिका यूनियन (सीटू) के बैनर तले मरकच्चो में प्रखंड परिसर स्थित पंचायत भवन के बाहर सेविका सहायिकाओं की बैठक हुई। जिसमें परियोजना अंतर्गत सभी आंगनबाड़ी केंद्रों में पूर्ण तालाबंदी कर हड़ताल को सफल करने का निर्णय लिया गया। अध्यक्षता प्रखंड सचिव बेबी ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए सीटू के राज्य सचिव संजय पासवान ने कहा कि चार श्रम संहिता जो मजदूर कर्मचारियों के लिए गुलामी का दस्तावेज है, जिसके माध्यम से काम के निर्धारित घंटे, ट्रेड यूनियन अधिकार, हड़ताल का अधिकार, यूनियनों की मान्यता, न्यूनतम वेतन, पीएफ, पेंशन, बोनस जैसे अधिकार से वंचित कर देगा। दूसरी तरफ आंगनबाड़ी की बुनियादी मांगों के साथ एफआरएस जो सेविकाओं के लिए गले की हड्डी बन गई है, जिसके तहत आंगनबाड़ी सेविकाओं का शोषण और उत्पीड़न किया जा रहा है। जिसके खिलाफ आंगनबाड़ी कर्मियों को एकजुट होकर 9 जुलाई की हड़ताल को सफल बनाना होगा।

एनएच गरगा का पुल पर दो बाइक में भिड़ंत में, दो घायल

बोकारो: पिंड्राजोड़ा थाना क्षेत्र के तेलीडीह मोड़ के पास मंगलवार दोपहर उस वक्त अफरातफरी मच गई, जब गरगा नदी पुल के समीप दो बाइकों की आमने-सामने जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों में को-ऑपरेटिव कॉलोनी निवासी राशिद आलम और बांधगोड़ा के होमगार्ड जवान कमलेश रजवार शामिल हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, राशिद आलम मेडिकल कॉलेज की ओर से रॉन्ग साइड में चल रहा था, जबकि कमलेश अपनी बुलेट से सामने से आ रहा था। पुल के पास दोनों बाइकों की सीधी भिड़ंत हो गई। हादसे में राशिद के सिर और हाथ में गंभीर चोटें आई, वहीं कमलेश भी घायल हो गया। राशिद पत्रकार तनवीर का भाई है। मौके पर मौजूद एक टोटो चालक ने मानवता दिखाते हुए दोनों घायलों को निजी अस्पताल पहुंचाया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों बाइकों को पास के पेट्रोल पंप में सुरक्षित रखवाया। अस्पताल में घायलों के परिजन भी पहुंच चुके हैं और इलाज जारी है।

एमजीएम हायर सेकेंड्री स्कूल में इंटर हाउस कविता पाठ प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

बोकारो : एमजीएम हायर सेकेंड्री स्कूल सेक्टर चार एफ बोकारो में अरावली हाउस की ओर से इंटर हाउस कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रधानाध्यापक फादर डा.जोशी वर्गीस ने कहा कि कविता भावनाओं में स्पंदन भर देती है। कविता हमें जीवन में विभिन्न प्रकार के अनुभव व सबक सिखाती है। यह मानव को प्रेम, दु:ख, संघर्ष व जीवन के विभिन्न पहलुओं को देखने का नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती है। साथ ही भाषा, कल्पना व रचनात्मकता का उपयोग करना सिखाती है। कविता कठिनाई का सामना करने व जीवन के उतार-चढ़ाव को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमें दूसरे लोगों के प्रति संवेदनशील बनने में सहयोग करती है। कविता हमें समृद्ध व रचनात्मक जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है। इसके माध्यम से कवि समाज को दिशा प्रदान करते हैं। साथ ही विश्व स्तर पर देश की सभ्यता व संस्कृति का प्रसार करते हैं। विद्यार्थियों को साहित्य में रुचि रखनी चाहिए। विद्यार्थियों ने कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उन्होंने स्वरचित कविता पाठ किया।

देश का किसान अब केवल अन्नदाता नहीं बल्कि ऊर्जा दाता भी होगा : नितिन गडकरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गढ़वा : केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने गुरूवार को झारखंड के गढ़वा में दो राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं का शिलान्यास और एक का लोकार्पण किया। इन परियोजनाओं की कुल लागत 2,460 करोड़ रुपये है। इनमें टोरी-चंदवा और गढ़वा-अंबिकापुर सड़क को मंजूरी दी गई जबकि गढ़वा बाइपास का लोकार्पण शामिल है। इस दौरान उन्होंने झारखंड में सड़क कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने, रोजगार सृजन और उद्योगों के विकास के लिए कई योजनाओं का ऐलान किया। समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री गडकरी ने गढ़वा बाइपास का लोकार्पण करते हुए कहा कि आपको बहुत अच्छी फोरलेन सड़क मिली है। उन्होंने

कहा कि अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति कैनेडी कहते थे कि अच्छे रास्ते होंगे, तो देश समृद्ध होगा। झारखंड खनिजों से भरपूर है। यहां के नौजवानों को काम मिलेगा, तभी विकास संभव है। उन्होंने अपने क्षेत्र की मिसाल देते हुए कहा कि हमारे इलाके में पानी की किल्लत थी, जिससे 10 हजार किसानों ने खुदकुशी की। हमने तालाब बनाकर हालात बदल दिए। मिट्टी को सड़क निर्माण में लगाया। उसी मॉडल को झारखंड में लागू करूंगा। यहां भी 1,000 तालाब बनवाए जाएंगे। उन्होंने झारखंड की तसर साड़ी और स्थानीय कला की भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि हम साहिबगंज और गोड्डा भेजकर इन साड़ियों में झारखंडी डिजाइन तैयार करवाते हैं। इनकी देशभर में भारी मांग है। यहां कारीगरी और हुनर की कोई कमी नहीं है। जरूरत है तो बस प्रशिक्षण और प्रोत्साहन की। कार्यक्रम के दौरान गडकरी ने टोरी-चंदवा मार्ग और गढ़वा से अंबिकापुर तक फोरलेन सड़क को मंजूरी देते हुए कहा कि यह निर्णय स्थानीय विधायक सत्येंद्र तिवारी और सांसद बीडी राम की मांग पर लिया गया है। उन्होंने कहा कि सांसद बीडी राम के प्रयासों का ही यह परिणाम है कि आज यह सड़क हकीकत में बन रही है। गडकरी ने बताया कि वाराणसी से कोलकाता तक इकोनॉमिक कॉरिडोर पर फोरलेन सड़क का काम भी प्रगति पर है। झारखंड में कुल दो लाख करोड़ रुपये की सड़क परियोजनाएं संचालित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि देश का किसान अब केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि ऊर्जा दाता भी होगा। झारखंड में धान की पैदावार होती है और पुआल से बायो-सीएनजी बनाई जा सकती है। यह योजना यहां भी शुरू की जा सकती है। उन्होंने झारखंड के वित्तमंत्री राधाकृष्ण किशोर के इस कथन से सहमति जताई कि चुनाव तक राजनीति हो, उसके बाद विकास की राजनीति होनी चाहिए। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की और कहा कि हेमंत सोरेन से उनकी बात हुई है, लेकिन वह उपस्थित नहीं हो सके, क्योंकि वे दिल्ली में शिबू सोरेन के साथ हैं। उन्होंने भरोसा दिलाया कि झारखंड में अधूरी कोई योजना नहीं रहेगी। उन्होंने मंच से जय जोहार, जय झारखंड और नमस्कार के साथ अपना भाषण समाप्त किया।

एक नजर

सरिया में दूसरे दिन भी जारी रहा हाथियों का आतंक

सरिया : सरिया क्षेत्र में हाथियों का आतंक लगातार दूसरे दिन भी जारी रहा। मंगलवार की रात जहाँ फकिरापहरी के एक जनवितरण प्रणाली के दुकान को इन्होंने निशाना बनाया था। वहीं बुधवार की देर रात लगभग 12 बजे सरिया प्रखंड क्षेत्र के छत्रबाद स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय में 7 हाथियों के झुंड ने हमला कर स्कूल के बाउंड्री वॉल, दीवार व खिडकी दरवाजे तोडकर बच्चों के लिए रखे मध्याह्न भोजन के लगभग दो क्विंटल चावल चट कर गये । इस बाबत विद्यालय के प्रधानाचार्य अरुणदीप ने बताया कि रात में हाथियों के चिंघाडने की आवाज सुनकर ग्रामीणों ने वन विभाग को इसकी सूचना दी। सूचना पाकर वन विभाग की टीम पहुँची और हाथियों को खदेडना शुरू किया। रात 12 बजे से 4 बजे सुबह तक लगातार चार घंटे के मशक्कत के बाद उन्हें नजदीक के जंगल की ओर खदेड़ा गया। बताते चलें कि वनसीमा और बराकर नदी से सटे होने के कारण यहाँ हाथियों का लगातार आना होता है। प्रत्येक वर्ष हाथी इस विद्यालय को नुकसान पहुँचाते हैं। प्रधानाचार्य ने बताया कि अभी तक लगभग हर वर्ष कुल 8 बार हाथियों ने नुकसान पहुँचाया है।

आपसी विवाद में पत्नी की हत्या, पति गिरफ्तार

पलामू : पलामू जिले के नौडीहा बाजार थाना क्षेत्र के महुअरी गांव के रस्सीटाड़ टोला में लगातार लड़ाई-झगड़ा से तंग आकर पति ने पत्नी की टांगी से वार कर हत्या कर दी। पत्नी की हत्या कर भाग रहे आरोपित पति को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। घटना के एक घंटे के भीतर पुलिस ने आरोपित को पकड़ा और हत्या में इस्तेमाल टांगी और कपड़े बरामद किया। गुरूवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में एसपी रीष्मा रमेशन ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि बुधवार की देर शाम बसंत भुइयां ने पत्नी आलती देवी से विवाद के बाद उसकी टांगी से वार कर हत्या कर दी थी। घटना के बाद आरोपित मौके से भाग रहा था। सूचना मिलते ही नौडीहा बाजार पुलिस ने कार्रवाई की और आरोपित को धर दबोचा। उन्होंने बताया कि पति-पत्नी के बीच हमेशा लड़ाई-झगड़ा होते रहता था। बुधवार देर शाम भी किसी बात को लेकर पुन: विवाद हुआ और गुस्से में बसंत ने पत्नी की हत्या कर दी। आरोपित को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। एसपी ने बताया कि बसंत बाहर रहकर मजदूरी करता था। 22 जून को मजदूरी करके लौटा था। उसके चार बच्चे हैं। आपसी विवाद के कई कारण हैं। अनुसंधान में स्पष्ट किया जायेगा। कार्रवाई टीम में नौडीहा बाजार थाना प्रभारी अमित कुमर द्विवेदी, पुअनि अनुसंधानकर्ता उदय प्रसाद यादव, प्रदीप शर्मा, सअनि नागेन्द्र कुमार, दीपक कुमार, जवान नागेन्द्र राम एवं पंकज कुमार सिंह शामिल थे।

बोलेरो में लगी आग बाल-बाल बचे लोग

पलामू : गढ़वा के श्री बंशीधर नगर शहर के धुरकी मोड़ के समीप गुरुवार की अहले सुबह एक बड़ा हादसा होने से बाल बाल बच गया। हुआ यूं कि धुरकी मोड़ के समीप बोलेरो में अचानक आग लग गई। हालांकि चालक की सूझबूझ के कारण कोई जान माल का नुकसान नहीं हुआ। सिर्फ बोलेरो गाड़ी ही धूं धूं कर जल गई। आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। बताया जा रहा है कि खरसोता से दवा कराकर बोलेरो वाहन सोनडीहा (सगमा) की ओर जा रही थी। इसी दौरान रास्ते में वाहन से अचानक धुंआ उठने लगा। ड्राईवर उमेश कुमार पासवान ने सतर्कता दिखाते हुये तुरंत गाड़ी को रोक दिया और सभी यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाल दिया। इसी बीच गाड़ी में तेजी से आग फैल गई। जिससे बोलेरो में सवार लोगों के बीच अफरा तफरी मच गई।

पीडीजे के अगुवाई में जिला विधिक सेवा प्राधिकार की हुई बैठक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिमडेगा : नालसा और झालसा के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा एक जुलाई से सात अक्टूबर तक चलने वाले राष्ट्रव्यापी मध्यस्थता अभियान को सफल बनाने के लिए गुरुवार को न्यायिक पदाधिकारियों और अधिवक्ताओं की बैठक पीडीजे के प्रकोष्ठ में हुई। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायधीश राजीव कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में इस राष्ट्रव्यापी अभियान को सफल बनाने पर विचार विमर्श किया गया। बैठक में बताया गया कि मध्यस्थता अभियान एक जुलाई से शुरू किया गया है,जो 90 दिनों तक चलेगा। इस दौरान मध्यस्थता के माध्यम से आपसी समझौते के आधार पर मामलों का निष्पादन किया जायेगा। पीडीजे ने अभियान का उद्देश्य बताते हुए कहा कि इसके माध्यम से अधिक से अधिक मामलों का मध्यस्थता के माध्यम से निष्पादन करना है। बैठक में पीडीजे ने सभी न्यायिक अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस विशेष अवधि में अधिकतम मामलों की पहचान कर उन्हें मध्यस्थता के लिए भेजें। पीडीजे ने प्राधिकार सचिव मरियम हेमरोम को निर्देश दिया कि सभी मध्यस्थ को नियमित रूप से उपस्थिति सुनिश्चित करने एवं सेवाएं प्रदान करने को कहा जाए। साथ ही जिला प्रशासन से समन्वय स्थापित कर आम जनता को इस अभियान के बारे में जानकारी देने के लिए जन जागरूकता कार्यक्रम चलाने की व्यवस्था करें। पीडीजे ने बताया कि वैवाहिक विवाद, दुर्घटना दावा मामले, घरेलू हिंसा के मामले, चेक बाउंस, व्यावसायिक विवाद, सेवा से संबंधित विभाग,आपराधिक समझौता योग्य मामले, उपभोक्ता विवाद, ऋण वसूली, बंटवारा, बेदखली मामले सहित अन्य सिविल मामलों का निष्पादन किया जायेगा। पीडीजे ने कहा कि आगामी 13 सितंबर को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया है। उसे सफल बनाने को लेकर भी चर्चा की गई। पीडीजे ने 14 जुलाई से प्री काउंसलिंग बैठक शुरू करने को कहा। सभी न्यायिक अधिकारियों को निर्देश दिया कि अधिक से अधिक मामलों की पहचान कर उन्हें लोक अदालत के लिए सूचीबद्ध करें एवं संबंधित लोगों को समय रहते नोटिस जारी करें। ताकि आगामी लोक अदालत में अधिकतम मामलों का समाधान किया जा सके।

बजरंग बली की प्रतिमा किया क्षतिग्रस्त, विरोध में बाजार बंद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : रनिया थाना क्षेत्र के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के पास स्थापित बजरंग बली की प्रतिमा को शरारती तत्वों ने बुधवार की रात को क्षतिग्रस्त कर दिया। लोगों को जब मामले की जानकारी मिली तो हिन्दू समुदाय के लोग आक्रोशित हो गए और उन्होंने रनिया की दुकानों को बंद करा दिया। इसे लेकर गुरुवार को स्थानीय लोगों की बैठक मंदिर परिसर में आयोजित की गई, जिसमें निर्णय लिया गया कि शुक्रवार को सुबह मंदिर में विशेष पूजा का आयोजन किया जाएगा। बैठक में सभी लोगों ने एक स्वर में इस कृत्य की कड़ी निंदा करते हुए दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की। इसके बाद कई लोगों के हस्ताक्षरयुक्त आवेदन रनिया थाना प्रभारी विकास कुमार जायसवाल को सौंपा गया। इसमें अपराधियों की शीघ्र पहचान कर कानूनी कार्रवाई करने की मांग की गई है। सनातन समाज के नेताओं ने स्पष्ट कहा है कि धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इधर, प्रशासन का कहना है कि किसी विक्षिप्त व्यक्ति की यह करतूत है। सनातन समाज और दुर्गा पूजा समिति ने लोगों से विशेष पूजा अनुष्ठान में क्षेत्र के लोगों को शामिल होने की अपील की है।

योग्य छात्र-छात्राओं को समय पर करें छात्रवृत्ति का भुगतान : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : उपायुक्त आर रॉनिटा ने जिले के अधिकारियों को निर्देश दिया है कि सभी योग्य छात्र-दात्राओं को पारदशी तरीके से समय पर छात्रवृत्ति का भुगतान करें। उपायुक्त गरुवार को समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में आयोजित जिला स्तरीय अनुमोदन-सह-अनुश्रवण समिति की बैठक की अध्यक्षता कर रही थी। उन्होंनें छुटे हुए छात्रों को प्री एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति भुगतान के संबंध में चर्चा की गई। बैठक में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों से प्राप्त प्रस्तावों की समीक्षा की गई तथा छात्रवृत्ति भुगतान की स्वीकृति से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक के दौरान उपायुक्त ने छात्रों की सूची, बैंक खातों की स्थिति एवं संस्थागत सत्यापन जैसे बिंदुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि छात्रवृत्ति योजनाओं का उद्देश्य वंचित वर्ग के मेधावी छात्रों को शिक्षा से जोड़ना है। इस अवसर पर परियोजना निदेशक आइटीडीए, जिला कल्याण पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक, सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित थे।

मुरी रेलवे स्टेशन पर सघन चेकिंग अभियान तहत दस किलो गांजा बरामद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : मुरी 02 जुलाई को नशीले पदार्थों की तस्करी पर प्रभावी रोकथाम हेतु मुरी रेलवे स्टेशन पर एक सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। यह अभियान आरपीएफ कमांडेंट श्री पवन कुमार के निर्देश पर, इंस्पेक्टर संजीव कुमार के नेतृत्व में तथा फ्लाइंग टीम/रांची के सहयोग से संचालित किया गया। ट्रेन संख्या 15027 सम्बलपुरझगोरखपुर मौर्य एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म संख्या 01 पर पहुंची। कोच संख्या इए-1 में जांच के दौरान दो संदिग्ध व्यक्तियों को भारी स्काई-ब्लू रंग के ट्रॉली बैग के साथ संदिग्ध अवस्था में बैठे पाया गया। पूछताछ करने पर उनकी पहचान इस प्रकार हुई –1. आजाद कुमार, उम्र 23 वर्ष, पिता मेवा लाल, निवासी सोनबरसा, पोस्ट बलापार, थाना चिलुआटार, जिला गोरखपुर, उत्तर प्रदेश. 2. अविनाश चौहान, उम्र 19 वर्ष, पिता स्व. राजकुमार

चौहान, निवासी इंदरसना इंटर कॉलेज, सोनबरसा, पोस्ट बलापार, थाना चिलुआटार, जिला गोरखपुर, उत्तर प्रदेश। बैग में सामान के बारे में पूछने पर दोनों संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। संदेह के आधार पर उन्हें प्लेटफॉर्म पर ही रोका गया, जहां उन्होंने स्वीकार किया कि ट्रॉली बैग में प्लास्टिक में लिपटा गांजा रखा है। इसकी सूचना तुरंत एएससी/ आरपीएफ/ रांची को दी गई, जो मौके पर पहुंचे। एएसआई मनतु कुमार जयसवाल द्वारा वैधानिक प्रक्रिया के तहत बैग की तलाशी ली गई, जिसमें एक (01) पैकेट गांजा बरामद हुआ, एएससी/ आरपीएफ/ रांची के निदेर्शानुसार डीडी किट टेस्ट किया गया, जिसमें गांजा होने की पुष्टि हुई। इसके बाद पैकेट को पार्सल कार्यालय मुरी में तौला गया, जिसका वजन 10.00 किलोग्राम पाया गया। दोनों आरोपियों के पास गांजे के वैध दस्तावेज नहीं होने के कारण एनडीपीएस अधिनियम 1985 की धाराओं के तहत गांजा तथा अन्य सामान एएसआई मनतु कुमार जयसवाल द्वारा एएससी/ आरपीएफ/ रांची एवं उपस्थित गवाहों की मौजूदगी में जब्त किया गया।

विधायक राजेश कच्छप ने विभिन्न योजनाओं का किया शिलान्यास

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

अनगड़ा : खिजरी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विधायक राजेश कच्छप ने विभिन्न योजनाओं का किया शिलान्यास। मुख्यमंत्री ग्राम सड़क सुद्दढीकरण योजनान्तर्गत राँची पुरुलिया रोड से लुपुंग तक पथ का सुद्दढीकरण कार्य का शिलान्यास एव पुरुलिया रोड से खेरवाकोचा तक, जितुबेड़ा से राय छेय (रेचत) तक, हुण्डरू रोड से सिरका तक, हुण्डरू रोड से जाराटोली तक, हुण्डरू जलप्रपात क्षेत्र का सौन्दर्गीकरण, सहेदा सिकिदिरी से मैलघोंसा तक, सहेदा सिकिदिरी हरातु तक पथ का सुद्दढ़ीकरण कार्य का खिजरी विधायक ने शिलान्यास क्षेत्र वासियों को बड़ी सौगत दी। विधायक ने कार्यक्रम को

संबोधित करते हुए कहा कि इस पथ का निर्माण होने से क्षेत्र में विकास को नई गति मिलेगी,यह सड़क न केवल स्थानीय निवासियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाएगी, बल्कि व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य सामाजिक गतिविधियों को भी सुगम बनाएगी एवं हुंडरू जलप्रपात के सुंदरीकरण से पर्यटकों में व्यापक वृद्धि होगी । इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि श्रवण कुमार मुण्डा प्रमुख दीपा उरांव प्रखंड अध्यक्ष एतवा उरांव विधानसभा सह राजेन्द्रर मुण्डा मंडल अध्यक्ष रेजाक अंसारी महिला अध्यक्ष सरिता देवी सहित शिवदास गोस्वामी, अजय करमाली, सकीर अंसारी, जोन तिग्गा, फारूक खान, विशाल स्वांसी,छोटेलाल महतो, सचिन नायक, किशोर करमाली, राजेन्द्र बेदिया, सफीक अंसारी, संजय नायक, अजय उरांव,विश्राम महतो, सिद्दिक अंसारी, यूनूस अंसारी, राजदेव पहान, अशोक बेदिया, अभिराम मुण्डा, उज्जियस टोप्पो, खीरू उरांव, नयूम अंसारी, कृष्णा महली, महेश गंझू, निर्मल करमाली, सिकेन्द्रर बेदिया, गोवर्धन बेदिया, अजगूत करमाली, अनिल ठाकुर, शाहनाज खातून, देवकी देवी, संगीता कैथा, अनिता देवी, रेशमा देवी, रीता देवी, शांति देवी मिडिया प्रभारी कुलेश्वर मुण्डा एव भारी संख्या में लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

इस्लामपुर-हटिया एक्सप्रेस का चीचाकी रेलवे स्टेशन में ठहराव आज से, लोगों में हर्ष

सरिया : धनबाद रेल मंडल अंतर्गत चीचाकी रेलवे स्टेशन पर हटिया इस्लामपुर एक्सप्रेस (18624 अप तथा 18623 डाउन) का स्थाई ठहराव शुक्रवार की रात से होगा। इसकी स्वीकृति रेलवे मंत्रालय द्वारा दे दी गई है। इस संबंध में पूर्व मध्य रेलवे हाजीपुर जोन के सीपीटीएम द्वारा जारी पत्र के माध्यम से कहा गया है कि धनबाद रेल मंडल के चीचाकी रेलवे स्टेशन पर हटिया इस्लामपुर एक्सप्रेस ट्रेन का ठहराव 5 जुलाई 2025 को 00 :05 बजे जबकि इस्लामपुर हटिया एक्सप्रेस का ठहराव 5 जुलाई 2025 को 2 :32 को होगी। इस संबंध में भारतीय जनता पार्टी के नरेश रजक तथा अर्जुन आर्य ने बताया कि चिचाकी रेलवे स्टेशन में इस ट्रेन के स्थायी ठहराव की मांग यहां के लोगों के लिए पुरानी थी। स्थानीय सांसद अन्नपूर्णा देवी के प्रयास से चीचाकी रेलवे स्टेशन में हटिया इस्लामपुर एक्सप्रेस (अप-डाउन) का स्थाई ठहराव शुक्रवार की रात से प्रारंभ हो रहा है।इस ट्रेन के ठहराव से इस क्षेत्र के लोगों को झारखंड की राजधानी रांची तथा बिहार की राजधानी पटना जैसे महत्वपूर्ण महानगरों से लोगों का सीधा संपर्क होगा,आवागमन में सुविधा मिलेगी। इस नेक कार्य के लिए स्थानीय लोगों ने बगोदर विधायक नागेंद्र महतो तथा कोडरमा सांसद अन्नपूर्णा देवी को बधाई दिया है।

रूडसेट संस्थान सिल्ली में केनरा बैंक के 120वें स्थापना दिवस पर किया पौधारोपण

सिल्ली : सिल्ली श्री धर्मस्थल मंजूनाथेशवर शिक्षण ट्रस्ट एवं केनरा बैंक द्वारा संचालित रूडसेट संस्थान, सिल्ली में केनरा बैंक के 120वें स्थापना दिवस के अवसर पर पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर 120 पौधे लगाए गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिल्ली प्रखंड विकास पदाधिकारी (बी डी ओ) अनिल कुमार, निदेशक संजीत कुमार, नेहा तिर्की, केनरा बैंक सिल्ली शाखा प्रबंधक,कृषि विकाश पदाधिकारी सिल्ली ब्लॉक उनके द्वारा पौधारोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। मुख्य अतिथि ने पर्यावरण संरक्षण एवं हरियाली बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला और सभी से अधिक से अधिक पौधारोपण करने की अपील की। इस अवसर पर रूडसेट संस्थान के निदेशक संजीत कुमार, ने संदेश दिया कि वृक्षारोपण से हमारा जीवन स्वस्थ और उम्र लम्बी होती है। मौके पर संस्थान के वरिष्ट संकाय अनिल कुमार, जगदीश महतो, दशरथ कुमार महतो, महेश रोहिदास, सुनील मुंडा, डी एस टी मेघा रॉय और सभी प्रशिक्षणार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान सभी ने पौधों की सुरक्षा व देखभाल का संकल्प लिया।

बिरसा कॉलेज परिवार ने दी सेवानिवृत्त प्राचार्या को भावभीनी विदाई

खूंटी : बिरसा कॉलेज खूंटी की प्रभारी प्राचार्या प्रो जी किड़ो को उनकी सेवानिवृत्ति पर गुरुवार को कॉलेज के बहुउद्देशीय भवन में सामरोह आयोजित कर उन्हें भावभीनी विदाई दी गई। मौके पर कॉलेज के सभी शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मचारी एवं विद्यार्थी भावुक हो गये। शिक्षकों ने कहा कि प्रभारी प्राचार्या ने अपने चार साल दो महीने के कार्यकाल के दौरान बिरसा कॉलेज को नई बुलंदियों तक में पहुंचाया। इनके कार्यकाल के दौरान कॉलेज ने पहली बार अपना एनएएसी ग्रेड प्राप्त किया। विद्यार्थियों की संख्या में प्रतिवर्ष बढ़ोतरी को देखते हुए कॉलेज में आवश्यक संसाधनों की व्यवस्था और विज्ञान लैब के आधुनिकीकरण में प्रभारी प्राचार्या ने महत्वपूर्ण कार्य किए है। इनके कार्यकाल के दौरान बहुउद्देशीय परीक्षा भवन का निर्माण भी हुआ। खेल के क्षेत्र में बिरसा कॉलेज के छात्रों ने नए कीर्तिमान स्थापित किए। कार्यक्रम का संचालन राजकुमार गुप्ता ने किया। उन्होंने प्रभारी प्राचार्या द्वारा संपन्न कार्यों, उनके जीवन चरित, व्यक्तिगत उपलब्धियां के बारें में बताया। प्रभारी प्राचार्या को पुष्प गुच्छ और अंगवस्त्र देकर उन्हें सम्मानित किया गया। कॉलेज की ओर से मानपत्र और मोमेंटो सम्मान स्वरूप प्रदान किया गया। प्रभारी प्राचार्या ने अपना प्रभार राजनीति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ सीके भगत को सौंपा। प्रभारी प्राचार्या ने अपने कार्यकाल के दौरान आनेवाली चुनौतीयों और समस्याओं को साझा किया और बताया कि कैसे कॉलेज को और आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने सभी को शुभकामनाएं दी और सभी को उनके सहयोग के लिए आभार जताया। मशहूर नागपुरी कलाकार यशोदा देवी, दीनबंधु ठाकुर, महावीर लोहरा और केशो देवी ने अपने गायन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह में अलग-अलग विभागों ने भी अपने उपहार प्रो किड़ों को भेंट किये। मौके पर डॉ पुष्पा सुरीन, जया भारती कुजूर, पूनम टीयू अनंत राम, तारीफ लुगुन, किरण रुबी, शिल्पी कंडुलना, सुशीला कुजूर, डॉ कॉर्नेलियुस मिंज, सावित्री कुमारी, इंदिरा कोनगाड़ी, सूनिता टोप्पो, संध्या सहाय सहित काफी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

Government of Jharkhand
Directorate of Food & Consumer Affairs
3rd Floor, JSFC Bhawan,
Kadru, Ranchi -834002

Reverse e-Auction Procurement Notice through GeM Portal
Letter No.-kha.up.ni.-24-chini-01/2025-1006
Date : 03-07-2025
For Supply of Free Flow White Crystal Sugar (Grade-S-30/M-30) (As Per FSSAI Norms) for 1st Quarter (April 2025 to June 2025) of Financial Year 2025-26 By e-Tender Through E-Bid Followed By Reverse Auction on GeM Platform.

Bid Details	
GeM Bid No.	GEM/2025/B/6406845 Dated: 03-07-2025
Earnest Money Deposit (EMD)	Rs. 24,84,000/- (Twenty Four Lakh Eighty Four Thousand) as EMD in form of demand draft in favor of Director, Directorate of Food and Consumer Affairs, Jharkhand or in following bank details through online Bank Transfer from any nationalized or scheduled bank in India : Bank Name - Indian Bank, Branch - Ashok Nagar, Ranchi, A/C No. - 7876502276, IFSC - IDIB000A662
Tender Publishing Date/ Download Link of Tender Document	03-07-2025/ Through https:// www.jharkhand.gov.in/food and https://gem.gov.in
Last Date and time of Bid Submission	24-07-2025 upto 05:00 pm
Online Bid Submission Period	From 03-07-2025 to 24-07-2025
Pre-Bid Meeting	10-07-2025 at 01:00 pm through google meet (https://meet.google.com/udw-bkov-dxv)
Date of Auction	Will be published after technical evaluation
Name and concerned person for Correspondence	Mr. Dilip Tirkey Mobile no. - 9470520458 , email- directorfood18@gmail.com

Sd/-
Director
(Directorate of Food & Consumer Affairs)
PR 356437 (Directorate of Food and Consumer Affairs)25-26*D

इतिहास पुरुष स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद इतिहास पुरुष हैं। वे सनातन के महान प्रतिनिधि हैं। वे भारतीय संस्कृति के स्वभाव को दुनिया के देशों में ले गए। उस कालखंड में यह कार्य असम्भव था। वे भारत को भी प्राचीन संस्कृति का स्मरण कराते रहे। उनका राष्ट्र धर्म विश्व धर्म था। उन्होंने वेद उपनिषद, ब्रह्म सूत्र, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, योग का अध्ययन कर ज्ञान योग की बात की। वे ग्रन्थों से भारत के ऋषियों के ज्ञान विज्ञान की संस्कृति जन जन तक ले जाने के कर्म योग में थे। स्वामी विवेकानंद जितना प्रभावशाली अपने जीवनकाल में रहे उनके न रहने के बाद उनका प्रभाव बढ़ा है। वे युवाओं को राष्ट्र प्रेम से सम्बद्ध करते हैं। संस्कृति सभ्यता से जोड़ते हैं। वे युवाओं में विशेष ऊर्जा का संचरण करते हैं। वह मौलिक बात करते हैं। वे धर्म की बात प्राथमिक न कह कर सीधे भौतिक प्रश्न करते हैं। वे कहते हैं जो भूखे हैं उन्हें प्राथमिकता में पहले भोजन का प्रबंध हो। जो वस्त्रहीन हैं उन्हें वस्त्र चाहिए। बुनियादी प्रश्नों के हल के बाद हम धर्म की बात कर सकते हैं। वह वंचितों के लिए प्रश्न खड़े कर रहे हैं। वह किसी पूजा, उपासना की बात प्राथमिक नहीं करते हैं। वे अधिक जोर कर्म पर ही दे रहे हैं। वह अभाव को ईश्वरीय देन नहीं मानते। तभी तो वह उठो जागो और लक्ष्य की प्राप्ति तक मत रुको का संदेश दे रहे थे। वे भक्ति, पूजा, उपासना, प्रेम, श्रद्धा की ओर प्रत्येक को ले जाना चाहते हैं। वह विश्व बंधुत्व की बात कर रहे हैं। वे प्रत्येक में व्यक्ति ईश्वरत्व देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में अनंत ऊर्जा देखते हैं। विवेकानंद चाहते थे कि लोग राष्ट्रभक्ति भाव से भर जाएं। वह उपनिषदों का अध्ययन करने के बाद निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उपनिषदों का प्रत्येक पृष्ठ मुझे शक्ति का संदेश देता है। उपनिषद कहते हैं, हे मानव तेजस्वी बनो। दुर्बलता को त्याग दो। संपूर्ण जगत के साहित्य में इन्हीं उपनिषदों में भयशून्य यह शब्द बार-बार प्रयोग हुआ। और संसार के किसी भी शास्त्र में ईश्वर या मानव के प्रति भय शून्य यह विशेषण प्रयुक्त नहीं हुआ है, कि निर्भय बनो। उपनिषदों द्वारा मुक्ति और स्वाधीनता का उद्घोष किया गया है। यहां पर लाहौर में दिए गए उनके तीन वक्तव्यों का उल्लेख आवश्यक प्रतीत हो रहा है। पहला हिंदू धर्म के सामान्य आधार पर, दूसरा भक्ति पर, तीसरा वक्तव्य वेदांत पर था। उन्होंने कहा यह वही पवित्र भूमि है जो आर्यावर्त में पवित्रम मानी जाती है। यह वही ब्रह्मावर्त है। इसका उल्लेख हमारे महर्षि मनु ने किया है। यह वही भूमि है जहां आत्म तत्व आकांक्षा का प्रबल स्रोत प्रवाहित हुआ है। जैसा कि इतिहास से प्रकट है। यह वही भूमि है जहां आगे चलकर अपने विस्तार से यह सभी आध्यात्मिक महत्वाकांक्षाएं उत्पन्न हुईं। फिर धीरे-धीरे एक धारा में होकर शक्ति संपन्न हुई है। आर्यावर्त में हमलावर बर्बर जातियों के प्रत्येक हमले का सामना इसी वीर भूमि ने छाती खोलकर किया। वही भूमि है जहां गुरु नानक ने विश्व प्रेम का उपदेश दिया। जहां केवल हिन्दुओं को ही नहीं मुसलमान को भी गले लगाने के लिए अपने हाथ फैलाए। गुरु गोविंद सिंह ने धर्म रक्षा के लिए अपना और प्रिय जनों का रक्त बहा दिया। लोगों ने उनके साथ छोड़ दिया। हे पंचनद के भाइयों अपनी इस प्राचीन भूमि में तुम लोगों के सामने आचार्य रूप में नहीं खड़ा हुआ हूं। मैं तो यह खोजने आया हूं कि हम लोगों की मिलन भूमि कौन सी है। यहां मैं जानने आया हूं कि कौन सा आधार है कि हम लोग आपस में सदा भाई बने रह सकते हैं। कुछ रचनात्मक कार्यक्रम रखने आया हूं। स्वभावतः इस देश में मेधा संपन्न महापुरुषों का जन्म हुआ। उनके हृदय में सत्य, न्याय, के प्रति प्रबल अनुराग था। पुनर्निर्माण का समय आ गया है। बिखरी शक्तियों को एक ही केंद्र में लाकर सदियों से रुकी उन्नति में अग्रसर करने का समय आ गया है। मैं हिंदू शब्द का प्रयोग बुरे अर्थों में नहीं कर रहा हूं जो बुरा मानते हैं अर्थ समझते हो। प्राचीन काल में उस शब्द का अर्थ था सिंधु नद के दूसरी ओर बसने वाले लोग। हमसे घृणा करने वाले बहुतेरे लोग आज उस शब्द का कुत्सित अर्थ भले लगाते हो, पर केवल नाम में क्या धरा है। हिंदू नाम ऐसी प्रत्येक वस्तु का द्योतक रहे जो महिमामय हो। अध्यात्मिक हो। यदि आज हिन्दू शब्द का कोई बुरा अर्थ है तो उसकी परवाह मत करो। अपने कार्यों आचरण द्वारा दिखाने को तैयार हो जाओ कि समग्र संसार की कोई भी भाषा इससे ऊंचा, महान शब्द अविष्कार नही कर सकी। विवेकानंद कह रहे हैं कि तुम्हें अपनी हिन्दू संस्कृति पर गर्व होना चाहिए।

सूडोकु नवताल- 7480

★☆☆☆☆ सरल

7	8				2	6		3
			4					
1	3	5		8				
	2			1			7	8
6	7			9			2	
				6		5	9	2
					3			
2		8	5				6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -7479 का हल

4	3	2	9	5	6	1	7	8
6	8	5	7	1	4	9	2	3
9	1	7	3	8	2	4	5	6
3	4	8	6	2	7	5	1	9
5	6	1	8	4	9	2	3	7
2	7	9	5	3	1	6	8	4
1	9	3	4	7	5	8	6	2
8	2	4	1	6	3	7	9	5
7	5	6	2	9	8	3	4	1

झरिया की जलती धरती: कोयले की आग में झुलसती जिंदगी और पर्यावरण

मिथलेश दास

खूबसूरत राज्य झारखंड को प्रकृति ने बड़ी फुर्सत से गढ़ा है। यहां की हरियाली, पहाड़, झरने और नदियाँ किसी को भी आकर्षित कर सकती हैं। लेकिन यह राज्य केवल अपनी प्राकृतिक संपन्नता के लिए ही नहीं, देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने वाले कोयला भंडारों के लिए भी प्रसिद्ध है। झारखंड में देश का लगभग 19 प्रतिशत कोयला है, और जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार यहां करीब 86 हजार मिलियन टन कोयले का भंडार मौजूद है, जो अगले 70 वर्षों तक देश की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है। सुनने में यह सब सुखद लगता है- लेकिन इस तस्वीर के पीछे एक धुएँ से ढँकी हुई, झुलसी और दरकी हुई सच्चाई है। झरिया, जो धनबाद जिले का हिस्सा है, बीते 109 वर्षों से जल रहा है। 1916 में पहली बार भूमिगत आग की सूचना मिली थी, और तब से लेकर आज तक झरिया की धरती अंदर ही अंदर धधकती आ रही है। झरिया कोलफील्ड की शुरूआत निजी स्वामित्व वाली खदानों से हुई थी, जहाँ मुनाफा सर्वोपरि था और सुरक्षा, संरक्षण, या पर्यावरण की कोई परवाह नहीं की गई। अवैज्ञानिक और लापरवाह खनन ने आग को जन्म दिया और झरिया को एक पर्यावरणीय नरक में बदल दिया। आज झरिया के कई इलाके ऐसे हैं, जहाँ धुएं के गुबार और

जहरीली हवा आम बात है। आग के कारण भूमि का क्षरण जारी है, जमीन धँसती जा रही है और घरों में दरारें पड़ती जा रही हैं। कभी-कभी अचानक भूधंसान से गोफ बनते हैं, जिनमें इंसान समा जाते हैं। यह सब इतना आम हो चला है कि लोग मौत को जीवन का हिस्सा मानकर जीने को विवश हैं। पूरे देश को ऊर्जा देने वाला झरिया, खुद अंधेरे और असुरक्षा में डूबा हुआ है। यहाँ के लोग रोजाना जमीन के नीचे की आग और ऊपर की विषैली हवा के बीच जीते हैं। लेकिन इसके बावजूद, कई लोग यह क्षेत्र छोड़कर जाना नहीं चाहते। एक वजह है- रोजगार। झरिया न केवल एक खनन क्षेत्र है, बल्कि एक व्यावसायिक केंद्र भी है। यहाँ छोटे-बड़े कारोबारी, खोमचे वाले, मजदूर और दुकानदार अपनी आजीविका चलाते हैं। बेलगड़िया टाउनशिप में जिन लोगों को पुनर्वास के तहत घर मिले, वे कुछ समय बाद फिर से झरिया लौट आए, क्योंकि वहाँ रहने के लिए घर तो था, लेकिन रोजगार और मूलभूत सुविधाएँ नहीं थीं। झरिया में भूमिगत आग से सबसे बड़ा असर पर्यावरण और मानवीय जीवन पर पड़ा है। आग से निकलती जहरीली गैसें जैसे कार्बन मोनोऑक्साइड, मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड, न केवल हवा को जहरीला बना रही हैं, बल्कि सांस से जुड़ी गंभीर बीमारियाँ जैसे दमा, ब्रोंकाइटिस, फेफड़ों का कैंसर और त्वचा रोग यहाँ आम हो गए हैं। क्षेत्र में तापमान असमान्य रूप से बढ़ा है, मिट्टी बंजर हो चुकी है और भूमिगत जल का स्तर लगातार गिरता जा रहा है। यह सब मिलकर झरिया को एक जीवित पर्यावरणीय आपदा क्षेत्र बना चुका है। लेकिन यह आग केवल कोयले और पर्यावरण तक सीमित नहीं, यह लोगों के जीवन में भी धधकती है। 24 मई 2017 को झरिया के इंदिरा चौक (फुलारीबाग) क्षेत्र में एक भयावह हादसा हुआ, जब एक गैराज मिस्त्री बबलू गद्दी और उनका 14 वर्षीय पुत्र रहीम अचानक जमीन धँसने से उसमें समा गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जमीन धंसते ही जोरदार गैस रिसाव हुआ और अगल-बगल की जमीन भी अत्यंत गर्म हो गई। यह केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि उस भयंकर स्थिति का संकेत है जिसमें झरिया के लोग हर दिन जी रहे हैं। वर्ष 2018 से आरएसपी कॉलेज, झरिया को भूमिगत आग के खतरे के कारण अस्थायी रूप से झरिया से स्थानांतरित कर बेलगड़िया टाउनशिप में संचालित किया जा रहा है। यह एक शिक्षण संस्थान के विस्थापन की दुर्लभ और चिंताजनक स्थिति है, जो बताता है कि झरिया की आग अब केवल घरों को ही नहीं, शिक्षा व्यवस्था को भी जला रही है। और इतना ही नहीं, 2020 में झरिया क्षेत्र के स्कूलों का बंद होना इन त्रासदियों का जीवंत प्रमाण है। झरिया मास्टर प्लान, जिसे एशिया की सबसे बड़ी पुनर्वास योजना कहा जाता है, 2009 में प्रारंभ हुआ था और इसका लक्ष्य था कि 2021 तक झरिया के अग्निप्रभावित क्षेत्रों के सभी लोगों को सुरक्षित स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया जाए। लेकिन आज भी पुनर्वास का कार्य अधूरा है। झरिया पुनर्वास एवं विकास प्राधिकरण के तहत अब तक केवल आंशिक सफलता मिली है। लगभग 32 हजार रैयत और एक लाख से अधिक गैर-रैयत, जो किसी न किसी रूप में झरिया की जमीन और अर्थव्यवस्था से जुड़े हैं, पुनर्वास के प्रति असमंजस में हैं। बेलगड़िया, जहाँ कुछ लोगों को बसाया गया, वहाँ न तो पर्याप्त रोजगार है, न चिकित्सा सुविधा, न ही सामाजिक संरचना। 2021 में किए गए एक सर्वेक्षण में दावा किया गया कि भूमिगत आग का दायरा 17.32 वर्ग किलोमीटर से घटकर 1.8 वर्ग किलोमीटर रह गया है। लेकिन इसके बावजूद भूधंसान की घटनाएँ तेजी से बढ़ी हैं, और जान-माल की हानि जारी है। पुनर्वास प्रक्रिया में स्थानीय लोगों की भागीदारी, रोजगार के वैकल्पिक स्रोत और स्थायी ढांचे का निर्माण न होना इस योजना की सबसे बड़ी कमजोरी बन गई है। केंद्र सरकार ने हाल ही में झरिया पुनर्वास योजना के लिए ?5940 करोड़ की राशि स्वीकृत की है। इसका उद्देश्य है कि डेंजर जोन में रह रहे लोगों को सुरक्षित आवास, रोजगार के साधन और आवश्यक सुविधाएं दी जाएं। लेकिन झरिया के लोगों का भरोसा अब योजनाओं पर नहीं, उनके वास्तविक क्रियान्वयन पर टिका है। झरिया की यह अग्निकथा केवल एक क्षेत्रीय आपदा नहीं है, यह एक राष्ट्रीय चिंता का विषय है। आज आवश्यकता है कि केंद्र और राज्य सरकार, कोयला कंपनियाँ, वैज्ञानिक संस्थान और नीति-निमार्ता मिलकर एक समन्वित एवं दीर्घकालिक रणनीति बनाएं, ताकि झरिया को अग्नि-मुक्त और हरियाली-युक्त बनाया जा सके। इसके लिए केवल कागजी योजनाओं से काम नहीं चलेगा, बल्कि व्यवहारिक क्रियान्वयन और नवीनतम तकनीकों का सहारा लेना अनिवार्य है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित आधुनिक तकनीकों नाइट्रोजन फ्लशिंग, बैकफिलिंग और गैस सीलिंग आदि जैसी विधियों का उपयोग किया जाए। ताकि झरिया की जलती जमीन को ठंडा करने में मददगार साबित हो सकती हैं। पुनर्वास योजनाएँ लोगों की भागीदारी से बनाई जाएँ, ताकि वे केवल सरकारी घोषणा नहीं, जमीन पर सच बन सकें। इसके साथ ही क्षेत्र में मोबाइल चिकित्सा इकाइयाँ, शिक्षा केंद्र, स्वरोजगार प्रशिक्षण और हरित पट्टियों का निर्माण किया जाना चाहिए, ताकि झरिया न केवल बचे, बल्कि फिर से साँस ले सके। झरिया की आग अब चेतावनी बन चुकी है- यह हमें याद दिलाती है कि जब विकास का आधार विनाश बनता है, तो अंततः वह मानवता को ही लील लेता है।

दक्षिण भारत समेत महाराष्ट्र में हिन्दी विरोध का शोर

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

ये जिद आज भारत में उन तमाम करोड़ों लोगों की है, जोकि हिन्दी के सहारे अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं। हिन्दी उनके जीवन में परस्पर संवाद का काम करती है और उन्हें खुशहाल बनाती है। इसलिए ये साफतौर पर आज देश भर में यही कह रहे हैं, हिन्दी बोलने के लिए साहब आप कितना भी क्यों न मारिए, पर मैं हिन्दी बोलना नहीं छोड़ूंगा। पर कुछ सिरफिरे हैं, जिनके पास लगता है कोई काम नहीं, वह भाषा विवाद पैदा करके ही अपनी राजनीति चमकाते हैं, दक्षिण भारत के राज्यों से लेकर महाराष्ट्र तक में यह संकट बहुत घना है। अचानक बीच-बीच में यहां एक आन्दोलन खड़ा होता है और आवाज बुलंद की जाती है कि हिन्दी का विरोध करना है। अभी महाराष्ट्र से पहले तमिलनाडु, कर्नाटक में हिन्दी के खिलाफ आवाज तेजी से उठती दिखी। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन का कहना है कि राज्य में हिन्दी का विरोध किया जाएगा, क्योंकि हिन्दी मुखौटा है और संस्कृत छुपा हुआ चेहरा', पर क्या वास्तव में ऐसा है? अभी सोशल मीडिया पर महाराष्ट्र के ठाणे में राज ठाकरे की पार्टी महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) के कार्यकताओं द्वारा एक गुजराती दुकानदार की पिटाई करता हुआ वीडियो वायरल हो रहा है, वास्तव में ये वीडियो बहुत आहत करता है। भाषा के लिए आप किसी को भी मारेंगे? एमएनएस कार्यकर्ता दुकानदार से कहते हैं कि ये महाराष्ट्र है, इसलिए यहां मराठी बोलना ही होगा। राज ठाकरे ने महाराष्ट्र सरकार से मराठी और इंग्लिश अनिवार्य करने की अपील की है। इन्हें हिन्दी से दुश्मनी है!

दूसरी ओर महाराष्ट्र में 16 अप्रैल को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को लागू करने का फैसला लिया गया था। इसके तहत राज्य के मराठी और अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में पहली से पांचवीं कक्षा के छात्रों के लिए हिन्दी को अनिवार्य तीसरी भाषा बनाया गया था। किताबे छप चुकी, लेकिन अब एमएनएस की तरह ही राज्य में कई संगठन और राजनीतिक दलों ने हिन्दी पढ़ाने का विरोध जारी रखा। जिसके चलते आखिरकार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडनवीस ने 22 अप्रैल को हिन्दी अनिवार्य करने का अपना निर्णय वापस ले लिया। लेकिन इसके बाद भी महाराष्ट्र में हिन्दी बोलने पर लोगों को पीटा जा रहा है। यहां गंभीरता से विचार सभी को यह अवश्य करना चाहिए कि आखिर केंद्र की मोदी सरकार त्रि-भाषा सूत्र को राष्ट्रीय शिक्षा नीति में क्यों लेकर आई।

तथ्यों को गहराई से जानें तो भारत में स्वाधीनता के बाद सबसे पहले त्रि-भाषा सूत्र को राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग) ने वर्ष 1968 की नीति में उल्लेखित किया था। कोठारी आयोग ने ही सिफारिश की थी कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिंदी तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त एक आधुनिक भारतीय भाषा अथवा दक्षिण भारत की भाषाओं में से किसी एक के अध्ययन की व्यवस्था एवं अहिन्दी भाषी राज्यों में राज्य भाषाओं एवं अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की जाए। इसी व्यवस्था को त्रिझभाषा सूत्र के नाम से जाना गया। इस आयोग की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए भारत की संसद द्वारा एक संकल्प पारित किया गया जिसे राजभाषा संकल्प 1968 के नाम से जाना जाता है। राजभाषा संकल्प 1968 के अनुसार- भारत की एकता एवं अखंडता की भावना को बनाए रखने एवं देश के विभिन्न भागों में जनता में संपर्क सुविधा के लिए यह आवश्यक है कि भारत के केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकारों के परामर्श से तैयार किए गए त्रि-भाषा सूत्र को सभी राज्यों में पूर्णत कार्यान्वित किया जाएगा। कोठारी आयोग के बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लिए देश के प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में केंद्र सरकार द्वारा एक समिति का गठन किया गया। चूंकि त्रि-भाषा सूत्र को पूरी तरह व्यावहारिक तौर पर लागू नहीं किया जा सका था, इसलिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस बात का उल्लेख किया गया कि उपर्युक्त त्रि-भाषा सूत्र को लागू किया जाएगा। अब थोड़ा अध्ययन अपने आसपास के देशों का और युरोप सहित दुनिया के प्रमुख देशों का भी भाषा के स्तर पर कर लेना चाहिए।

भारत के पड़ोसी देश चीन में 300 से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं। चीनी भाषा (सिनिटिक) में सात मुख्य भाषा समूहों में विभाजित किया गया है, जिनमें मंदारिन, वू, कैंटोनीज, मिन, हक्का, गान और जियांग शामिल हैं। किंतु एक भाषा के स्तर पर चीन की आधिकारिक भाषा मंदारिन है। इन सभी में भारत की तरह से कोई आपसी विरोध नहीं दिखता। नेपाल में 124 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। जिसमें कि नेपाली देश की आधिकारिक भाषा है। इसके बाद मैथिली दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। नेपाल में कई अन्य भाषाओं में भोजपुरी, थारू, नेवारी, लिम्बू, राय, शेरपा, मगर, गुरुंग हैं। पाकिस्तान में लगभग 70 से 80 भाषाएं हैं। उर्दू को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। पंजाबी, पश्तो, सिंधी, सरायकी और बलूची जैसी भाषाएं भी पाकिस्तान में व्यापक रूप से लोग बोलते हैं। हिंडको, ब्राहवी, कोहिस्तानी, और अन्य कई भाषाएं भी पाकिस्तान में बोली जाती हैं। पर उर्दू के मामले में सभी एकमत हैं।

भारत के एक अन्य पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में लगभग 40 क्षेत्रीय भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से 36 जातीय अल्पसंख्यक भाषाएं हैं और 6 गैर-जातीय अल्पसंख्यक भाषाएं हैं। आधिकारिक भाषा बांग्ला है। कुछ प्रमुख भाषाएं हैं- चकमा, उर्दू, गारो, मीतेई, कोकबोरोक और राखीन। इस देश में भी कोई भाषा विवाद नजर नहीं आता। अफगानिस्तान में मुख्य रूप से दो आधिकारिक भाषाएं हैं: पश्तो और दारी। इसके अलावा, कई अन्य क्षेत्रीय और अल्पसंख्यक भाषाएं भी बोली जाती हैं, जैसे कि उज्बेकी, तुर्कमेनी, बलूची, पशाई, अरबी, उर्दू, और कुछ पामीरी भाषाएं। श्रीलंका में मुख्य रूप से दो भाषाएं बोली जाती हैं, सिंहली और तमिल। कुछ लोग क्रियोल मलय जैसी अन्य भाषाएं भी बोलते हैं। पर आपस में किसी का कोई परस्पर भाषायी विवाद नहीं।

जर्मनी में लगभग 250 बोलियां हैं, जिनमें से मानक जर्मन देश की आधिकारिक भाषा है। यहां प्रमुखता सेतुर्की, कुर्द, पुर्तगाली, अरबी, अल्बानियाई, रूसी, पोलिश, आदि, जो जर्मनी में प्रवासी समुदायों द्वारा बोली जाती हैं। जर्मनी में अंग्रेजी, फ्रेंच और लैटिन जैसी विदेशी भाषाएं भी स्कूलों में पढ़ाई जाती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में 350 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं, जिसमें सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा अंग्रेजी और इसके बाद स्पेनिश का नंबर आता है। इसके साथ ही संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 150 मूल अमेरिकी भाषाएं भी बोली जाती हैं। रूस में, रूसी भाषा राष्ट्रीय स्तर पर एकमात्र आधिकारिक भाषा है, लेकिन इसके अलावा, 35 अन्य भाषाएं भी हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों में आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। फ्रांस में फ्रेंच देश की आधिकारिक भाषा है, वहीं लगभग 75 क्षेत्रीय भाषाएं भी बोली जाती हैं, जिनमें से कुछ को स्कूलों में भी पढ़ाया जाता है। जिनमें ओसीटान, ब्रेटन, बास्क, कोर्सीकन, अलसैटियन और कुछ मेलानेशियन भाषाएं शामिल हैं। जापान में जापानी भाषा बोली जाती है। साथ ही कुछ क्षेत्रीय भाषाएं और बोलियां भी हैं, जैसे कि रयुक्युआन भाषाएं, जो ओकिनावा और कागोशिमा के कुछ हिस्सों में बोली जाती हैं, और ऐनू भाषा, जो होक्काइडो में बोली जाती है।

ब्रिटेन में अंग्रेजी के अलावा कई अन्य भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से कुछ स्वदेशी हैं और कुछ विदेशी हैं। यहां वेल्श, स्कॉटिश गेलिक, आयरिश, स्कॉट्स और कॉर्निश जैसी स्वदेशी भाषाएं भी मौजूद हैं। ब्रिटेन में दुनिया भर से आए प्रवासियों के कारण कई विदेशी भाषाएं भी बोली जाती हैं, जैसे कि पोलिश, बंगाली, पंजाबी, उर्दू, और फ्रेंच। कुल यहां पर 300 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। ब्रिटेन की तरह ही ऑस्ट्रेलिया में भी 300 से अधिक भाषाएं हैं, जिनमें अंग्रेजी राष्ट्रीय भाषा है। अन्य प्रमुख भाषाओं में मंदारिन, अरबी, कैंटोनीज, वियतनामी और इतालवी शामिल हैं। ऑस्ट्रेलिया में 23 स्वतंत्र भाषा परिवारों और 9 अलग-अलग समूहों को मान्यता दी गई है, जिसमें कुल 32 स्वतंत्र भाषा समूह हैं। दूसरी तरफ भारत में 121 प्रमुख भाषाएँ और 270 मातृभाषाएं बोली जाती हैं।

एक महीने की है बात, पाकिस्तान नहीं है पूर्णकालिक संयुक्त राष्ट्र संघ अध्यक्ष

संजय सक्सेना

भारत-पाकिस्तान के तल्ख रिश्तों के बीच पाकिस्तान के संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) की मासिक रोटेशनल अध्यक्षता संभाले जाने से भारत के एक विशेष वर्ग में बहुत तीखी प्रक्रिया हो रही है। सोशल मीडिया पर भी मोदी सरकार के खिलाफ अपमानजनक भाषा का प्रयोग करते हुए ऐसा माहौल बनाया जा रहा है जैसे मोदी सरकार की विदेश नीति पूरी तरह से पिट गई है। पहली नजर में यह घटना भारत और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से चले आ रहे तनावपूर्ण संबंधों के संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण लगती है,लेकिन ऐसा है नहीं। दरअसल, पाकिस्तान को यह जिम्मेदारी जनवरी 2025 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में 193 में से 182 वोटों के साथ अस्थायी सदस्य चुने जाने के बाद मिली है। यह अध्यक्षता, हालांकि प्रतीकात्मक और केवल एक महीने के लिए है, फिर भी पाक का यह छोटा सा कार्यकाल भारत के लिए कूटनीतिक और रणनीतिक चुनौतियां पेश कर सकता है, विशेष रूप से तब जब पाकिस्तान लम्बे समय से कश्मीर जैसे संवेदनशील मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर उठाने के लिये प्रयासरत है।

गौरतलब हो, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अध्यक्षता एक रोटेशनल प्रक्रिया है, जिसमें 15 सदस्य देशों (5 स्थायी और 10 अस्थायी) को वणार्नुक्रम के आधार पर हर महीने यह जिम्मेदारी मिलती है। इस दौरान अध्यक्ष देश परिषद की बैठकों का एजेंडा तय करता है, प्रेसिडेंशियल स्टेटमेंट जारी करता है, और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा को दिशा देता है। वैसे पाकिस्तान ने अपनी अध्यक्षता की शुरूआत में ही कश्मीर मुद्दे को उठाकर भारत को असहज करने की कोशिश की है। संयुक्त राष्ट्र में पाकिस्तान के राजदूत असीम इफ्तिखार अहमद ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कश्मीर को भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव का प्रमुख कारण बताते हुए इसे क्षेत्रीय स्थिरता और मानवाधिकारों के लिए खतरा करार दिया। यह कदम भारत की आशंकाओं को सही साबित करता है, जो पहले से ही मानता था कि पाकिस्तान इस मंच का दुरुपयोग भारत के खिलाफ प्रचार के लिए करेगा।

गौर करने वाली बात यह भही है कि पाकिस्तान की रणनीति में दो प्रमुख कार्यक्रम शामिल हैं, जो 22 और 24 जुलाई को आयोजित होंगे। पहला, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देना और दूसरा, संयुक्त राष्ट्र और इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के बीच सहयोग पर केंद्रित है। इन दोनों बैठकों की अध्यक्षता पाकिस्तान के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार करेंगे। विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान इन मंचों का उपयोग कश्मीर और अन्य मुद्दों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने के लिए कर सकता है, जिससे भारत पर कूटनीतिक दबाव बढ़ सकता है।

वैसे जानकारों का कहना है कि पाकिस्तान की यूएनएससी अध्यक्षता का भारत पर प्रभाव सीमित लेकिन रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है। सबसे पहले, कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीयकरण करने की पाकिस्तान की कोशिश भारत के लिए एक चुनौती है। भारत ने हमेशा कश्मीर को अपना आंतरिक मामला माना है और इसे द्विपक्षीय रूप से हल करने की वकालत की है। लेकिन, यूएनएससी जैसे मंच पर इस मुद्दे को उठाने से पाकिस्तान वैश्विक समुदाय का ध्यान इस ओर खींच सकता है, जिससे भारत को अपनी स्थिति को और मजबूती से रखना होगा।

दूसरा, पाकिस्तान की अध्यक्षता के दौरान भारत को अपनी कूटनीतिक रणनीति को और सशक्त करना होगा। भारत ने हाल ही में यूएन मुख्यालय में द ह्यूमन कॉस्ट ऑफ टेररिज्म प्रदर्शनी आयोजित कर पाकिस्तान की आतंकवाद में कथित भूमिका को उजागर किया था। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने इस दौरान स्पष्ट किया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई को वैश्विक मंचों पर और मजबूती से उठाएगा। लेकिन, पाकिस्तान की अध्यक्षता भारत के लिए एक कूटनीतिक चुनौती पेश करती है, क्योंकि वह न्छैब के एजेंडे को प्रभावित कर सकता है।

तीसरा, भारत में विपक्षी दलों, विशेष रूप से कांग्रेस, ने इस घटना को मोदी सरकार की कूटनीतिक विफलता करार दिया है। कांग्रेस नेता रणदीप सुरजेवाला ने दावा किया कि पहलगाम में हाल के आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान को यह जिम्मेदारी मिलना भारत की विदेश नीति की नाकामी को दशार्ता है। इससे भारत में आंतरिक राजनीतिक दबाव भी बढ़ सकता है, जो सरकार के लिए एक अतिरिक्त चुनौती है।

जबकि सरकारी पक्ष का कहना है भारत इस स्थिति से निपटने के लिए पहले से ही सक्रिय है। वह वैश्विक मंचों पर आतंकवाद के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करता रहेगा और यूएनएससी में अपने सहयोगी देशों, जैसे अमेरिका, रूस, फ्रांस, और ब्रिटेन, के समर्थन का उपयोग करेगा। ये देश पहले भी कश्मीर मुद्दे पर भारत के पक्ष में रहे हैं। इसके अलावा, भारत अपनी कूटनीतिक ताकत का उपयोग कर यह सुनिश्चित करेगा कि पाकिस्तान का कोई भी प्रस्ताव परिषद में समर्थन न पाए, क्योंकि किसी भी प्रस्ताव को पास होने के लिए सभी पांच स्थायी सदस्यों की सहमति आवश्यक है।

लब्बोलुआब यह है कि पाकिस्तान की यूएनएससी अध्यक्षता भारत के लिए एक रणनीतिक चुनौती है, लेकिन इसका प्रभाव सीमित है।

दैनिक पंचांग

4 जुलाई 2025 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

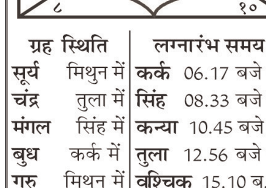

शुक्रवार 2025 वर्ष का 185 वा दिन
दिशाशूल पश्चिम **ऋतु** वर्षा।
विक्रम संवत् 2082
शक संवत् 1947
मास आषाढ़
पक्ष शुक्ल
तिथि नवमी 16.32 बजे को समाप्त।
नक्षत्र चित्रा 16.50 बजे को समाप्त।
योग शिव 19.36 बजे को समाप्त।
करण कौलव 16.32 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 08.6 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 22° 52'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1872395
जूलियन दिन 2460860.5
कलियुग संवत् 5125
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2551
हिजरी सन् 1446
महीना मोहर्रम
तारीख 08

ग्रह स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य	मिथुन में	कर्क	06.17 बजे से
चंद्र	तुला में	सिंह	08.33 बजे से
मंगल	सिंह में	कन्या	10.45 बजे से
बुध	कर्क में	तुला	12.56 बजे से
गुरु	मिथुन में	वृश्चिक	15.10 ब.से
शुक्र	वृष में	धनु	17.26 बजे से
शनि	मीन में	मकर	19.31 बजे से
राहु	कुंभ में	कुंभ	21.18 बजे से
केतु	सिंह में	मीन	22.51 बजे से
राहुकाल		मेष	00.21 बजे से
10.30 से		वृष	02.01 बजे से
12.00 बजे तक		मिथुन	04.00 बजे से

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
चर	05.55 से 07.23 बजे तक	रोग	05.38 से 07.1 बजे तक
लाभ	07.23 से 08.51 बजे तक	काल	07.11 से 08.43 बजे तक
अमृत	08.51 से 10.19 बजे तक	लाभ	08.43 से 10.15 बजे तक
काल	10.19 से 11.47 बजे तक	उद्वेग	10.15 से 11.47 बजे तक
शुभ	11.47 से 01.15 बजे तक	शुभ	11.47 से 01.19 बजे तक
रोग	01.15 से 02.43 बजे तक	अमृत	01.19 से 02.51 बजे तक
उद्वेग	02.43 से 04.10 बजे तक	चर	02.51 से 04.23 बजे तक
चर	04.10 से 05.38 बजे तक	रोग	04.23 से 05.55 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। Jagrutidaur.com, Bangalore

एक नजर

बैंड की धुन पर नवांगतुक छात्राओं का किया गया स्वागत

विष्णुगढ़ : कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय विष्णुगढ़ के शैक्षणिक सत्र 2025-26 में नामांकित छात्राओं जोरदार स्वागत के साथ विद्यालय प्रवेश करवाया गया। वार्डन ज्योति वर्मा ने बताया कि इस अवसर पर कक्षा 6, 7 व 9 के करीब 50 नवांगतुक छात्राओं को बैंड की धून पर विद्यालय प्रवेश करवाया गया। वार्डन ज्योति वर्मा सहित शिक्षक शिक्षिकाओं ने छात्राओं को गुलाल लगाया और बेहतर भविष्य की कामना किया। इस अवसर पर नवांगतुक छात्राएं के अभिभावक भी मौजूद थे। वार्डन ने बताया कि नवांगतुक छात्राओं के आने का सिलसिला देर संध्या तक जारी रहा। विद्यालय प्रवेश के बाद नवांगतुक छात्राओं व उनके अभिभावकों संग बैठक किया गया। जिसमे विद्यालय को नियमावली की जानकारी दी गई। इस दौरान छात्राओं को विद्यालय में पठन पाठन की सुविधा, समस्या के समाधान, छात्रावास के नियम सहित अभिभावकों को छात्राओं की छुट्टी आदि संबंधित जानकारियां दी गई। यह भी बताया गया कि किसी भी प्रकार की परेशानी हो तो वार्डन को तत्काल सूचना दें। स्वागत कार्यक्रम के दौरान सहायक शिक्षिका लीलावती कुमारी, प्रमिला टोप्पो आदि सहित कई शिक्षक शिक्षिका व शिक्षकेत्तर कर्मी मौजूद थे।

सांसद तीर्थ दर्शन के तहत घर लौटे श्रद्धालुओं का किया गया स्वागत

हजारीबाग : सांसद तीर्थ दर्शन योजना के तीर्थयात्रियों का पहला जत्था आध्यात्मिक और सांस्कृतिक नगरी प्रयागराज के त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगाने के पश्चात माँ विंध्यवासिनी धाम में माँ के भव्य मंदिर में दर्शन-पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त किया साथ ही प्रभु श्री राम के अयोध्या नगरी का भी दर्शन किए। पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ सम्पन्न इस दिव्य यात्रा के उपरांत तीर्थयात्री सकुशल नृसिंह स्थान मंदिर पहुंचे ग्रामीणों बताया कि सभी श्रद्धालुओं का ढोल-बाजे के साथ स्वागत एवं अभिवादन कर पूरे गांव का भ्रमण किया गया। सकुशल घर लौटे श्रद्धालुओं ने सांसद मनीष जायसवाल के प्रति आभार जताया और नृसिंह स्थान के पावन धरती से उन्हें तीर्थ यात्रा कराने के लिए धन्यवाद दिया। यात्रियों ने बताया कि यह यात्रा न केवल आध्यात्मिक रूप से समृद्ध रही बल्कि हम सभी के लिए अविष्करणीय और अनुभवों से भरी थी। तीर्थ यात्रियों के लौटने पर नृसिंह स्थान सहित उनके गांवों में उत्साह का माहौल दिखा और ग्रामीणों ने मिलकर अपने बुजुर्गों और पड़ोसियों का आत्मीयता के साथ स्वागत किया।

गिरिडीह से चार साइबर अपराधी गिरफ्तार

गिरिडीह : गिरिडीह पुलिस ने साइबर अपराध के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए चार साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अपराधियों की पहचान दीपू कुमार मंडल उर्फ दीपक कुमार मंडल, छोटी मंडल उर्फ छोटे लाल मंडल, श्रवण राय और मोहित कुमार मंडल बताई गई है। साइबर डीएसपी आबिद खान ने बरवाडीह साइबर थाना में प्रेस वार्ता में बताया कि इन चार अपराधियों में से दो अपराधी अहिल्यापुर थाना क्षेत्र के बुधुडीह से और बाकी दो को गिरिडीह बस स्टैंड से गिरफ्तार किया गया हैं। गिरफ्तार अपराधियों पर पहले से कई आपराधिक मामले दर्ज पाये गये है। छोटे लाल मंडल के खिलाफ तेलंगाना के हैदराबाद में 65 मामले दर्ज हैं। दीपक मंडल के खिलाफ अहिल्यापुर थाना में मामला दर्ज है। साथ ही एनसीसीआरपी में भी शिकायत दर्ज है। वहीं, श्रवण राय के खिलाफ साइबर थाना में मामला दर्ज है। पूछताछ मे चारो अपराधियों ने कबूला की साइबर अपराध के जरिए लोगों को ठगने का काम करते हैं।

सोशल मीडिया पर बिना पुष्टि किसी भी संबंधित वीडियो एवं फोटो को शेयर ना करें : उपायुक्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : आगामी मुहर्रम पर्व के शांतिपूर्ण आयोजन के मद्देनजर गुरुवार को उपायुक्त, रामगढ़ फैज अक अहमद मुमताज एवं पुलिस अधीक्षक अजय कुमार की उपस्थिति में समाहरणालय सभाकक्ष में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक के दौरान उपायुक्त, रामगढ़ फैज अक अहमद मुमताज एवं पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने सभी को आगामी मुहर्रम पर्व की शुभकामनाएं देते हुए शांतिपूर्ण तरीके से पर्व के आयोजन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने की अपील की। मौके पर उपायुक्त ने सभी लाइसेंस धारी अखाड़ों को निर्धारित रूट से ही जुलूस आयोजित करने एवं किसी भी परिस्थिति में रूट ना बदलने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि पर्व के दौरान अगर किसी भी प्रकार की कोई अफवाह सामने आती है तो इसकी जानकारी त्वरित रूप से नजदीकी थाना अथवा जिला प्रशासन को दी जाए ताकि ससमय उसपर कार्रवाई की जा सके वही उन्होंने पर्व के दौरान किसी भी तरह से सांप्रदायिक सौहार्द बिगड़ने संबंधित कोई भी गतिविधि ना होने देना तथा किसी भी प्रकार की अखबार सामने आने पर तुरंत इसकी जानकारी जिला कंट्रोल रूम अथवा नजदीकी प्रशासन को देने की अपील की। मौके पर उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक ने शांति समिति के सभी सदस्यों को जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक के दौरान जो भी जानकारी उन्हें दी जा रही हैं उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में सभी अखाड़ों व अन्य लोगों तक पहुंचाने की अपील की। साथ ही उपायुक्त ने जुलूस के दौरान समय व सुरक्षा का विशेष ध्यान रखने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक के द्वारा सभी प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों को उनके उनके क्षेत्रों में अलर्ट मोड पर रहने, संवेदनशील क्षेत्रों में नियमित गश्ती करने एवं हर गतिविधि पर पैनी नजर रखने का निर्देश दिया। इस दौरान उन्होंने सोशल मीडिया पर विशेष ध्यान रखते हुए किसी भी प्रकार की अफवाह सामने आने पर त्वरित कार्रवाई करने व किसी भी प्रकार से सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने सभी अखाड़ा धारियों को अपने-अपने क्षेत्र के वैसे शरारती तत्व जो पर्व के दौरान सौहार्द पूर्ण वातावरण को बाधित करने का प्रयास करते हैं उन्हें चिन्हित कर सूचित करने का निर्देश दिया गया।

बारिश में ढह गई पारगामा पंचायत भवन की छत, जनसेवाएं हुई बाधित

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुकड़ू : कुकड़ू प्रखंड क्षेत्र के पारगामा पंचायत भवन की जर्जर स्थिति आखिरकार सामने आ ही गई, जब गुरुवार दोपहर तेज बारिश के बाद अचानक उसकी छत भरभरा कर गिर गई। घटना के समय भवन में पंचायत कर्मी और कुछ ग्रामीण मौजूद थे, लेकिन समय रहते सभी बाहर निकल गए, जिससे एक बड़ी दुर्घटना टल गई। घटना के बाद पंचायत सचिव, मुखिया और रोजगार सेवक सहित अन्य कर्मियों के लिए बैठने और कार्य करने की कोई सुरक्षित व्यवस्था नहीं बची है। भवन की दीवारों और कमरों में सरिया बाहर आ चुके हैं और गहरी दरारें स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हैं। इससे पंचायत कार्यालय में होने वाली सभी तरह की जनसेवाएं पूरी तरह प्रभावित हो गई हैं। गौरतलब है कि पारगामा पंचायत भवन से प्रतिदिन सैकड़ों ग्रामीण जाति, निवास, आय प्रमाण पत्र, वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन, मनरेगा, पीएम आवास योजना सहित कई विकास योजनाओं से जुड़ी सेवाएं प्राप्त करते हैं। भवन क्षतिग्रस्त होने से अब ग्रामीणों को आवश्यक सेवाओं के लिए इधर-उधर भटकना पड़ सकता है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि इस स्थिति को गंभीरता से लेते हुए जल्द से जल्द नया पंचायत भवन स्वीकृत किया जाए और निर्माण कार्य प्रारंभ कराया जाए। उनका कहना है कि यदि शीघ्र समाधान नहीं हुआ, तो पंचायत स्तरीय कार्यों की गति और भी धीमी हो जाएगी, जिससे आम जनता की परेशानी बढ़ेगी। ग्रामीणों ने यह भी कहा कि पहले से ही बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीवन जी रहे लोगों को अब पंचायत कार्यालय न होने से और मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा।

जल जमाव वाले इलाको का सांसद प्रतिनिधि ने लिया जायजा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के वार्ड संख्या-6 अंतर्गत गौशाला गेट के दर्जनों ग्रामीणों ने क्षेत्र में उत्पन्न गंभीर जलजमाव की समस्या को लेकर भाजपा नेता एवं सांसद प्रतिनिधि (मीडिया) धनंजय कुमार 'पुटूस' को एक लिखित आवेदन सौंपा। ग्रामीणों ने बताया कि हल्की बारिश में भी सड़कें एवं घरों के आसपास पानी भर जाता है, जिससे न केवल दैनिक जीवन प्रभावित हो रहा है, बल्कि बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। इस समस्या से बच्चों, बुजुर्गों एवं महिलाओं को विशेष परेशानी हो रही है। धनंजय कुमार पुटूस ने जनता दरबार में आवेदन प्राप्त करते ही गंभीरता से इस विषय पर संज्ञान लिया और मौके पर जाकर स्वयं स्थिति का मुआयना किया। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि जल्द ही संबंधित विभागीय पदाधिकारियों से बात कर उचित कार्रवाई करवाई जाएगी। धनंजय कुमार पुटूस ने आगे कहा कि जनसमस्याओं के समाधान के लिए मैं हमेशा तत्पर हूँ। किसी भी आम नागरिक को तकलीफ हो, यह स्वीकार्य नहीं है। हर वार्ड, हर मोहल्ला, हर गाँव को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना ही मेरा लक्ष्य है। उमेश कुमार,अनीता देवी, सुमित्रा कुमारी, मनबोधन भगत, सुनील कुमार, राकेश राम सहित काफी लोग उपस्थित थे ।

पिकअप वैन और बाइक में भिड़ंत बाइक सवार की दर्दनाक मौत

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ जिले के मांडू प्रखंड अंतर्गत आरा कांटा पंचायत सचिवालय के समीप एक पिकअप वैन और बाइक में आमने-सामने से भिड़ंत हो गई जिसे बाइक सवार की घटना स्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई कबाइक सवार का नाम गेन्दलाल यादो ग्राम दनिया बस्ती का रहने वाला था। गेन्दलाल यादव बंस्करील ले कर कुजू बाजार बेचने जा रहा थे। उसी दरमियान आरा कांटा पंचायत सचिवालय से कुछ ही दूर के आगे कुजू की और से आ रही एक पिकअप वैन से आमने-सामने मे भिड़ंत हो गई जिसे गेन्दलाल यादव मौके पर ही दम तोड़ दिये। वहीं कॉलेज से पढ़ाई कर लौट रहा गेन्दलाल यादव का पुत्र अशोक यादव अपने पिता को सडक मे मित्र्य देख फूट फूट कर रोने लगा मौके पर कुजू पुलिस घटनास्थल पहुंचकर गेन्दलाल यादव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है।

मुआवजे की मांग को लेकर शव को फैक्ट्री के गेट में रखकर ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : रामगढ़ जिला के बुढ़ाखाप स्थित आलोक स्टील प्राइवेट लिमिटेड में कार्यरत एक महिला आशा देवी की ड्यूटी के दौरान 2 दिन पूर्व अचानक तबियत बिगड़ गई। जिसे आनन फानन में सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया। उसकी नाजुक स्थिति को देख निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां कल शाम उनकी मौत हो गई। महिला आशों देवी की मौत के बाद मृतका के परिजन ग्रामीण और जे एल के एम के सदस्यों ने महिला की लाश को फैक्ट्री के गेट के समक्ष रखकर मृतिका के परिजन को मुआवजा और नौकरी की मांग कर रहे है । ग्रामीणों ने फैक्ट्री प्रबंधन पर आरोप लगाया कि फैक्ट्री बिल्कुल ही प्रदूषण युक्त है । वहां के मजदूरों को बिना सेफ्टी के ही काम कराया जाता है इस वजह से बीमारी हो रही है और महिला आशो देवी का प्रदूषण के शिकार होने की वजह से तबीयत बिगड़ी और मृत्यु हो गई। ग्रामीणों ने फैक्ट्री प्रबंधन पर आरोप लगाए की फैक्ट्री प्रबंधन सुरक्षा नियमों का कोई पालन नहीं करते हैं । मजदूरों का शोषण किया जाता है गवर्नमेंट का मिनिमम पे वेजेज जो 541रुपया होता है उन्हें 541रु न देकर 310 रु मजदूरी दिया जाता है। उनको ना तो काट दिया जाता है ना ही पीएफ का प्रावधान रखा है । ग्रामीणों के द्वारा मृतक महिला की परिजनों को 30 लाख रुपया मुआवजा नौकरी और पेंशन की मांग की गई। लगभग 16 घंटा बीत जाने के बाद भी फैक्ट्री प्रबंधन की ओर से कोई सकारात्मक पहल नहीं की गई। स्थिति को देखते हुए प्रशासन की ओर मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया और विधि व्यवस्था के लिए पुलिस प्रशासन भेजा गया। ग्रामीणों ने कहा कि जब तक की सकारात्मक वार्ता नहीं होती है हम लोग आंदोलन मे डटे रहेंगे। इस घटना के बाद जेकेएलएम पार्टी के दर्जनों सदस्य मुआवजे की मांग को लेकर ग्रामीणों के साथ आंदोलन पर बैठे है।

रोटरी ने दी रांची एयरपोर्ट को दो ऑटोमैटेड डिफिब्रिलेटर मशीन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : कार्डियेक अरेस्ट के बढ़ते मामलों को देखते हुए रोटरी क्लब ऑफ रांची ने इस दिशा में विशेष पहल की है। रोटरी क्लब ने रांची एयरपोर्ट को पर दो पोर्टेबल मशीनें ऑटोमैटेड डिफिब्रिलेटर उपलब्ध कराई है, जो कार्डियक अरेस्ट के समय व्यक्ति को लाइफ सपोर्ट देगी। एक मशीन ग्राउंड फ्लोर और दूसरी फर्स्ट फ्लोर पर रहेगी। दोनों ट्रॉली में इंस्टाल है, ताकि तुरंत उसे कहीं भी पहुंचाया जा सके। साथ ही एयरपोर्ट को अत्याधुनिक ईसीजी मशीन भी दी गई। इस अवसर पर एयरपोर्ट डायरेक्टर राघवेंद्र मौर्या ने कहा किसी भी आकस्मिक आवश्यकता में ये मशीन कारगार होगी। मुझे खुशी है कि रोटरी ने ये पहल की है। इससे कई बेशकीमती जान बचेगी। डिस्ट्रिक्ट गवर्नर बिपिन चाचन ने कहा भविष्य में भी हम पैसेंजर की सुविधा के लिए एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन जी भीड़ भाड़ वाले इलाके में इस प्रकार के कार्य करते रहेंगे। प्रोजेक्ट चेयरमैन डॉ विनय ढानढनिया ने कहा कार्डियक अटैक आने पर इस मशीन के माध्यम से तुरन्त इंसान में रिदम स्टार्ट कर सकते हैं। कार्डियक अरेस्ट तब होता है जब अचानक दिल की धड़कनें रुक जाती हैं। ऐसे में हमारा दिल शरीर को खून पंप करना बंद कर देता है। इस कारण कुछ ही मिनटों में व्यक्ति बेहोश होकर सांस लेना बंद कर सकता है। इस कंडीशन में मरीज को तुरंत सीपीआर या डिफिब्रिलेटर से झटका न दिया जाए, तो उसकी मौत हो सकती है। एयरपोर्ट के डॉक्टर डॉ शोभा एवं डॉ आशीष मिश्रा ने कहा कि कार्डियक अरेस्ट मौत का सबसे बड़ा कारण बनकर उभर रहा है। ज्यादातर लोगों की जान सिर्फ इसलिए चली जाती है कि उन्हें समय पर सीपीआर नहीं मिल पाता है। ऐसी परिस्थिति में यह मशीन लोगों की जान बचाएगी। क्लब के प्रवक्ता प्रवीण राजगढ़िया ने बताया कि बहुत जल्द इस प्रकार की मशीन रांची रेलवे स्टेशन पर भी लगाई जाएगी। इस अवसर पर जीएम धनंजय तिवारी, जॉइंट जीएम अनिल कुमार कश्यप, डीजीएम एटीएम मनोज कुमार, ओएसडी अविनाश शुक्ला, मैनेजर सुहावन लकड़ा, असिस्टेन्ट मैनेजर राकेश यादव, स्टेशन मैनेजर कृष्णा यादव, प्रवीण राजगढ़िया, डिम्पी चड्ढा, शाहिद पॉल, पवन जयसवाल उपस्थित थे।

क्या है कार्डियक अरेस्ट

साधरण शब्दों समझें तो कार्डियक अरेस्ट तब होता है जब दिल का इलेक्ट्रिक सिस्टम फेल हो जाता है। दिल अचानक धड़कना बंद कर देता है। इससे शरीर में खून और ऑक्सीजन का प्रवाह रुक जाता है। व्यक्ति कुछ ही मिनटों में बेहोश हो जाता है। उसकी मौत हो सकती है।ऐसे व्यक्ति को सीपीआर मिलने में हर एक मिनट की देरी मौत के खतरे को 10 प्रतिशत तक बढ़ाती जाती है। जबकि पांच मिनट के अंदर यदि उसे सीपीआर मिल जाये तो उसके बचने की संभावना काफी बढ़ जाती है। इस स्थिति में एईडी (ऑटोमैटेड डिफिब्रिलेटर) मशीन मौजूद हो, तो उसका तुरंत उपयोग करना चाहिए।

संक्षिप्त खबरें

भुरकुंडा में श्रावणी मेला आयोजन को लेकर संयुक्त मोर्चा की रणनीतिक बैठक संपन्न

भुरकुंडा : संयुक्त मोर्चा की बैठक गुरुवार को भुरकुंडा के रेलवे लाइन स्थित मोर्चा कार्यालय में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता देवरिया बस्ती के पूर्व मुखिया राजेंद्र मुंडा और संचालन कुरसे पंचायत के पूर्व मुखिया रामदास बेदिया ने किया। बैठक में भुरकुंडा कोलियरी अंतर्गत आने वाले चारों राजस्व ग्राम देवरिया, कुरसे, बलकुदरा और दुंदुवा — के विस्थापित रैयत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भुरकुंडा थाना मैदान में लगने वाले श्रावणी मेला और आयोजन से जुड़े पीओ को सौंपे गए मांग पत्र पर चर्चा की गई। बैठक में सभी वक्ताओं ने एकमत होकर कहा कि श्रावणी मेला का संचालन केवल चारों राजस्व ग्राम के विस्थापित रैयतों द्वारा ही किया जाएगा। इसके सफल आयोजन के लिए एक प्रतिनिधिमंडल अनुमंडल पदाधिकारी रामगढ़, अंचल अधिकारी पतरातू, महाप्रबंधक बरका-सयाल क्षेत्र, परियोजना पदाधिकारी भुरकुंडा तथा थाना प्रभारी से मिलकर अपनी मांगों को रखेगा। मोर्चा के प्रतिनिधियों ने यह भी चेतावनी दी कि यदि मांगों पर उचित पहल नहीं की गई, तो विरोध प्रदर्शन किया जाएगा। बैठक में मुख्य रूप से पूर्व पार्षद झरी मुंडा, राणा प्रताप सिंह, अजय साहू, कैलाश प्रसाद, जयवीर मुंडा, राजाराम प्रसाद, फुलेश्वर राम, संतोष मांझी, रोहित मुंडा, विजय मुंडा, अमित साहू, राकेश मुंडा, नरेंद्र बेदिया, राज कपूर सिंह, सुरेंद्र तुरी, बिहारी मांझी, संजय यादव, जसराज महतो, सुनील बेदिया, राजेश महतो, संजय मांझी, अभिजीत सोरेन, छोटू बेदिया सहित कई लोग उपस्थित थे।

ईचाडीह पंचायत में घटिया सड़क निर्माण पर ग्रामीणों ने उठाए सवाल

कुकड़ू: प्रखंड अंतर्गत ईचाडीह पंचायत के ग्रामीणों ने कारकीडीह पुल से बाकारकुड़ी फाटक तक चल रहे सड़क निर्माण कार्य की गुणवत्ता पर गंभीर सवाल उठाए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि निर्माण कार्य में मानकों की अनदेखी की जा रही है और प्रयुक्त सामग्री अत्यंत घटिया है, जिससे भविष्य में सड़क के क्षतिग्रस्त होने और दुर्घटनाओं की आशंका है। इस संबंध में ईचाडीह पंचायत के मुखिया चित्तारंजन सिंह मुंडा, वार्ड सदस्य सानू कुमार एवं अन्य ग्रामीणों ने उपायुक्त सरायकेला-खरसावां और प्रखंड विकास पदाधिकारी को संयुक्त रूप से हस्ताक्षरयुक्त शिकायत पत्र सौंपा है। ग्रामीणों ने मांग की है कि निर्माण कार्य की निष्पक्ष जांच कर दोषी एजेंसी पर सख्त कार्रवाई की जाए। शिकायत में यह भी उल्लेख है कि खोखरो-कारकीडीह पुल पर बन रहे गार्ड वॉल में भी मानकों की अनदेखी की जा रही है। ग्रामीणों का कहना है कि निर्माण में कमजोर पत्थर, सीमेंट और बालू का प्रयोग हो रहा है, जिससे यह कभी भी ढह सकता है और जान-माल की हानि हो सकती है। पूर्व मुखिया प्रतिनिधि गोराचांद सिंह मुंडा ने कहा कि यह सड़क एनएच-33 से जोड़ने वाली प्रमुख लिंक रोड है, जो चांडिल, जमशेदपुर और जिला मुख्यालय जैसे शहरी क्षेत्रों तक पहुंचने का महत्वपूर्ण मार्ग है। यदि समय रहते गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया गया, तो यह सड़क जल्दी ही जर्जर हो जाएगी और ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ेगा। ग्रामीणों ने प्रशासन से त्वरित कार्रवाई कर सड़क की गुणवत्ता सुनिश्चित करने की अपील की है।

भारतीय जनता पाटी पर राज्य में अशांति फैलाने का बैधनाथ टुडू ने लगाया आरोप

ईचागढ़ : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के सरायकेला-खरसावां जिला सचिव बैधनाथ टुडू ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर राज्य में अशांति फैलाने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि विगत 30 जून 2025 को हूल दिवस के अवसर पर भोगनाडीह में भाजपा द्वारा संथाल परगना को अस्थिर करने की एक सुनियोजित साजिश रची गई थी। बैधनाथ टुडू ने इसे झारखंड के शहीदों का अपमान और आदिवासी-मूलवासी समाज की आत्मा को ठेस पहुंचाने वाला कृत्य बताया। उन्होंने कहा कि इस पवित्र दिन पर ऐसी घटना को अंजाम देना राज्य सरकार को बदनाम करने और सामाजिक सौहार्द को तोड़ने का प्रयास है। झामुमो नेता ने कहा कि पुलिस जांच में कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं और पार्टी को कानून व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास है कि जल्द ही पूरे मामले का पदार्फाश होगा और दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।उन्होंने आगे कहा कि भाजपा के एक नेता या कार्यकर्ता का राजकीय कार्यक्रम में अवैध हथियार के साथ मौजूद रहना यह दशार्ता है कि पार्टी सत्ता हासिल करने के लिए किसी भी स्तर तक जा सकती है। उन्होंने कहा कि यह भाजपा की मानसिकता को उजागर करता है, जिसमें अराजकता और सामाजिक अस्थिरता के जरिए राजनीति करना शामिल है। झामुमो ने इस घटना की कड़ी निंदा करते हुए कहा है कि राज्य में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए ऐसे तत्वों पर कठोर कार्रवाई आवश्यक है।

लगातार बारिश में कशियागोंडा में गिरा मिट्टी का घर

पटमदा : मौसम विभाग के पूवार्नुमान के अनुसार विगत कई दिनों से हो रही बारिश में जहां कई गांव जलमग्न हो गए। वही पटमदा प्रखंड के खेडुआ पंचायत के कशियागोंडा के विजय महतो की पत्नी झुनपुकी महतो ने बताया कि गुरुवार को हमारे मिट्टी का पुराना घर अचानक लगातार कई दिनों की से प्रभावित होकर अचानक गिर गया। जिससे घर काफी क्षतिग्रस्त हो गया है। बता दें कि सरकार के द्वारा भारी बारिश के कारण क्षति होने वालो के लिए आपदा प्रबंधन विभाग से विभागीय अधिकारी के स्थल निरीक्षण के बाद क्षति पूर्ति देने की बात कही गई है। जिला के उपायुक्त ने भी सभी प्रखंड में संबंधित अधिकारी को आपदा से प्रभावित क्षति का अकड़ा जिला में भेजने का आदेश दिया है।

एक नजर

दो अलग-अलग मारपीट में तीन लोग हुए घायल

साहिबगंज/उधवा: राधानगर थाना क्षेत्र के राधानगर गांव में बीते बुधवार की रात आपसी विवाद में हुई मारपीट में दो लोग घायल हो गए। मिली जानकारी के अनुसार सुदाम चौधरी 39 वर्षीय व जयंती देवी 28 वर्षीया का पड़ोसी के साथ किसी बात को लेकर वाद विवाद होते-होते बात मारपीट तक पहुंच गया, जिसमें दोनों घायल हो गया। वही राधानगर थाना क्षेत्र के बेगमगंज गांव निवासी बेलाल शेख 45 वर्षीय का भी पड़ोसी के साथ आपसी विवाद में हुई मारपीट में घायल हो गया। सभी को अपने-अपने परिजनों की मदद से इलाज के लिए अनुमंडल अस्पताल राजमहल लाया गया। जहां ड्यूटी पर तैनात चिकित्सकों के द्वारा तीनों घायलों का इलाज किया गया। वहीं ड्यूटी में मौजूद डॉक्टर कलीमुद्दीन ने बताया कि दोनों घटना की सूचना संबंधित थाना पुलिस को दे दी गई थी।

सांप काटने से एक युवक हुआ मूर्छित

साहिबगंज : शहर के केलाबाड़ी पोखरिया निवासी युवक को सांप काटने से मूर्छित हो गया। मूर्छित युवक को इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। मिली जानकारी के अनुसार केलाबाड़ी पोखरिया निवासी 30 वर्षीय सन्नी पासवान किसी काम को लेकर खेत गया था, उसी दौरान किसी सांप ने काट लिया जिससे वह मूर्छित हो गया। बरहाल मूर्छित युवक का इलाज सदर अस्पताल में डॉक्टर के देखरेख में चल रहा है।

कंपनी में चोरी करते धराया पूर्व चौकीदार, गया जेल

पूर्वी सिंहभूम: सुंदरनगर थाना क्षेत्र स्थित भोगल इंजीनियरिंग कंपनी में चोरी करते हुए कंपनी के पूर्व चौकीदार को रंगेहाथ पकड़ लिया गया। आरोपी की पहचान नाथु तियू के रूप में हुई है, जिसे कंपनी मालिक लखबीर सिंह भोगल ने खुद पकड़कर पुलिस के हवाले किया। पुलिस ने उसके खिलाफ मामला दर्ज कर गुरुवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। बताया गया कि नाथु तियू कंपनी में चौकीदार के पद पर कार्यरत था, लेकिन 25 अप्रैल को उसे काम से हटा दिया गया था। कंपनी वर्ष 2022 से ही बंद है। इसके बावजूद बीते दो जून को दिन के तीन बजे कंपनी मालिक ने देखा कि नाथु तियू कंपनी के अंदर से सामान चुरा कर अपनी स्कूटी में लादने की कोशिश कर रहा था। मालिक ने उसे दौड़ाकर पकड़ा और तुरंत सुंदरनगर थाना को सूचना दी। कंपनी मालिक लखबीर सिंह भोगल का कहना है कि जब नाथु तियू काम पर था, तब भी कंपनी में चोरी की घटनाएं होती थीं। पूछने पर वह हमेशा अनभिज्ञता जताता था। आशंका है कि नाथु किसी गिरोह के लिए काम करता है।

लोअर साइड रैक लोडिंग यार्ड में पत्थर लोड मालगाड़ी अनियंत्रित होकर हुआ दुर्घटनाग्रस्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज/बरहरवा : पतना रांगा थाना के बरहरवा लोअर साइड रैक लोडिंग प्वाइंट झिकटिया के पास मालगाड़ी पलटने की बड़ी दुर्घटना गुरुवार को हुई है। घटना करीब सुबह 8:00 बजे हुई है। घटना के समय जोरदार आवाज हुई। इधर आवाज को सुनकर झिकटिया, बरमसिया, मूसहर टोला, बांझी केंद्र व बरहरवा के लोगों की भीड़ देखने के लिए सैकड़ो की संख्या में जुट गई। घटना में रेल पटरी, बॉक्स वैगन, के चक्के, वैगन, मास्ट बिजली खंभे पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया है। इधर 10 से अधिक बकरी दब कर मारे जाने की भी सूचना मिला है। रेल पटरी प्वाइंट पर ही मालगाड़ी का वैगन पलटी है। रेल पटरी में प्वाइंट नहीं रहने पर

मालगाड़ी का वैगन स्टेशन पहुंच जाता व बड़ी घटना घटने से इनकार नहीं किया जा सकता था। ऐसी घटना पूर्व में भी दो बार हो चुका है। हालांकि घटना कैसे हुई यह जांच का विषय है। घटना में रेलवे को करीब करोड़ों रुपए का नुकसान हुआ है। मालगाड़ी की दुर्घटना में झिकटिया रैक लोडिंग लोअर प्लांट के पास करीब पांच मुसहर का घर बाल बाल बच गया है। पांचों परिवार के सभी लोगों ने वैगन पलटने की आवाज सुनकर कांप उठे। जिसमें धर्मेंद्र मुसहर, फुलसरिया मुसहर, बलराम मुसहर, रिशु मुसहर, लखन मुसहर, का घर में लोड वैगन घुसने से बच गए और बड़ी घटना होने से टल गया। एक गार्ड बोगी व 20 वैगन पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। मालगाड़ी दुर्घटना में रैक लोडिंग लोवर साइड झिकटिया के पास रेल पटरी प्वाइंट के पास 14 वैगन व थोड़ा आगे मुसहर टोला के पास 6 वैगन व एक गार्ड बोगी पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुआ है। सूत्रों के अनुसार हिल साइडिंग पर मालगाड़ी का 53 वैगन लोड हो रहा था। लोड लगभग पूरी हो चुकी थी। इसी क्रम में किसी तरह वैगन हिल जाने से लोअर साइड की ओर तेजी से मालगाड़ी लुढ़क गया। झिकटिया पहुंचे मालगाड़ी इंजन के साथ चलने जैसा ही रफ्तार पकड़ लिया था। वही रेल पटरी पर लगे प्वाइंट पहुंचते ही पलटने शुरू हुआ व 6 वैगन मुसहर टोला तक पहुंच गया। घटना की सूचना मिलते ही रेलवे के अधिकारी तुरंत मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया व राहत कार्य शुरू किया। इस घटना ने रेलवे के सुरक्षा मानकों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्थानीय निवासियों ने रेलवे प्रशासन से मामले की उच्च स्तरीय जांच की मांग की है। उनका कहना है कि अगर इसी तरह लापरवाही जारी रही तो भविष्य में कोई बड़ा हादसा हो सकता है। अभी तक रेलवे की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। हालांकि सूत्रों के मुताबिक प्रारंभिक जान शुरू कर दी गई है।

श्रम विभाग के द्वारा चलाया गया बाल श्रम विमुक्ति सह जागरुकता अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़/महेशपुर : ज़िले के महेशपुर प्रखंड अंतर्गत गुरुवार को श्रम प्रवर्त्तन पदाधिकारी, पाकुड़ गिरीश चंद्र प्रसाद के द्वारा महेशपुर बाजार के विभिन्न प्रतिष्ठानों, होटल एवं गैरेज आदि में बाल श्रम विमुक्ति एवं जागरुकता अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान सभी प्रतिष्ठानों में धारा-12 क के तहत सूचना प्रदर्शित कराई गई। श्रम प्रवर्त्तन पदाधिकारी ने बताया कि किसी भी प्रतिष्ठान में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं खतरनाक नियोजन में 14-18 वर्ष तक के बच्चों का नियोजन प्रतिषेध है। उल्लंघन की स्थिति में नियोजक पर बीस हजार रुपये से पचास हजार रुपये तक का जुर्माना अथवा 06 माह से 02 वर्ष तक का कारावास या दोनो हो सकता है। जिले में बाल श्रम को रोकने के लिए निरन्तर कारवाई जारी रहेगी। इस अभियान में कैलाश सत्यार्थी फाउन्डेशन के सदस्य, चाइल्ड लाइन एवं श्रम विभाग के कर्मी शामिल थे।

धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के द्वारा दिव्यांगजन को मिला सहारा

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : ज़िले में धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तत्वावधान में प्रोजेक्ट समावेश के अंतर्गत एडिप एवं राष्ट्रीय वयोश्री योजना कार्यक्रम के तहत कृत्रिम अंग का वितरण कार्यक्रम का आयोजन समाहरणालय परिसर में किया गया। उपायुक्त मनीष कुमार व पुलिस अधीक्षक निधि द्विवेदी, विशेष कार्य पदाधिकारी त्रिभुवन कुमार सिंह, सांसद प्रतिनिधि श्याम यादव, जेएमएम जिला अध्यक्ष अजीजूल इस्लाम, उपाध्यक्ष समद अली, विधायक प्रतिनिधि के द्वारा चार दिव्यांगजन के बीच एक इलेक्ट्रॉनिक ट्राय साइकिल और तीन व्हील चेयर का वितरण किया गया। एलिम्को द्वारा आयोजित निःशुल्क

सहायक उपकरण वितरण शिविर में उपायुक्त ने कहा कि दिव्यांगजनों का जीवन सरल बनाने के लिए सरकार प्राथमिकता के आधार पर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सहायक उपकरण न होने की वजह से दिव्यांगजनों का जीवन कठिन हो जाता है, लेकिन कृत्रिम उपकरणों के माध्यम से उनके जीवन को सरल बनाया जा सकता है।

मॉडल कॉलेज राजमहल में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : मॉडल कॉलेज, राजमहल, साहिबगंज में अंतरराष्ट्रीय प्लास्टिक बैग मुक्त दिवस के अवसर पर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य डॉ. रणजीत कुमार सिंह ने की। इस अवसर पर विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा कर्मचारियों की उपस्थिति में प्लास्टिक प्रदूषण की गंभीरता और इसके दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्लास्टिक विशेषकर सिंगल यूज प्लास्टिक पर्यावरण के लिए एक गंभीर संकट बन चुका है। उन्होंने बताया कि प्लास्टिक न केवल भूमि को प्रदूषित

करता है, बल्कि जल स्रोतों को भी विषाक्त करता है। प्लास्टिक पदार्थों को नष्ट होने में सैकड़ों वर्ष लगते हैं, जिसके कारण यह मृदा की उर्वरता, पानी की गुणवत्ता तथा जैव विविधता को बुरी तरह प्रभावित करता है। सिंगल यूज प्लास्टिक को ना कहें पृथ्वी के स्वस्थ व हरियाली के लिए पेड़ पौधे लगाए। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील की वे प्लास्टिक बैग और पॉलिथीन की जगह कपड़े या जूट से बने थैले का उपयोग करें। साथ ही, दैनिक जीवन में प्लास्टिक से बनी वस्तुओं का बहिष्कार कर एक जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाएं। कार्यक्रम में उपस्थित परीक्षा पर्वेक्षक भैया बेसरा ने भी प्लास्टिक से होने वाले पर्यावरणीय खतरों पर गहन चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्लास्टिक कचरे से न केवल पर्यावरण प्रदूषित होता है, बल्कि यह स्वास्थ्य पर भी गंभीर असर डालता है। उन्होंने सिंगल यूज प्लास्टिक पर कानूनी प्रतिबंध और इसके सख्त क्रियान्वयन की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम में शाहिद ब्रिगेडियर मो. उस्मान और परमवीर चक्र कैप्टन मनोज कुमार पांडेय को भी याद किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के डॉ. अमित कुमार, डॉ. विवेक महतो, कर्मचारी मोहन सिंह, सुमित साहा, प्रकाश महतो सहित सैकड़ों छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। सभी ने प्लास्टिक मुक्त समाज की दिशा में संकल्प लिया और कॉलेज परिसर में प्लास्टिक उपयोग न करने की शपथ ली।

पुलिस ने दुष्कर्म मामले में एक युवक को गिरफ्तार कर भेजा जेल

साहिबगंज : बोरियो थाना क्षेत्र अंतर्गत दुष्कर्म मामले में एक युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मिली जानकारी के अनुसार बोरियो थाना कांड संख्या 68/24, दिनांक 20 दिसंबर 2024 धारा 370/371/372/374 भादवि परिवर्तित धारा 370/371/376/34 भादवि एवं 04 पोक्सो एक्ट के अप्राथमिकी नामजद अभियुक्त राजू उर्फ निजाम अंसारी उम्र 23 वर्ष पिता रफीक अंसारी, साकिन तेलो मांझी टोला, को पुलिस ने विधिवत गिरफ्तार कर कागजी प्रक्रिया करने के उपरांत चिकित्सा जांच करवाने के बाद अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है।

दो दिवसीय बिक्री केंद्र कार्मिक प्रशिक्षण सह पोश मशीन कार्यक्रम का हुआ वितरण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला मुख्यालय स्थित संयुक्त कृषि भवन के आत्मा सभागार में दो दिवसीय बिक्री केंद्र कार्मिक प्रशिक्षण सह पोश मशीन का वितरण कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर जिला कृषि पदाधिकारी प्रमोद ऐक्का ने डेढ़ सौ उर्वरक विक्रेताओं को एल वन पौश मशीन वितरित किया। इस अवसर पर जिला कृषि पदाधिकारी ने कहा कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान देखा जाता है आजकल किसान अधिक सब्जी का उत्पादन के लिए ऑनलाइन गलत केमिकल खरीद कर खेतों में इस्तेमाल कर रहे हैं इससे सब्जी का उत्पादन को बढ़ रहा है लेकिन यह सब्जी शरीर के लिए काफी हानिकारक है। सब्जी उत्पादकों को ऐसे उत्पाद से बचना चाहिए। इस अवसर पर कृषि पदाधिकारी राम प्रकाश कुमार ने कहा कि विक्रेताओं को किसानों को अच्छे उत्पादन के की जानकारी देनी चाहिए जिससे किसानों की फसल भी बढे और किसी भी तरह का हानि नहीं हो कृषि पदाधिकारी अरुण भोक्ता ने कहा कि किसानों को मिट्टी जांच के बाद आवश्यकता अनुसार उर्वरक का इस्तेमाल करें। आत्मा उपनिदेशक मंटू ने भी अपनी बात रखी। इस अवसर पर इफको के क्षेत्रीय पदाधिकारी नवीन राय ने कहा कि पहले भारत सरकार उर्वरक पर 1.73 लाख करोड रुपए सब्सिडी देती थी आज यह बढ़ाकर ढाई लाख करोड रुपए हो गई। इस अवसर पर जिले भर के उर्वरक विक्रेता मौजूद थे।

कोटालपोखर में दूसरे दिन भी चला अतिक्रमण मुक्त अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज/कोटालपोखर : कोटालपोखर थाना क्षेत्र अंतर्गत कोटालपोखर शांति चौक से गन्नी चौक टेंपो स्टैंड तक अंचलाधिकारी सह दंडाधिकारी रामजी वर्मा के नेतृत्व में गुरुवार को दूसरे दिन सड़क चौड़ीकरण को लेकर अतिक्रमण मुक्त अभियान चलाया गया। इस दौरान जमीन अधिग्रहण के रैयतों को मुआवजा की राशि का भुगतान के बावजूद भी अब तक जमीन व मकान खाली नहीं करने के विरुद्ध में प्रशासन की ओर से अतिक्रमण मुक्त करने के लिए बुलडोजर चलाया गया। बता दे की भू अर्जन कार्यालय साहिबगंज के आदेश के आलोक में अंचलाधिकारी कार्यालय की ओर से मुआवजा प्राप्त करने वाले रैयतों को नोटिस भेज कर 15 दिनों के अंदर

जमीन व मकान खाली करने का निर्देश दिया गया था। नोटिस मिलने के बाद कुछ लोगों ने अपनी मकान को स्वयं से खाली कर दिया था। वही नोटिस मिलने के बावजूद भी जिन लोगों ने अब तक जमीन और मकान खाली नहीं किया गया उसके मकान व दुकान को बुलडोजर से जमीनदोज किया गया है। इधर इस संबंध में अंचलाधिकारी रामजी वर्मा ने बताया कि झारखंड लोक भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2000 के तहत रैयतों को नोटिस देकर भूमि अधिग्रहण जमीन व मकान खाली करने का पर्याप्त समय दिया गया था। समय अवधि के समाप्ति के पश्चात पुलिस दल बल के साथ बलपूर्वक अतिक्रमण को मुक्त कराया जा रहा है। यह अतिक्रमण मुक्त अभियान चार जुलाई तक चलेगा। इस मौके पर प्रभारी अंचल निरीक्षक उमेश मंडल, अमीन बबलू मालतो, व अन्य अंचल कर्मी व पुलिस पदाधिकारी व पुलिस बल मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

डायरिया रोको अभियान के प्रचार-प्रसार रथ को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

पाकुड़ : ज़िले के उपायुक्त मनीष कुमार के द्वारा आईडीएफ स्टॉप डायरिया कैंपेन के प्रचार प्रसार हेतु डायरिया रथ को उपायुक्त व डीआरसीएचओ डॉ एस.के झा के द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। मौके पर उपायुक्त ने बताया कि यह कैंपेन दिनांक 01-07-2025 से 14-08-2025 तक किया जाना है। स्टॉप डायरिया कैंपेन के दौरान सभी 5 वर्ष से कम बच्चों को 02 ओआरएस पैकेट एवं 14 जिंक टेबलेट का वितरण किया जाना है तथा सभी स्वास्थ्य संस्थान जैसे आयुष्मान आरोग्य मंदिर में ओआरएस एवं जिंक कॉर्नर का स्थापना कर सभी लक्षित लाभार्थियों डफ्र एवं जिंक टेबलेट का वितरण भी किया जाना है।

किसानों के बीच मूंगफली का बीज किया गया वितरित

पाकुड़ : ज़िले में कृषि विभाग द्वारा बिरसा फसल विस्तार योजना अंतर्गत पाकुड़ प्रखंड के दादपुर पंचायत के महादेवपुर सेजा गांव एवं नवीनगर पंचायत के पिपरजोरी गांव के किसानों के बीच मूंगफली का बीज वितरित किया गया। वितरण कार्यक्रम में बीटीएम शमीम अंसारी, एटीएम सुदीप सेन, नीलम श्रीवास्तव, कृषक मित्र तथा स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

तेज रफ्तार टेंपो पलटने से एक व्यक्ति की मौत, तीन घायल

साहिबगंज/बरहेट: बरहेट-दुमका मुख्य पथ स्थित कदमा संथाली टोला के पास टेंपो दुर्घटना में हड़वाडीह गांव के एक व्यक्ति की मौके पर मौत हो गई। बरहेट थाना क्षेत्र के कदमा गांव के संथाली टोला के पास हिरणपुर हाट जा रहा टेंपो पलट जाने से टेंपो सवार बरहेट थाना क्षेत्र के हड़वाडीह गांव निवासी मुर्तजा अंसारी 40 वर्षीय की घटना पर ही दर्दनाक मौत हो गई। वही मकसूद उर्फ छोटू अंसारी 45 वर्षीय, मो. एजाज 18 वर्षीय, आलमगीर आलम 18 वर्षीय घायल हो गया। सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट लाया गया, जहां डॉक्टर बबलू कुमार के द्वारा सभी घायलों का इलाज किया गया। जहां डॉक्टर ने जांच के उपरांत 42 वर्षीय मुर्तजा अंसारी को मृत घोषित कर दिया गया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार टेंपो हड़वाडीह गांव से हिरणपुर हाट के लिए जा रहा था, इस दौरान विपरीत दिशा से आ रहे एक वाहन को साइड देने के क्रम में टेंपो का पहिया सड़क किनारे रखे छरी पर चढ़ गया जिससे टेंपो अनियंत्रित हो कर पलट गई। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया जहां घायलों का उपचार के दौरान किसी बात को लेकर हो हंगामा तोड़फोड़ और मारपीट जैसी स्थिति बन गई। सूचना पाकर बरहेट थाना पुलिस सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट पहुंचकर मामले को शांत कराया। वहीं मृतक के परिजनों ने शव को अपने घर ले गया। इधर पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है।

भारतीय अग्निवीर भर्ती योजना के अंतर्गत प्रचार-प्रसार हेतु एलईडी वाहन के माध्यम से जागरूकता अभियान प्रारंभ

साहिबगंज: भारतीय अग्निवीर योजना के अंतर्गत जिले में अग्निवीर पदों के लिए भर्ती से संबंधित व्यापक प्रचार-प्रसार अभियान प्रारंभ किया गया है। इस अभियान के तहत जिले के विभिन्न प्रमुख स्थानों पर एलईडी प्रचार वाहन के माध्यम से जानकारी दी जा रही है। यह एलईडी वाहन प्रतिदिन सुबह से शाम तक चलाया जा रहा है, जिसमें वीडियो और पंपलेट के माध्यम से अग्निवीर भर्ती प्रक्रिया, योग्यता, लाभ और आवेदन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी जा रही है। यह प्रचार-प्रसार अभियान दिनांक 30 जून से प्रारंभ होकर आगामी 06 जुलाई, 2025 तक चलाया जाएगा। इसका उद्देश्य अधिक से अधिक युवाओं को इस योजना से जोड़ना और उन्हें भारतीय सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करना है। जिला प्रशासन ने सभी इच्छुक युवाओं से अपील की है कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं और एलईडी वाहन के माध्यम से प्रसारित जानकारी से अवगत हों।

महिला के साथ शादी का झांसा देकर दुष्कर्म व जबरन गर्भपात करने को लेकर थाना में केस दर्ज

साहिबगंज/उधवा: राधानगर थाना क्षेत्र अंतर्गत मध्य पियारपुर पंचायत के मुखिया पति पर शादी का झांसा देकर दुष्कर्म व जबरन गर्भपात कराने का आरोप लगा है। पीड़िता के बयान पर राधानगर थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। साथ ही इस संबंध में पुलिस जांच में जुटी हुई है। विदित हो कि मामले को लेकर पीड़िता ने मध्य पियारपुर पंचायत के मुखिया पति मासिउर रहमान उर्फ भोदू के विरुद्ध राधानगर थाना में आवेदन देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की थी। जिसमें बताया गया कि बीते एक साल पूर्व 25 जून 2024 को महिला घर में अकेली थी। मुखिया पति मासिउर रहमान उर्फ भोदु मौका पाकर घर में घुसकर महिला के साथ बलात्कार किया। दुष्कर्म करने के बाद जब महिला रोने लगी तो मुखिया पति ने पीड़िता को शादी का झांसा देकर चुप करा दिया। वहीं एक साल तक कई बार यौन संबंध बनाता रहा। आपको बता दें महिला शादी-शुदा थी, इधर मसिउर शेख उर्फ भोदु शेख ने शादी करने का प्रलोभन देकर षड्यंत्र रचकर महिला का उसके पति से तलाक करवाते हुए महिला के साथ यौन संबंध बनाने पर महिला सात माह पूर्व गर्भवती हुई थी। इधर समाज में बदनामी होने की दुहाई देकर मुखिया पति ने गर्भपात करवा दिया। इसके अलावा पीड़िता ने आरोप लगाते हुए बताई कि विगत 28 फरवरी 2025 को राजमहल नया बाजार स्थित एक घर में उनसे शादी किया परंतु शादी का कागजात उन्हें नहीं दिया।

छाती तक पानी,कंधे पर लाश,77 साल से यहां पुल नहीं

गयाजी में 8 हजार लोग 8 महीने तक शहरों से कट जाते;चिता जलाने की जगह नहीं

गयाजी। पुल होता तो शायद मेरे बेटे की जान बच जाती, लेकिन पुल नहीं होने की वजह से मेरे बेटे की मौत हो गई। बारिश के समय नदी में पानी भरा रहता है। सीने तक पानी भरा रहता है, तो उसे इलाज के लिए अस्पताल कैसे ले जाता।'ये कहना है उस पिता का, जिसके बेटे की हाल ही में बीमारी के बाद समय से इलाज नहीं मिलने के कारण मौत हो गई थी। गयाजी के हेरहंज गांव के 42 साल के निरंजन महतो के पेट में दर्द उठा था, लेकिन बारिश की वजह से नदी में पानी अधिक था। जिस वजह से परिवार वाले उसे अस्पताल नहीं ले जा सके।गांव के ही एक झोलाछाप डॉक्टर से दवा ली, लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ। चार दिन घर में तड़पता रहा और पांचवें दिन उसकी मौत हो गई।दरअसल, आजादी के 77 साल बाद भी गयाजी के ये तीन गांव- पथरा, हेरहंज और केवलडीह में बारिश का मतलब है दुनिया से कट जाना। इसे लेकर भास्कर की टीम सोमवार को पड़ताल के लिए शहर से 150 किलोमीटर दूर पथरा गांव पहुंची। गांव के ठीक सामने मोरहर नदी

बहती है। कुछ लोग छाती भर पानी में निकलने की तैयारी कर रहे थे। हमने वहां के ग्रामीणों से बात की।ग्रामीणों ने बताया, 'इस नदी पर कोई पुल नहीं है। जंगल-पगडंडी पार कर पथरा गांव आना पड़ता है। स्थानीय लोग 8 महीने तक अस्पताल नहीं जा सकते हैं और ना ही बच्चे स्कूल जाते हैं। इस वजह से पढ़ाई भी 8वीं तक ही हो पाती है। इस वजह से उन्हें नौकरी मिलनी भी मुश्किल है।'ग्रामीण बताते हैं, 'बारिश में यहां नदी का पानी बढ़ जाता है। कोई बीमार पड़ गया, तो खटिया पर लादकर नदी पार कराने की कोशिश होती है। पानी ज्यादा हुआ तो सब भगवान भरोसे है। बारिश में यहां नदी उफान पर आ जाती है तो तीनों गांव दुनिया से कट जाते हैं।'ग्रामीणों के मुताबिक, 'गांव में हर साल 20 से 25 लोगों की मौत होती है। किसी की मौत के बाद अंतिम संस्कार के लिए शव को नदी पार करके ही ले जाना पड़ता है।'4 दिन पहले गयाजी के सलैया ब्लॉक का एक वीडियो सामने आया था, जिसमें एक युवक की लाश को खाट पर रखकर कुछ लोग नदी पार करते दिख रहे थे। पानी के तेज बहाव के बीच 4 से 5 फीट गहरे नदी के रास्ते शव को श्मशान घाट अंतिम संस्कार के लिए ले जाया गया।'अंतिम संस्कार करने के लिए बारिश में लकड़ी गीली थी। परिजन शाम को शव को जलाने के लिए निकले थे। शव जलने में रात के 12 बज गए। तब तक गांव के लोग नदी पार कर लौट भी नहीं पाए। निरंजन के 4 बच्चे हैं। दो लड़के

और दो लड़की है।गांव के ही रोहित कुमार कहते हैं, 'नदी पर पुल नहीं होने की वजह से हम 8 महीने दूसरे गांवों से कटे रहते हैं। बरसात में बच्चे स्कूल नहीं जा पाते। मरीज को अस्पताल नहीं ले जा सकते। मौत के बाद शव को श्मशान ले जाना भी एक संघर्ष है। रोहित ने बताया, 'कई बच्चों की मौत हो गई है। सुनील भांती का परिवार मर गया। यहां जनवरी तक तीनों गांवों में कोई गाड़ी नहीं पहुंचेगी। चितरंजन ने भी छटपटा कर दम तोड़ दिया। उसके पेट में दर्द था। उसकी लाश में भी पानी भर गया था।''हर साल 20-25 लोगों की मौत हो जाती है। यहां के लोग बस 8वीं तक की पढ़ाई ही कर पाते हैं। इस कारण जॉब भी नहीं मिलता। केवल किसानी पर ही जीवन चल रहा है। बिजली तो आ गई है, लेकिन यहां सड़क नहीं है।' वहीं, दूसरे ग्रामीण अर्जुन पासवान बताते हैं, 'लोकसभा चुनाव में गांव वालों ने वोट बहिष्कार किया था। पुल बनाने का वादा हुआ। फिर चुनाव चला गया, पुल नहीं बना।' 'अब विधानसभा चुनाव आ गया है। फिर से वोट बहिष्कार की तैयारी है। जब तक पुल नहीं बनेगा, वोट नहीं देंगे।'अर्जुन पासवान ने कहा, 'हमलोगों को बहुत दिक्कत है। जंगल होकर बाजार जाना होता है। बारिश में हम नदी पार नहीं कर सकते हैं। अगर बीमारी हो गई, तो घर में ही मरना है। कोई व्यवस्था नहीं है।'मुखिया सरिता देवी के प्रतिनिधि संतन पासवान बताते हैं, 'तीनों नदियों पर पुल के लिए कई बार आवेदन दिया गया।वहीं, मंत्री संतोष सुमन ने कहा है कि एक पुल का निर्माण काम जल्द शुरू होगा, बाकी दो पुल का प्राकलन तैयार हो गया है, लेकिन आज तक यहां कुछ शुरू नहीं हुआ।गांव में बिजली तो है, लेकिन अगर किसी का BP बढ़ जाए, पेट में दर्द हो, डिलीवरी केस हो, तो भगवान ही डॉक्टर हैं। लोग दुआ करते हैं कि बरसात में कोई बीमार नहीं पड़े।लोगों ने बताया, 'सलैया पंचायत के पथरा, हेरहंज और कमलडीह गांव में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजमर्रा की जिंदगी चौपट है। सरकार को जल्द पुल निर्माण कराना चाहिए, ताकि 15 हजार मतदाता वाले इन तीन गांव की आबादी विकास की मुख्यधारा में आ सके। ऐसा नहीं हुआ तो, हर साल बारिश में किसी न किसी घर का चूल्हा बुझता रहेगा।' मंत्री बोले- बारिश की वजह से शुरू नहीं हुआ पुल का काम मंत्री संतोष सुमन ने बताया कि 'सलैया पंचायत के तीन गांव के लिए पुल निर्माण से जुड़ी प्रशासनिक कार्रवाई पूरी हो चुकी है। एक पुल का टेंडर हो चुका है। बरसात की वजह से काम शुरू नहीं किया जा सका है।

गोविंदपुर में बकरी हाट का आयोजन

नवादा। जिले में जीविका द्वारा महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने की पहल शुरू की गई है। गोविंदपुर प्रखंड के सुघड़ी में आकाश जीविका महिला उत्पादक समूह ने बकरी हाट का आयोजन किया।योजना के तहत अनुसूचित जाति और जनजाति के परिवारों को तीन बकरी खरीदने के लिए 13,500 रुपये का अनुदान दिया जाएगा। सामान्य वर्ग के परिवारों को 12,000 रुपये तक की सहायता राशि मिलेगी।जीविका के जिला परियोजना प्रबंधक मनोज कुमार गिरि ने बताया कि यह कदम दीदियों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए उठाया गया है। गोविंदपुर, हिसुआ और नारदीगंज प्रखंड में कुल 8 बकरी उत्पादक समूह बनाए गए हैं। इन समूहों से

294 परिवार जुड़े हैं। इनमें 170 परिवार अनुसूचित जाति के और 124 परिवार सामान्य वर्ग के हैं।कार्यक्रम में जीविका के प्रखंड परियोजना प्रबंधक श्रीनिवास शर्मा, लाइवस्टॉक यंग प्रोफेशनल सौरभ कुमार, सामाजिक विकास प्रबंधक संतोष कुमार, संचार प्रबंधक राजीव रंजन और सामुदायिक समन्वयक संजीत कुमार मौजूद रहे। इसके अलावा मुन्नी कुमारी, जीविका की दीदियां और कैडर भी उपस्थित थे।

शादी के 10 दिन बाद पत्नी प्रेमी के साथ फरार

बेतिया। के श्रीनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत एक गांव से शादी के 10 दिन बाद एक विवाहिता अपने प्रेमी के साथ फरार हो गई है। वह अपने साथ घर में रखे एक लाख रुपए कैश के साथ जेवरात भी ले गई है। मामले में पीड़ित पति की शिकायत पर श्रीनगर थाना की पुलिस ने अपहरण की प्राथमिकी दर्ज की है।पीड़ित ने पुलिस से बताया है कि उसका टेंट का कारोबार है। 10 दिन पहले ही उसकी शादी नौतन थाना क्षेत्र के एक गांव की लड़की से हुई थी। 24 जून 2025 की रात उसकी पत्नी और माता-पिता खाना खाकर सो गए

थे। वह अपने काम से गया था। रात करीब 10 बजे जब टेंट हाउस का काम करने के बाद घर आया तो उसकी पत्नी घर से गायब थी। इसके बाद ोजबीन शुरू किया गया।
कैश के साथ गहने भी ले गईघर में खोजने के बाद पड़ोस के लोगों से बात की, लेकिन कहीं पता नहीं चला। इसके बाद उसने अपने ससुराल में फोन किया। इसके बाद ससुराल वालों ने भी पता लगाना शुरू किया। पता चला कि विवाहिता अपने गांव के ही सरफराज आलम नामक युवक के साथ भाग गई है। अभी वह गांव भी नहीं आई है। इस दौरान जब घर में देखा तो पता चला कि विवाह के दौरान जो आभूषण दिए गए थे वह भी साथ लेकर गई है। पति ने पुलिस को दिए आवेदन में बताया है कि उसकी पत्नी अपने साथ नथिया, मांगटीका, तवख, हाथशंकर, पायल, मंगलसूत्र लॉकेट व एक लाख रुपये भी साथ लेकर चली गई है।जांच में जुटी पुलिस श्रीनगर थानाध्यक्ष ने बताया कि पुलिस मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस की जांच अभी प्रेम प्रसंग के बिंदु पर ही चल रही है। इसके लिए आरोपितों के मोबाइल को सर्विलांस पर लगाया गया है।

भोजपुर में 3 हजार ऑटो ड्राइवर की हड़ताल

ऑटो वालों ने स्टैंड टैक्स में बढ़ोतरी के खिलाफ आरा नगर निगम के पास प्रदर्शन किया। इस दौरान नगर निगम के खिलाफ नारेबाजी की गई। प्रदर्शन में सैकड़ों ऑटो चालक मौजूद थे। ऑटो चालकों ने एमपी बाग से रमना के तरफ जाने वाले रास्ते को जाम कर दिया। जिससे आने जाने में लोगों को काफी परेशानी होने लगी।ऑटो वालों ने निगम पर जबरन वसूली करने का भी आरोप लगाया है। ऑटो चालकों ने मेयर और नगर आयुक्त के खिलाफ मुदार्बाद के नारे लगाए । हड़ताल में तीन हजार से ज्यादा ऑटो वाले सड़क पर उतरे है।
ऑटो चालक बजरंगी प्रसाद ने बताया कि हम लोग 15 रुपया

देंगे। लेकिन अब निगम ने 30 रुपए कर दिया है। अगर कोई ऑटो वाला नहीं देता है, तो ऑटो वालों के साथ ठीकेदारों मार पीट भी करते है। ऑटो चालक ने कहा कि हमें ऑटो स्टैंड चाहिए। जितना भी रोड पर ठेला लग रहा है। वो सभी ठेला हट जाएगा। तभी हमलोग जाम हटाएंगे नहीं तो यह जाम लगा रहेगा।अमित कुमार यादव ने बतया कि पहले 15 रुपया चुंगी लगता था। अब बुधवार से 30 रुपया कर दिया गया है। स्टेशन परिसर में पहले 40 रुपए लगते थे। लेकिन अब 60 रुपए लग रहा है। रोड का टैक्स हमलोग देते है। लेकिन नगर निगम ठेला वालो पर नजर नहीं देता है। हम लोग पांच मिनट ऑटो खड़ा करते है। पांच मिनट में सवारी चढ़ाना है और उतारना है। हर रूट में टैक्स लिया जा रहा है। जो एक जगह लगना चाहिए। सामाजिक कार्यकर्ता अभिषेक द्विवेदी ने कहा कि यहां एक भी ऑटो स्टैंड नहीं है। लेकिन चुंगी ऑटो स्टैंड के नाम पर ली जाती है। ऑटो वाले जो पैसे देते हैं तो ऑटो स्टैंड के नाम पर देते है। लेकिन यहां ऑटो स्टैंड के नाम पर सड़क है। सड़क के किनारे ऑटो खड़ा कर दो, तो नगर निगम और जिला प्रशासन को इसपर विचार करना चाहिए। ऑटो वालों के लिए ऑटो स्टैंड बने। लेकिन यहां तो निगम और जिला प्रशासन के सहयोग से बस वसूली की जाती है। कार्यकर्ता ने कहा कि अगर ऐसा नहीं होता है तो आने वाले समय में चरणबद्ध तरीके से आंदोलन किया जाएगा।

गोविंदपुर में प्रेमी जोड़े को पकड़ने पहुंची पुलिस और ग्रामीण

गोविंदपुर। थाना क्षेत्र में बुधवार रात एक अजीब मामला सामने आया। गोविंदपुर बाजार स्थित एक मकान में अलग-अलग समुदाय के प्रेमी जोड़े की मौजूदगी की सूचना पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई।रात करीब 10 बजे शुरू हुआ यह हंगामा चार घंटे तक चला। अंधेरे के कारण ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों के साथ मिलकर घर की तलाशी ली। ग्रामीणों और सूत्रों के अनुसार, प्रेमी जोड़ा अलग-अलग समुदाय का होने के कारण विवाद खड़ा हो गया था। हालांकि, अंधेरे का फायदा उठाकर दोनों मौके से फरार हो गए। इससे लोगों में आक्रोश

देखा गया। प्रेमी जोड़े के नहीं मिलने पर कुछ घंटों बाद लोग निराश होकर वापस लौट गए। ग्रामीणों ने बताया कि वे थाने में दोनों के खिलाफ आवेदन देंगे। थाना के एएसआई रामबली प्रसाद ने कहा कि आवेदन मिलने के बाद कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

बेटा-पति निर्दोष, फिर भी पुलिस ले गई

बच्चों के विवाद में बड़ों ने भड़काऊ शब्द बोले, पत्थरबाजी के 2 दिन तक पुलिस ने की कैंप

दरभंगा में 2 दिन पहले समुदाय के बीच पत्थरबाजी हुई थी। 2 घंटे तक दोनों पक्ष ने एक-दूसरे को ईंट से मारा था। कुछ लोगों के सिर फूट गए थे। करीब 6 लोग घायल हुए थे। इनमें कुछ नाबालिग भी थे। अगले दिन 41 लोगों की गिरफ्तारी हुई थी। पुलिस ने घटना के दो दिन तक कैंप किया। अन्य उपद्रवियों को अभी भी चिह्नित किया जा रहा है।मामला बहेड़ा थाना क्षेत्र के पोहद्दी गांव का है। जहां पहले कभी ऐसी घटना नहीं हुई। मोहर्रम का समय था। 2 समुदाय के बच्चों में विवाद हुआ। उनके बीच मारपीट हुई। एक बच्चा रोते हुए अपने जा रहा था। बच्चे को रोता देख एक पक्ष के लोग आक्रोशित हो गए। बच्चे से रोने का कारण पूछा। इसके बाद तनाव बढ़ गया। इस बीच किसी ने भड़काऊ शब्द का इस्तेमाल कर

दिया। जिसके बाद दोनों पक्ष की ओर से पत्थरबाजी हो गई। 5 थाने की पुलिस पहुंची थी।घटना के 5 घंटे के बाद सोमवार की सुबह 3 बजे पुलिस जब गिरफ्तारी के लिए पहुंची थी तब गांव में सभी लोग सो रहे थे। पुलिस 20 से 25 घर में घुसी और हंगामा मचाने वालों को गिरफ्तार किया। इनमें 20 से लेकर 50 साल की उम्र वाले लोग शामिल हैं। कोई पढ़ाई करने वाला है, कोई मजदूर है और कोई नौकरी पेशा वाले हैं।पूर्व मुखिया बहादुर साहनी ने कहा कि मोहर्रम का समय चल रहा था। मुस्लिम बच्चे एक अखाड़े से दूसरे अखाड़े जा रहे थे। इसी बीच दोनों समुदाय के बच्चों में झड़प हुई थी। गांव में 39 जातियों के लोग रहते हैं। आबादी 18 हजार है। सभी मिलजुल कर रहते हैं। अब भी

गांव के लोग और पुलिस मिलकर शांति बनाए हुए हैं।पुलिस के सामने भी दोनों पक्षों में टकराव हुआ था। प्रशासन से मांग है कि निर्दोष लोगों को न फंसाया जाए। गांव के लोग सक्रिय हैं। अब ऐसी घटना दोबारा नहीं होगी।सुमित्रा देवी ने बताया जब मैं पहुंचीं, तब तक तीन बार झगड़ा हो चुका था। बाद में लोग अपने घर चले गए। रात में पुलिस आई और घर-घर से लोगों को उठाकर ले गई। मेरा बेटा गणेश भी पकड़ा गया। पत्थरबाजी बहुत देर तक चली थी। पुलिस के आने के बाद भी पत्थरबाजी होती रही थी।200 मीटर दूर विवाद, फिर भी मेरे घर पहुंची पुलिस रंजू देवी ने बताया कि पुलिस मेरे ने पति, बेटे और एक मजदूर को उठा लिया। विवाद 200 मीटर दूर आजाद चौक के पास हुआ था, जिसका असर मेरे घर तक हुआ। पत्थर बरसने लगे।मेरा बेटा निर्दोष है
मीरा देवी ने बताया कि झगड़ा बच्चों के बीच हुआ था, लेकिन बड़े भी शामिल हो गए। रात को पुलिस आई। सभी लोग घर चले गए। मेरा पढ़ने-लिखने वाले बेटे को भी पुलिस उठा ले गई। मुझे पता भी नहीं चला। मेरा बेटा झगड़े में शामिल नहीं था।वार्ड सदस्य मंजूर हसन ने बताया, दोनों पक्षों के लोग बैठक कर चुके हैं। सभी भाईचारे के साथ रह रहे हैं। त्योहार भी मिलकर मनाएंगे। प्रशासन ने समय रहते कार्रवाई की। सूझबूझ से मामला संभाल लिया गया। अब कोई दिक्कत नहीं है। ग्रामीण कमरे आलम बताते हैं कि आजाद चौक के पास बच्चों के बीच विवाद हुआ था, फिर पत्थरबाजी शुरू हो गई। कुछ लोग घायल हुए थे।

संक्षिप्त डायरी

कारतूस-2 लाख रुपए के साथ बदमाश अरेस्ट

भोजपुर। के बिहिया थाना पुलिस ने मंगलवार की रात गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई की। बेलवनिया गांव स्थित एक घर में छापेमारी कर कारतूस और नकदी के साथ एक बदमाश को गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार आरोपित विकास

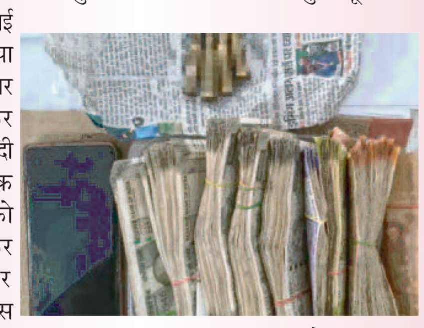

गोड़ बिहिया थाना क्षेत्र के बेलवनिया गांव का निवासी है। उसके घर से 315 बोर का चार कारतूस, दो लाख 74 हजार तीन सौ दस रुपए नकद और एक मोबाइल बरामद किया गया है।इसे लेकर प्राथमिकी की गई है। एसपी राज ने बुधवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर जानकारी दी। उन्होंने बताया जाता है कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी। बेलवनिया गांव में विकास गोड़ के घर में हेरोइन व कारतूस छुपा कर रखा गया है। सूचना के सत्यापन उपरांत बिहिया थानाध्यक्ष आदित्य कुमार व पीएसआइ राम स्वरूप यादव ने पुलिस बल के साथ बेलवनिया गांव पहुंचे घर की तलाश ली।बक्सा से कारतूस व नकदी बरामदतलाशी के दौरान हेरोइन तो नहीं मिला। लेकिन, बक्सा से कारतूस व नकदी बरामद किया गया। साथ ही उसे गिरफ्तार कर लिया गया। बिहिया थाना में पुलिस ने उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत प्राथमिकी की है। मालूम हो पहले भी तेघरा से छापेमारी के दौरान मादक पदार्थ बरामद किया गया था।नवादा थाना पुलिस ने शराब कांड मामले में दो साल से फरार चल रहे अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी थाना क्षेत्र के न्यू पुलिस लाइन अंबेडकर कॉलोनी से मंगलवार की शाम की। गिरफ्तार बदमाश नवादा थाना क्षेत्र के न्यू पुलिस लाइन अंबेडकर कॉलोनी निवासी राम बाबू साह का बेटा राजेश्वर प्रसाद उर्फ भोलक है।9 मई साल 2023 को नवादा थाना पुलिस ने कतीरा पेट्रोल पंप के पास वाहन चेकिंग के दौरान कार्रवाई की थी। एक स्कूटी के डिक्की से दो बोतल अंग्रेजी शराब बरामद किया था और उस समय स्कूटी चला रहे हैं युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। इसके बाद पुलिस ने बिहार मध निषेध अधिनियम एक्ट के तहत प्राथमिकी दर्ज की थी। पुलिस ने अनुसंधान के क्रम में गाड़ी नंबर से गिरफ्तार अभियुक्त राजेश्वर प्रसाद उर्फ भोलक का नाम लाया था और उसी समय से वह फरार चल रहा था।

महिला को दो बच्चियों के साथ घर से निकाला

जमुई । के लक्ष्मीपुर थाना क्षेत्र में एक महिला को दो बेटियों के जन्म देने पर ससुराल वालों ने घर से निकाल दिया। पीड़िता ने बताया कि दो लड़की को जन्म देने पर वे लोग उसके साथ मारपीट करते थे। जिसके बाद पहले दोनों लड़की के भरण पोषण के लिए उसके मायके वालों से दो लाख रुपए की मांग की गई। नहीं देने पर मारपीट कर उसे घर

से बाहर निकाल दिया। इतना नहीं बल्कि उसने अपने बेटे को भी पत्नी से तलाक दिलाने का दबाव बनाया। वहीं पीडिता अपने दो छोटी-छोटी बच्ची के साथ गुरुवार को एसपी विश्वजीत दयाल के जनता दरबार में पहुंची। पीड़िता की पहचान हरला महथा टोला गांव निवासी दिलीप दास की पत्नी करिश्मा कुमारी के रूप में हुई है। मारपीट और मायके वालों से पैसे मांगने का लगाया आरोप करिश्मा ने एसपी को बताया कि शादी के बाद उसने दो बेटी को जन्म दिया। इसके बाद उसकी सास अरुणा देवी, ससुर गोविंद दास, देवर रतन दास, ननद सहित अन्य ससुराल वाले लोगों द्वारा पहले उसे प्रताड़ित किया जाने लगा और दोनों बेटी की भरण पोषण के लिए मायके वालों से दो लाख रुपए मांगने को मजबूर करने का आरोप लगाया। जब रुपए नहीं मिले तो मारपीट कर बुधवार को उसे घर से बाहर निकाल दिया। वहीं पीड़ित महिला गुरुवार को समाहरणालय स्थित एसपी कार्यालय में आयोजित होने वाले साप्ताहिक जनता दरबार में पहुंची। जहां पूरे मामले की जानकारी एसपी को देते हुए सुरक्षा और न्याय की गुहार लगाई है।कार्रवाई का दिया आदेश एसपी विश्वजीत दयाल ने भी पीड़िता की बातों को सुना और फोन कर लक्ष्मीपुर थानाध्यक्ष आलोक कुमार को पूरे मामले की जांच कर कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

सीवान में करंट से ई-रिक्शा चालक की मौत

सीवान। के बड़हरिया थाना चौक के पास बड़हरिया-गोपालगंज बस स्टैंड के पास गुरुवार की सुबह एक ई-रिक्शा चालक की करंट लगने से मौत हो गई। मृतक की पहचान खानपुर गांव निवासी सोमारी शाह(35) के रूप में हुई है। घटना से आक्रोशित स्थानीय लोगों ने सड़क जाम कर दिया और बिजली विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, सोमारी शाह अपने ई-रिक्शा को लेकर जा रहे थे कि तभी सड़क के बीचों बीच लटक रहे तार से उनका संपर्क हो गया। करंट लगते ही उनकी मौके पर ही मौत हो गई। बताया कि मृतक अपने परिवार का इकलौता कमाने वाला सदस्य था। उनके पिता खेत मजदूरी कर घर चलाने में मदद करते हैं। आर्थिक रूप से कमजोर यह परिवार अब पूरी तरह टूट गया है।हादसे के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने बड़हरिया-गोपालगंज मुख्य मार्ग को जाम कर दिया। वे बिजली विभाग की लापरवाही के खिलाफ नारेबाजी करने लगे। लोगों ने आरोप लगाया कि क्षेत्र में वर्षों से जर्जर बिजली तार लटके हुए हैं, लेकिन विभाग द्वारा कोई सुधारात्मक कदम नहीं उठाया गया। स्थानीय लोगों ने कई बार शिकायत भी की थी, लेकिन हर बार आश्वासन देकर मामला टाल दिया गया।प्रदर्शनकारियों ने मृतक के परिजन को सरकारी मुआवजा देने और पूरे क्षेत्र में जर्जर तारों को शीघ्र बदलने की मांग की। मौके पर पहुंचे बड़हरिया थाना प्रभारी रूपेश कुमार वर्मा ने लोगों को समझा-बुझाकर जाम हटवाया और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए सिवान सदर अस्पताल भेजा।जर्जर तारों के मरम्मत का दिया आश्वासन बिजली विभाग के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने जल्द ही तारों को ठीक करने का आश्वासन दिया। यह घटना एक बार फिर बिजली विभाग की लापरवाही और जमीनी स्तर पर काम की अनदेखी को उजागर करती है।

सेहत के लिए काफी फायदेमंद है तेज पत्ता

रसोई में ऐसे कई मसाले हैं जिनका इस्तेमाल बीमारियों में दवा का काम करता है। शुगर से लेकर हाई ब्लड प्रेशर तक को कंट्रोल करने में ये मसाले या पत्ते इस्तेमाल किए जाते हैं। मधुमेह में कई घरेलू नुस्खे असरदार साबित होते हैं। जिनका लगातार इस्तेमाल करने से शरीर में ब्लड शुगर कंट्रोल होने लगता है। ऐसा ही सूखा पत्ता है तेज पत्ता, जिसका इस्तेमाल गरम मसाले में करते हैं। तेज पत्ता काफी खुशबूदार होता है। डायबिटीज के मरीज अगर सुबह खाली पेट तेज पत्ता की चाय बनाकर पीते हैं तो इससे शुगर को कम करने में फायदा मिलता है।

तेज पत्ता को सेहत के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। तेज पत्ता में भरपूर एंटी-ऑक्सीडेंट, विटामिन और मिनरल पाए जाते हैं। ये सभी पोषक तत्व डायबिटीज में असरदार साबित होते हैं। तेज पत्ता में आयरन, पोटेशियम, कैल्शियम, सेलेनियम और कॉपर होता है। कुछ दिनों तक नियमित रूप से तेज पत्ता का पानी या चाय पीने से पुरानी से पुरानी डायबिटीज को कम किया जा सकता है।

शुगर में तेजपत्ता के फायदे

आयुर्वेदिक डॉक्टर्स की मानें तो शुगर को कम करने के लिए कई तरह की जड़ी बूटियां हैं जो आपके घर में भी आसानी से मिल जाती हैं। आचार्य बालकृष्ण की मानें तो डायबिटीज में तेज पत्ता काफी फायदेमंद है। कई रिसर्च में भी ये सामने आ चुका है कि डाइट और एक्सरसाइज के साथ कुछ आयुर्वेदिक उपाय करने से शुगर कम होने लगती है। ऐसा करने से इंसुलिन फंक्शन में सुधार आता है।

शुगर में तेज पत्ता की चाय?

तेज पत्ता का इस्तेमाल खाने में तो सभी करते हैं। लेकिन डायबिटीज के मरीज को इसकी चाय या पानी पीना चाहिए। तेज पत्ता की चाय बनाने के लिए 1 तेज पत्ता 1 गिलास पानी में डालकर रातभर के लिए भिगो दें। सुबह इस पानी को उबालकर छानकर पी लें। आप चाहें तो अपनी नॉर्मल दूध वाली चाय में भी तेज पत्ता का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके अलावा तेज पत्ता की चाय में थोड़ी दालचीनी, इलायची और तुलसी डालकर भी इसे तैयार कर सकते हैं। नॉर्मली आप सुबह खाली पेट तेज पत्ता का पानी पी सकते हैं। इससे धीरे-धीरे ब्लड शुगर लेवल नॉर्मल होने लगेगा।

इन बीमारियों में फायदा करता है तेज पत्ता

तेज पत्ता न सिर्फ खाने का स्वाद बढाता है बल्कि कई बीमारियों में भी असरदार काम करता है। तेज पत्ता का सेवन करने से पेट की समस्या जैसे कब्ज, एसिडिटी, मरोड़ और दर्द को कम किया जा सकता है। अगर किडनी में स्टोन हो रहे हैं तो तेज पत्ता का पानी पीने से फायदा मिलेगा। जिन लोगों को नींद की समस्या रहती है। वो तेज पत्ता के तेल की कुछ बूंदें पानी में डालकर पी लें। जोड़ों पर तेज पत्ता के तेल से मसाज करना राहत पहुंचाता है।

इन परेशानियों में कारगर है अदरक का सेवन

अदरक का इस्तेमाल सब्जी से लेकर चाय बनाने में किया जाता है। लेकिन यह जड़ वाली सब्जी सेहत के लिए भी बेहद लाभकरी है। इसके सेवन से कई गंभीर बीमारियों से अपना बचाव कर सकते हैं। औषधीय गुणों से भरपूर अदरक सर्दी जुकाम और खांसी के साथ कई गंभीर बीमारियों में भी कारगर है। इसमें मौजूद पोषक तत्व जैसे आयरन, कैल्शियम, आयोडीन, क्लोरीन और विटामिन शरीर को कई बीमारियों से दूर रखते हैं। तो, चलिए जानते हैं अदरक का सेवन कब और कैसे सेवन करना चाहिए?

एसिडिटी : खाना खाने के बाद एसिडिटी और हार्ट बर्न की समस्या है, तो अदरक का सेवन करें। यह बॉडी में जाकर एसिड की मात्रा को कंट्रोल करता है। इसलिए खाना खाने के 10 मिनट बाद एक कप अदरक का जूस पिएं।

मतली और उल्टी को कम करना : हअदरक मतली और उल्टी को कम करने में प्रभावी है। इसका सेवन मतली और मॉर्निंग सिकनेस के लक्षणों को कम करने में मदद कर सकता है।

पाचन में सुधार : अदरक में जिंजरोल नामक एक बायोएक्टिव यौगिक होता है, जो पाचन एंजाइमों को उत्तेजित करके पाचन में सुधार करने में मदद करता है ।यह गैस, एसिडिटी और पेट फूलने जैसी समस्याओं से राहत दिलाने में भी मदद करता है।

कमजोर इम्यूनिटी : अदरक में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करते हैं और संक्रमण से बचाने में मदद कर सकते हैं।

जोड़ों का दर्द करे दूर : अदरक में एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं जो जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करते हैं। इसका सेवन या इसे जोड़ों पर लगाने से सूजन और दर्द कम हो सकता है।

पीरियड के दर्द में असरदार : अदरक, पीरियड के दर्द को कम करने में में मदद करते हैं। इसमें पाए जाने वाले एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण दर्द और ऐंठन को कम करने में मदद करते हैं।

कैसे करें अदरक का सेवन?

अदरक का सेवन तो आमतौर पर चाय में डालकर किया जाता है। लेकिन अगर आप इसका ज़्यादा फायदा चाहते हैं तो आप चाय की बजाय इसका पानी पियें। अदरक का पानी बनाने के लिए इसे कद्दूकस कर लें। अब एक गिलास पानी में कद्दूकस किया हुआ अदरक डालकर पानी को छी तरह उबाल लें। अब इस पानी को छानकर चाय की तरह चुस्कियां लेकर पिएं। स्वाद के लिए इस पानी में आप शहद ही मिला सकते हैं।

तुलसी के पत्ते किन बीमारियों में असरदार है

हिन्दू धर्म में तुलसी के पौधे की एक देवी के रूप में पूजा की जाती है। ज्यादातर घरों में आपको तुलसी मिल ही जाएगी। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सुबह उठकर तुलसी को जल चढ़ाने से भगवान विष्णु की कृपा बरसती है। तुलसी अपने आप में एक ऐसा पौधा है जो अनगिनत फायदे पहुंचाता है। आयुर्वेद में कई बीमारियों के इलाज में तुलसी का उपयोग किया जाता है। आज हम आपको बताएंगे कि घर में लगी तुलसी का इस्तेमाल कर आप किन बीमारियों से बच सकते हैं।

आचार्य बालकृष्ण की मानें तो तुलसी के पत्तों से कई बीमारियों का इलाज होता है। इसके पत्तों में रोग प्रतिरोधक क्षमता होती है जो आपको बुखार, दिल से जुड़ी बीमारियां, पेट दर्द, मलेरिया और बैक्टीरियल संक्रमण से बचाते हैं।

दिमाग के लिए फायदेमंद- तुलसी में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो दिमाग को शांत करने, कार्य क्षमता बढ़ाने, सिर दर्द, सिर के जूं और लीख से छुटकारा, नाइट ब्लाइंडनेस से आराम दिलाने का काम करते हैं। इसके लिए रोजाना 4- 5 तुलसी के पत्ते पानी के साथ खा लें। सिर में तुलसी के पत्तों का रस भी लगा सकते हैं।

कान और दांत के दर्द में आराम- बच्चों और बड़ों किसी को कान में दर्द हो तो तुलसी के पत्तों का रस डालने से आराम मिलता है। कान के दर्द में तुरंत राहत पाने के लिए तुलसी के 8-10 पत्तों को पीस लें और इससे निकलने वाले रस में से 2 से तीन बूंद कान में डालनी हैं दांत में दर्द हो तुलसी और काली मिर्च चबा लें। इससे फायदा मिलेगा।

पेट की बीमारियों में असरदार तुलसी- अगर आपको डायरिया, पेट की मरोड़, कब्ज, पीलिया, पथरी, डिलीवरी के बाद होने वाले दर्द से झुटकारा पाना है तो तुलसी के पत्तों का सेवन करें। डायरिया और पथरी से बचने के लिए 10 तुलसी की पत्तियां और 1 ग्राम जीरा दोनों को पीसकर शहद में मिलाकर उसका सेवन करें। अपच दूर करने के लिए तुलसी को नमक के साथ पीसकर दिन में 3 से 4 बार लें।

त्वचा के लिए फायदेमंद- आपके फेस को ग्लोइंग बनाने, सफेद दाग, मुंह के छालों, कालापन, कील मुंहासों, फोड़े सभी में तुलसी लाभदायक है। इसके लिए आपको तुलसी के पत्तों को 1 नींबू के साथ मिलाकर लेप बनाना है। इसे चेहरे पर लगा लें और सूखने पर धो लें।

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए- तुलसी मलेरिया, टाइफाइड, बुखार, दाद और खुजली, मासिक धर्म की अनियमितता से बचाती हैं। तुलसी के पत्तों को काली मिर्च के साथ मिक्स करें और काढ़ा बनाकर पीने से मलेरिया, टाइफाइड, बुखार आराम मिलता है। दाद और खुजली के लिए आप इसका लेप बनाकर लगा सकते हैं। मासिक धर्म में आप तुलसी के बीजों का इस्तेमाल कर सकते हैं। रोज तुलसी के पत्तों को खाने से डायबिटीज, कोलेस्ट्रॉल, अस्थमा, जुकाम को कंट्रोल किया जा सकता है।

घाव भरने में मददगार- तुलसी चोट पर भी फायदा करती है। यहां तक की सांप काटने पर भी तुलसी के पत्तों का इस्तेमाल किया जाता है। सांप काटने पर तुलसी की जड़ों को पीसकर सांप के काटने वाली जगह पर लेप लगाते हैं। इससे दर्द से आराम मिलता है। अगर रोगी बेहोश हो गया हो तो तुलसी का रस नाक में लगाया जाता है।

सेहत को चौतरफा फायदे पहुंचाएगा ये फल

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक अनानास में विटामिन सी, विटामिन बी6, मैंगनीज, पोटैशियम, फोलेट और फाइबर समेत कई पोषक तत्वों की अच्छी खासी मात्रा पाई जाती है। यही वजह है कि अनानास को सेहत के लिए वरदान माना जाता है। अगर आप सही मात्रा में और सही तरीके से अनानास का सेवन करते हैं, तो आपकी ओवरऑल हेल्थ पर ढेर सारे पॉजिटिव असर पड़ सकते हैं।

दिल की सेहत को मजबूत बनाए

अनानास आपकी हार्ट हेल्थ को मजबूत बनाने में कारगर साबित हो सकता है। अगर आप दिल से जुड़ी गंभीर और जानलेवा बीमारियों के खतरे को कम करना चाहते हैं, तो आपको पोषक तत्वों से भरपूर अनानास का सेवन करना शुरू कर दीजिए। हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए भी इस फल को कंज्यूम किया जा सकता है।

गट हेल्थ के लिए फायदेमंद

अनानास में पाए जाने वाले तमाम पोषक तत्व आपकी गट हेल्थ के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। पेट से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए आप अनानास का सेवन कर सकते हैं। अगर आप अपनी वेट लॉस जर्नी को आसान बनाना चाहते हैं, तो भी अनानास को अपने डाइट प्लान का हिस्सा बना सकते हैं। आपकी जानकारी के लिए बता दें अनानास खाने से आपकी आंखों की सेहत पर भी पॉजिटिव असर पड़ता है।

मजबूत बनाए इम्यून सिस्टम

अनानास में विटामिन सी की अच्छी खासी मात्रा पाई जाती है। यही वजह है कि इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने के लिए अनानास का सेवन करने की सलाह दी जाती है। अगर आप कमजोर इम्यूनिटी की वजह से बार-बार बीमार पड़ जाते हैं, तो आपको पोषक तत्वों से भरपूर अनानास को कंज्यूम करना शुरू कर देना चाहिए। आपको बता दें कि अनानास आपकी सेहत के साथ-साथ आपकी त्वचा के लिए भी काफी ज्यादा फायदेमंद साबित हो सकता है।

घर में रखे-रखे सड़-गल जाते हैं केले, ये टिप्स है बड़े काम के, 5-6 दिनों तक फ्रेश बने रहेंगे

घर में अक्सर केले लाए जाते हैं लेकिन ये कुछ ही दिनों में काले पड़ने लगते हैं। केले का जल्दी खराब होना आम समस्या है। इससे ये समझना मुश्किल हो जाता है कि केले को फ्रिज में रखें या बाहर। अगर आप चाहते हैं कि केले लंबे समय तक ताजा रहें, तो कुछ आसान तरीके अपनाए जा सकते हैं। केलों की ताजगी बनाए रखने के लिए सबसे पहले ध्यान रखें कि केले खरीदते वक्त वे बिल्कुल ताजे और बिना किसी काले धब्बे वाले हों। अगर केले कहीं से पिलपिले या ज्यादा मुलायम लग रहे हों, तो उन्हें खरीदना सही नहीं क्योंकि ऐसे केले जल्दी खराब हो जाते हैं।

प्लास्टिक बैग से सावधानी

जिन प्लास्टिक बैग्स में केले लाए जाते हैं, उनमें एथिलिन गैस जमा हो जाती है। यह गैस केले के जल्दी पकने का कारण बनती है। इसलिए केले घर लाते ही उन्हें उस बैग से निकालकर किसी दूसरी जगह रखना चाहिए।

केले की डंडी को कवर करें

केले के गुच्छे की डंडी यानी तने को प्लास्टिक से लपेटने से केला जल्दी नहीं पकता और लंबे समय तक ताजा रहता है। अगर पूरे गुच्छे को ढकने की बजाय, केले के तनों को अलग-अलग कवर किया जाए, तो भी केले जल्दी खराब नहीं होते।

अन्य फलों से दूर रखें

केले और अन्य फल जैसे आम, अमरुद, सेब आदि में भी एथिलिन गैस निकलती है। अगर केले को इन फलों के साथ रखा जाए, तो केला जल्दी पकने लगता है। इसलिए केले को अन्य फलों से अलग रखना चाहिए ताकि उनकी ताजगी बनी रहे।

केले को कमरे के तापमान पर रखें

केलों को फ्रिज में रखने से बेहतर है कि उन्हें कमरे के सामान्य तापमान पर ही रखा जाए। केले को उल्टा (टिप-ओवर) करके किसी कटोरे या बाउल में रखें ताकि वे आसानी से सांस ले सकें और खराब न हों।

केले को हवा लगती रहे

केले को एक-दूसरे के ऊपर दबाकर रखने की बजाय ऐसे रखें कि उनपर हवा लगती रहे। इससे उनके जल्दी खराब होने की संभावना कम हो जाती है।

केले को हुक से टांगें

अगर संभव हो तो केले को हुक पर टांगकर रखें। इससे केले के सभी हिस्सों को हवा मिलती रहती है और वे ज्यादा दिनों तक ताजा रहते हैं।

पक चुके केले फ्रिज में रखें

अगर केले पहले से ही पक चुके हों और ज्यादा दिनों तक ताजा रखना हो, तो उन्हें फ्रिज में रखा जा सकता है। फ्रिज की ठंडी हवा में केला ज्यादा समय तक खराब नहीं होता।

केले जल्दी खराब होने की समस्या से बचने के लिए सही तरीके अपनाना जरूरी है। इन तरीकों को अपनाकर आप केले को खराब होने से बचा सकते हैं और उन्हें लंबे समय तक इस्तेमाल कर सकते हैं।

शुभमन गिल ने किया कमाल, सेना देशों में टेस्ट में दोहरा शतक जड़ने वाले बने पहले भारतीय कप्तान

लंदन (एजेंसी)। भारतीय टीम के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में एक बड़ा इतिहास रच दिया है। दरअसल, शुभमन गिल इंग्लैंड ही नहीं, बल्कि सेना देशों में टेस्ट मैचों में बतौर कप्तान दोहरा शतक जड़ने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। अभी तक 192 रनों के साथ मोहम्मद अजहरुद्दीन टॉप पर थे। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाप ऑकलैंड में ये करिश्मा किया था। इसके अलावा वे इंग्लैंड में तीसरे भारतीय हैं, जिन्होंने टेस्ट मैच में 200 या इससे ज्यादा रनों की पारी खेली है।

भारतीय टीम के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में एक बड़ा इतिहास रच दिया है। दरअसल, शुभमन गिल इंग्लैंड ही नहीं, बल्कि सेना देशों में टेस्ट मैचों में बतौर कप्तान दोहरा शतक जड़ने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। अभी तक 192 रनों के साथ मोहम्मद अजहरुद्दीन टॉप पर थे। उन्होंने न्यूजीलैंड के खिलाप ऑकलैंड में ये करिश्मा किया था। इसके अलावा वे इंग्लैंड में तीसरे भारतीय हैं, जिन्होंने टेस्ट मैच में 200 या इससे ज्यादा रनों की पारी खेली है।

शुभमन गिल बतौर कप्तान इंग्लैंड में दोहरा शतक जड़ने वाले पहले भारतीय हैं, जबकि बतौर खिलाड़ी ऐसा करने वाले वे भारत के तीसरे खिलाड़ी हैं। सुनील गावस्कर और राहुल द्रविड़ ने इंग्लैंड में दोहरा शतक जड़ा हुआ है। गिल का बल्ला इस सीरीज में जमकर बोल रहा है। वे एकमात्र प्लेयर हैं जो 350 से ज्यादा रन बना चुके हैं। पहले मैच में भी उन्होंने शतक जड़ा था। वे पहली पारी में 147 रन बनाने में सफल हुए थे। हालांकि, दूसरी पारी में सिर्फ 8 रन ही बना सके थे। इस तरह इस पारी खो मिलाया जाए तो वे 350 से ज्यादा रन सिर्फ तीन पारियों में बना चुके हैं।

पाकिस्तान को भारत में एशिया कप खेलने की अनुमति मिलेगी या नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। खेल मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार पाकिस्तान की टीम को अगले महीने भारत में एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट में खेलने की अनुमति दी जाएगी। खेल मंत्रालय के सूत्र ने कहा कि भारत कई देशों की भागीदारी वाले टूर्नामेंट में पाकिस्तान से खेलेगा।

सूत्र ने कहा, 'हम किसी भी टीम के भारत में बहुराष्ट्रीय टूर्नामेंट में भाग लेने के खिलाफ नहीं हैं। लेकिन द्विपक्षीय प्रतियोगिता अलग होती है।' हॉकी एशिया कप 29 अगस्त से सात सितंबर तक बिहार के राजगीर में आयोजित किया जाएगा जिसमें भारत सहित आठ टीमें भाग लेंगी।

'ऑपरेशन सिंदूर' के कारण अगले महीने एशिया कप हॉकी टूर्नामेंट में पाकिस्तान की भागीदारी को लेकर संदेह था। एशिया कप के अलावा नवंबर-दिसंबर में होने वाले जूनियर विश्व कप में भी पाकिस्तान की टीम को खेलने की अनुमति दी जाएगी।

काउंटी क्रिकेट में ईशान किशन ने की गेंदबाजी, हरभजन और शेन वॉर्न के बॉलिंग एक्शन को करते दिखे कॉपी

मुम्बई (एजेंसी)। ईशान किशन मौजूदा समय में इंग्लैंड में मौजूद हैं। जहां वह काउंटी चैंपियनशिप डिवीजन 1 में नॉटिंघमशर के लिए खेल रहे हैं। इसदौरान उन्होंने अर्धशतक बनाया है। बुधवार को ईशान किशन ने समरसेट के खिलाफ मुकाबले के दौरान गेंदबाजी की। हालांकि, उनके एक्शन ने सबका ध्यान अपनी ओर खींचा है। किशन भारत के पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह के बॉलिंग एक्शन की नकल करते दिखे हैं।

ईशान किशन ने अपने ओवर के दौरान ऑफ स्पिन और लेग स्पिन की। उन्होंने काउंटी चैंपियनशिप में अपनी पहली गेंद पर हरभजन सिंह का बॉलिंग एक्शन कॉपी करने की कोशिश की। टॉम कोहलर कैडमोर के खिलाफ उन्होंने ये गेंद डाली, जोकि 140 के करीब बल्लेबाजी कर रहे थे। ईशान किशन ने शुरुआती 4 गेंद ऑफ स्पिन की, इसके बाद उन्होंने राउंड द विकेट शेन वॉर्न के बॉलिंग एक्शन की कॉपी की। ईशान किशन ने मैच का आखिरी ओवर डाला। इस दौरान उन्होंने एक रन दिया। उनका गेंदबाजी करने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। समरसेट ने कैडमोर के 147 रनों के बदौलत दूसरी पारी में 4 विकेट पर 238 के स्कोर पर पारी घोषित की। उनके पास 108 रन की बढ़त थी, जब ड्रॉ के लिए सहमति बनी। इससे पहले समरसेट ने पहली पारी में 379 रन बनाए। टॉम बैंटन और टॉम अबेल ने अच्छा योगदान दिया। इसके जवाब में नॉटिंघमशर ने 163.2 ओवर में 509 रन बनाए।

राष्ट्रीय टीम के अलावा इंग्लैंड में खेल रहे वैभव, तिलक सहित अन्य क्रिकेटरों पर भी रहेंगी गंभीर की नजरें

लंदन **(एजेंसी)।** भारतीय क्रिकेट टीम के साथ ही अंडर-19 टीम भी अभी इंग्लैंड दौरे पर है। इसके अलावा टीम से बाहर चल रहे कई युवा क्रिकेटर यहां काउंटी में खेल रहे हैं। ऐसे में भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर की नजरें मुख्य टीम के अलावा यहां खेल रहे अन्य खिलाड़ियों पर भी रहेंगी।

आयुष म्हात्रे की कप्तानी वाली भारतीय अंडर 19 टीम में 14 साल के वैभव सूर्यवंशी सहित कई उभरते हुए क्रिकेटर हैं। इसे अलावा तिलक वर्मा, ईशान किशन सहित कई अन्य युवा खिलाड़ी काउंटी में खेल रहे हैं। काउंटी चैंपियनशिप में हैम्पशायर की ओर से खेल रहे तिलक का अब तक का प्रदर्शन बेहतरीन रहा है। पिछली बार एसेक्स के खिलाफ शानदार शतक लगाने के बाद इस क्रिकेटर ने वॉर्सेस्टरशायर के खिलाफ 56 रन बनाये। तिलक भारतीय टी20 टीम के सदस्य हैं पर टेस्ट में अब तक जगह नहीं बना पाये हैं।

मुशीर खान– मुम्बई की ओर से घरेलू क्रिकेट खेलने वाले मुशीर खान ऑलराउंडर हैं। इंग्लैंड में मुंबई इमर्जिंग टीम की ओर से मुशीर ने नॉटिंघमशर की सेकंड इलेवन के खिलाफ पहले मैच की पहली पारी में शतक लगाने के बाद गेंदबाजी में भी अच्छा प्रदर्शन करते हुए 31 रन देकर 6 विकेट लिए। वह मुम्बई क्रिकेट संघ की ओर से आयोजित दौरे पर एक माह के लिए इंग्लैंड गये हैं।

ईशान किशन– भारतीय टीम से बाहर चल रहे ईशान किशन काउंटी भी आजकल क्रिकेट खेलकर में शामदार प्रदर्शन कर रहे हैं। नॉटिंघमशायर काउंटी की ओर से खेलते हुए इस विकेटकीपर बल्लेबाज ने लगातार दो मुकाबलों में अर्धशतक लगाये हैं। समरसेट के खिलाफ मैच में ईशान ने 128 गेंदों में 77 रन बनाए थे। वहीं इससे पहले मैच में भी ईशान ने यॉर्कशायर के खिलाफ 98 गेंदों में 87 रन बनाए थे।

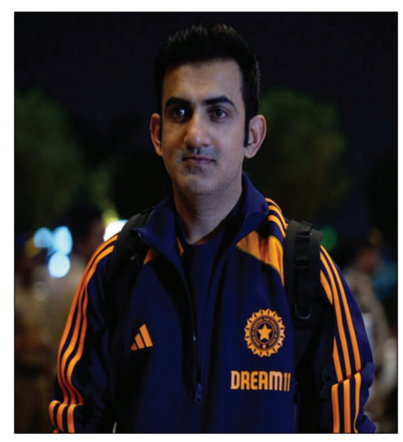

स्पॉट फिक्सिंग में प्रतिबंधित रहे अंकित बने मुम्बई टीम के कोच

मुम्बई (एजेंसी) ।मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) ने पूर्व स्पिनर अंकित चव्हाण को नया कोच बनाया है।जिससे सभी हैरान हैं।अंकित 2013 स्पॉट फिक्सिंग मामले के आरोपी रहे हैं।स्पॉट फिक्सिंग में फंसने के बाद अंकित पर प्रतिबंध लग गया था पर भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआईद्ध) ने साल 2021 में इसे घटाकर सात साल कर दिया था।जिससे वह दो साल पहले ही खेल में वापसी कर पाए हैं।अंकित ने अपने करियर में 18 फर्स्ट क्लास, 20 लिस्ट ए और 13 आईपीएल मैच खेले हैं।ये स्पिनर प्रतिबंध के दौरान भी मुंबई के कर्नाटक स्पोर्ट्स क्लब के लिए क्लब क्रिकेट खेलता रहा और उसने कोचिंग के लिए जरुरी लेवल-1 परीक्षा भी पास की।जिससे उसे एक और अवसर खेल से जुड़ने का मिला है।इस क्रिकेटर ने कहा है कि यह मेरे लिए दूसरी पारी है और मैं इसका बेसब्री से इंतजार कर रहा हूं।जिंदगी में हमेशा वापसी का अवसर होता है।इसके लिए मैं मुंबई क्रिकेट संघ का आभारी भी हूं, जिन्होंने मुझ पर भरोसा जताया।कोचिंग मेरे मन में पहले से थी और मुझे आने वाली कठिन चुनौतियों के बारे में पता है।मैं अंडर-14 क्रिकेट के खिलाड़ियों की बुनियादी तकनीकों पर काम करना चाहता हूं ताकि वे अपने खेल में बेहतर हो सकें।गौरतलब है कि 2013 में बीसीसीआई की अनुशासन समिति ने एस. श्रीसंत, अजीत चंडिला और अंकित चव्हाण को आईपीएल में स्पॉट फिक्सिंग का दोषी मानते हुए आजीवन प्रतिबंध लगाया था। साल 2015 में दिल्ली की ट्रायल कोर्ट ने सबूतों के अभाव में इन सभी खिलाड़ियों को बरी कर दिया हालांकि बीसीसीआई ने प्रतिबंध जारी रखा। बाद में जून 2021 में बीसीसीआई ने सभी पर से प्रतिबंध को घटाकर सात साल कर दिया.

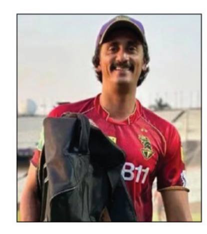

तमिलनाडु प्रीमियर लीग : अश्विन की आक्रामक बल्लेबाजी से जीती डिंडीगुल ड्रैगन्स

चेन्नई ।डिंडीगुल ड्रैगन्स की कप्तानी करते हुए अश्विन दिग्गज स्पिनर आर अश्विन ने तमिलनाडु प्रीमियर लीग के एक मैच में पारी की शुरुआत करते हुए 48 गेंदों पर ही 83 रन बना दिये।अश्विन अपनी स्पिन गेंदबाजी के लिए जाने जाते हैं पर यहां उन्हें 11 चौके व तीन छक्के लगाकर सभी को हैरान कर दिया।उनकी इस पारी से डिंडीगुल ड्रैगन्स ने ये मैच जीत लिया।अश्विन की पारी से एलिमिनेटर में त्रिची ग्रैंड चोलाज छह विकेट से हार गयी।अब डिंडीगुल ड्रैगन्स का मुकाबला क्वालिफायर-2 में शुक्रवार को चेपॉक सुपर गिलीज से होगा।इसमें विजेता टीम फानल में पहुंचेगी।एलिमिनेटर मुकाबले में अश्विन ने टॉस जीतकर त्रिची ग्रैंड चोलाज को पहले बल्लेबाजी के लिए बुलाया।अश्विन ने तीन विकेट लेकर उसे करारा झटका दिया।बाद में 141 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए अश्निन की डिंडीगुल ड्रैगन्स ने तेजी से रन बनाये।अश्विन ने शिवम सिंह के साथ पहले 5 ओवरों में ही 50 रन बना दिये।शिवम 5वें ओवर में आउट हो गए पर अश्विन ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए त्रिची के गेंदबाजों को कोई अवसर नहीं दिया।

युवराज और सचिन भी हुए शुभमन और यशस्वी की बल्लेबाजी से प्रभावित

मुम्बई ।सचिन तेंदुलकर और युवराज सिंह ने शुभमन गिल और यशस्वी जायसवाल की जमकर प्रशंसा की है।शुभमन ने इंग्लैंड दौरे में लगातार दूसरा शतक लगाया है।शुभमन ने दूसरे टेस्ट में जहां नाबाद 114 रन बनाये हैं।वहीं यशस्वी ने 87 रनों की पारी खेलकर खेली।इंग्लैंड में विपरीत हालातों में इनकी बल्लेबाजी से सचिन और युवराज काफी प्रभावित हैं।इन दोनो ने ही शुभमन गिल व यशस्वी जायसवाल की जमकर प्रशंसा की है।सचिन ने यशस्वी जायसवाल को लेकर कहा, 'उसने पहली गेंद से ही लय हासिल कर ली। वह सकारात्मक, निडर और चतुराई से आक्रामक बल्लेबाजी करता दिखा।वहीं शुभमन को लेकर कहा, हमेशा की तरह शांत, दबाव में शांत, डिफेंस में मजबूत और पूरी तरह से पारी पर नियंत्रण करते दिखा। दोनों ने शानदार पारी खेली।' वहीं शुभमन के गुरु रहे युवराज ने कहा , 'जब जिम्मेदारी आती है, तो कुछ लोग आगे बढ़ते हैं और कुछ ऊंची उड़ान भरते हैं।शुभमन टेस्ट कप्तान के रूप में लगातार शतक बनाने वाले इन्हीं खिलाड़ियों में से एक हैं।शांत दिमाग, बोल्ड बल्लेबाजी और उदाहरण पेश करके नेतृत्व करने की क्षमता उनमें है।' वहीं उनकी इस बल्लेबाजी से उन लोगों को करारा जवाब मिला है जो कप्तान बनाते समय आरोप लगाते रहे हैं कि कमजोर बल्लेबाजी के कारण शुभमन की जगह टेस्ट में पक्की नहीं है।

सुपरयूनाइटेड रैपिड शतरंज : गुकेश नें प्रज्ञानन्दा को हराया

जाग्रेब , क्रोसिया (एजेंसी)। सुपरयूनाइटेड रैपिड के पहले दिन भारत के विश्व चैंपियन गुकेश डी ने लगातार दो जीत दर्ज करते हुए अच्छी शुरुआत की है । गुकेश को पहले राउंड में पोलैंड के यान डूड़ा से हार का सामना करना पड़ा था और ऐसे में एक बार फिर रैपिड में उनके खेल पर सवाल उठ ही रहे थे की उन्होने लगातार दो बाजियों में पहले फ्रांस के अलीरेजा को सफ़ेद मोहरो से और फिर हमवतन प्रज्ञानन्दा को काले मोहरो से पराजित करते हुए शानदार वापसी की । गुकेश नें इन दोनों खेल में समय और आक्रामक शतरंज दोनों का उपयुक्त तालमेल दिखाया और यह जताया की वह इस फॉर्मेट में भी लगातार खुद को बेहतर कर रहे है । इस जीत के साथ गुकेश नॉर्वे के मैगनस कार्लसन ,पोलैंड के यान डुड़ा और यूएसए के वेसली सो के साथ 4 अंक बनाकर सयुंक्त बढ़त पर पहुँच गए है ।

प्रज्ञानन्दा के साथ गुकेश के मुक़ाबले पर सबकी नजरे थी और उन्होने ओपनिंग से ही केंद्र में मजबूत पकड़ बनाते हुए अपने खेल की मजबूती दिखाई। खासकर केंद्र में उनके प्यादे का खेलना खेल का मोड़ साबित हुआ।

दूसरी ओर, प्रज्ञानन्दा की वजीर के हिस्से पर खेल की चालों ने कुछ हद तक संतुलन में लाने का मौका दिया, लेकिन समय की कमी में प्रज्ञानन्दा सही चाल नहीं खोज पाए। अंत में गुकेश ने अपने अनुभव और कुशलता का परिचय देते हुए एंडगेम में निर्णायक चालें चलकर जीत हासिल की।

कल भी रैपिड में तीन राउंड खेले जाएंगे जिसमें गुकेश का सामना उज़्बेकिसतान के अब्दुसत्तारोव , यूएसए के फबियानों करूआना और नॉर्वे के मैगनस कार्लसन से होगा जबकि प्रज्ञानदा जो फिलहाल दो ड्रॉ के साथ आठवें स्थान पर है उनका सामना भी फबियानों करूआना और मैगनस कार्लसन और नीदरलैंड के अनीश गिरि से होगा

फुटबॉलर डिओगो जोटा की कार दुर्घटना में मौत, क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने जताया दुख

जमोरा (स्पेन)।लिवरपूल और पुर्तगाल के फॉरवर्ड डिओगो जोटा की स्पेन में गुरुवार को 28 साल की उम्र में कार दुर्घटना में मौत हो गई। स्काई स्पोर्ट्स की रिपोर्ट के अनुसार दुर्घटना के समय जोटा अपने भाई के साथ कार में थे।प्रीमियर लीग और लिवरपूल फुटबॉल क्लब ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया पर फुटबॉलर के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की।उनकी मौत पर पुर्तगाल के कप्तान क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने दुख प्रगट किया है।

प्रीमियर लीग घटना से स्तब्ध – प्रीमियर लीग ने एक्स पर लिखा, 'प्रीमियर लीग में हर कोई डियोगो जोटा और उनके भाई आंद्रे के दुखद निधन के बारे में जानकर स्तब्ध है। इस दुखद समय में हमारी हार्दिक संवेदनाएं डियोगो के परिवार, दोस्तों, लिवरपूल एफसी और उनके सभी समर्थकों के साथ हैं।फुटबॉल ने एक चैंपियन खो दिया है जिसकी कमी हमेशा खलेगी।हम क्लब में अपने दोस्तों और सहकर्मियों का समर्थन करना जारी रखेंगे।' एलएफसी ने एक्स पर लिखा, 'लिवरपूल फुटबॉल क्लब डियोगो जोटा के दुखद निधन से स्तब्ध है।'

रोनाल्डो ने शोक व्यक्त किया – रोनाल्डो ने शोक व्यक्त करते हुए सोशल मीडिया पर एक भावुक पोस्ट में लिखा, 'अभी हम नेशनल टीम में साथ थे, अभी आपकी शादी हुई थी। आपके परिवार, आपकी पत्नी और आपके बच्चों के लिए मैं अपनी संवेदनाएं भेजता हूं। मुझे पता है कि आप हमेशा उनके साथ रहेंगे।शांति से आराम करो, डिओगो और आंद्रे। हम सभी आपको याद करेंगे।'

ब्रैथवेट खेलेंगे 100वां टेस्ट, वेस्टइंडीज खिलाड़ियों के विशेष क्लब में होंगे शामिल

बारबाडोस (एजेंसी)। क्रेग ब्रैथवेट आज ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैदान पर उतरेंगे और वेस्टइंडीज के लिए 100 टेस्ट खेलने वाले 10वें क्रिकेटर बन जाएंगे। वह विव रिचर्ड्स, क्लाइव लॉयड, ब्रायन लारा और गॉर्डन ग्रीनिज जैसे खिलाड़ियों की विशिष्ट सूची में शामिल हो जाएंगे। पिछले कुछ वर्षों में ब्रैथवेट सबसे लंबे प्रारूप में वेस्टइंडीज क्रिकेट की आधारशिला बन गए हैं, उन्होंने 99 टेस्ट मैचों में 12 शतकों के साथ 5943 रन बनाए हैं, उनमें से 39 में टीम का नेतृत्व किया है, किसी भी अन्य वेस्टइंडीज खिलाड़ी की तुलना में अधिक गेंदों का सामना किया है और 2022 में आईसीसी पुरुष टेस्ट टीम ऑफ द ईयर में स्थान अर्जित किया है। उनकी यात्रा 2011 में 18 वर्षीय नवोदित खिलाड़ी के रूप में शुरू हुई, लेकिन यह विश्वास बहुत पहले ही जड़ जमा चुका था, जब उन्होंने सिर्फ़ 14 वर्ष की आयु में ही पूरे आत्मविश्वास के साथ घोषणा की थी कि वह एक दिन वेस्टइंडीज के लिए 100 टेस्ट खेलेंगे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दूसरे टेस्ट की पूर्व संध्या पर क्रेग ब्रैथवेट ने कहा, 'मैंने यह लक्ष्य तब तय किया था, जब मैं शायद 14 वर्ष का था - 100 टेस्ट खेलना। अब मैं 18 साल बाद वेस्टइंडीज के लिए अपना सौवां टेस्ट खेल रहा हूं। मैं बहुत आभारी हूं, और मैं बस युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा बनना चाहता हूं।% मई 2011 में बैसेटेरे में पाकिस्तान के खिलाफ ब्रैथवेट के लिए यह ड्रीम डेब्यू नहीं था। उन्होंने एक बाउंड्री के साथ शुरुआत की, लेकिन 15 और 0 के स्कोर ने उनके टेस्ट करियर की एक शांत शुरुआत को चिह्नित किया। उन्होंने खुद स्वीकार किया कि इस विश्वास को जमने में समय लगा, लेकिन एक बार जब यह जम गया, तो पीछे मुड़कर नहीं देखा। मीरपुर में बांग्लादेश के खिलाफ अपने तीसरे टेस्ट में एक शानदार अर्धशतक ने फॉर्म में वापसी की, जिसके बाद भारत और ऑस्ट्रेलिया जैसी शीर्ष टीमों के खिलाफ अपने अगले चार मैचों में उन्होंने तीन और अर्धशतक लगाए। ब्रैथवेट को अपना पहला टेस्ट शतक बनाने में तीन साल लग गए, 2014 में पोर्ट ऑफ स्पेन में न्यूजीलैंड के खिलाफ एक संयमित पारी।लेकिन यह एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिसने वेस्टइंडीज के शीर्ष क्रम में उनकी जगह को मजबूत किया। उन्होंने कहा, 'न्यूजीलैंड के खिलाफ मेरा पहला शतक एक ऐसा एहसास था जिसे मैं वास्तव में शब्दों में बयां नहीं कर सकता। मुझे विश्वास नहीं था कि मैं टेस्ट शतक के इतने करीब पहुंच जाऊंगा, और फिर इसे हासिल करने के बाद, मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि मैंने वेस्टइंडीज के लिए 100 रन बनाए।

जोकोविच विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में पहुंचे, गॉफ और ज्वेरेव बाहर हुए

लंदन ।सर्बियाई टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच जीत के साथ ही विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में पहुंच गये हैं।वहीं जर्मनी के अलेक्जेंडर ज्वेरेव हार के साथ ही बाहर हो गये हैं।वहीं महिला वर्ग में अमेरिकका की कोको गॉफ को पहले ही दौर में हार का सामना करना पड़ा है। जोकोविच पहले दौर के मैच में पेट दर्द से भी परेशान रहे।इस कारण उन्हें दो बार मेडिकल हेल्प भी लेनी पड़ी के कारण दो बार डॉक्टर की मदद लेनी पड़ी। जोकोविच ने एलेक्जेंडर मुलर को 6-1, 6-7 (7), 6-2, 6-2 से हराकर दूसरे दौर में जगह बनायी। जोकोविच ने कहा, ''मैं मैच के दौरान काफी परेशान था पर किसी प्रकार दवा लेकर खेलने में सफल रहा।'' वहीं एक अन्य मुकाबले में ज्वेरेव को आर्थर रिंडरक्नेच ने पांच सेटों तक चले मुकाबले में 7-6 (3), 6-7 (8), 6-3, 6-7 (5), 6-4 से हराया।महिला एकल की बात करें तो गॉफ पहले दौर में ही हार गयी।उन्हें दयाना यास्त्रेम्स्का ने 7-6 (3), 6-1 से पराजित किया।वहीं इस साल फ्रेंच ओपन के सेमीफाइनल में पहुंचने वाले लोरेंजो मुसेट्टी भी पहले दौर में ही हार कर बाहर हो गये। उन्हें निकोलोज बेसिलशविली ने हराया। इस तरह से विंबलडन में पहले दो दिन में 23 वरीयता प्राप्त खिलाड़ी बाहर हो गये हैं।

अगले सत्र में रॉयल्स की जगह सीएसके से खेल सकते हैं सैमसन

मुंबई (एजेंसी)। विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन आईपीएल के अगले सत्र में राजस्थान रॉयल्स की जगह पर चेन्नईसुपरकिंग्स (सीएसके) से खेलते नजर आ सकते हैं। सैमसन ने 18 वें सत्र में रॉयल्स की कप्तानी की थी पर टीम का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था। ऐसे में अब रॉयल्स आईपीएल के अगले सत्र के लिए नये सिरे से टीम बनाने जा रही है। वह तकरीबन आधे खिलाड़ी बदलने पर विचार कर रही है। रॉयल्स ने अब तक किसी का नाम नहीं बताया है पर जिन खिलाड़ियों के लिए ट्रेड-ऑफ की मांग सबसे अधिक होगी, उनमें से एक सैमसन हो सकते हैं। ऐसे में सैमसन और रॉयल्स की टीम आपसी सहमति से अलग हो सकते हैं। वैसे भी टीम के पास ध्रुव जुरेल के रूप में एक अच्छा विकेटकीपर बल्लेबाज है। आईपीएल में अभी दो टीमों को अच्छे विकेटकीपर-बल्लेबाज की जरूरत है। इसमें सीएस के और कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) है। सीएसके के महेंद्र सिंह धोनी के अगले आईपीएल में खेलने पर संशय बना हुआ है।

गौरतलब है कि आईपीएल के अगले सत्र को देखते हुए ट्रेडिंग विंडो बाद चार जून से ही शुरू हो गई थी और यह 2026 के खिलाड़ियों की नीलामी की तारीख से एक सप्ताह पहले तक जारी रहेगी। खिलाड़ियों की नीलामी समापत होने के बाद विंडो फिर से खुलेगी और अगले सत्र की शुरुआत से ठीक एक महीने पहले बंद हो जाएगी। ट्रेड-ऑफ कई तरह के होते हैं। इसमें टीमों की आपसी सहमति के बाद एक ही कीमत पर खिलाड़ियों की अदला-बदली होती है। इसमें अधिक कीमत वाले खिलाड़ी को रखने वाली फ्रेंचाइजी को शेष राशि मिलती है, वहीं एकतरफा नकद सौदा भी होता है इसमें एक फ्रेंचाइजी नीलामी से पहले अपने पर्स को बढ़ाने के लिए खिलाड़ी को बेचती है। ''इसमें सबसे अहम बात यह है कि हर टीम अपनी टीम को मजबूत करने वाली किसी भी चीज के लिए तैयार रहती है। सैमसन पिछले कई वर्षों से राजस्थान टीम का अहम हिस्सा रहे है पर कप्तान के तौर पर रियान पराग के सामने आने के बाद उनके लिए टीम में बने रहना आसान नहीं होगा। पिछले सत्र में जब सैमसन चोटिल थे जब पराग ने टीम की कमान संभाली थी। सैमसन के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी और खराब फार्म से भी रॉयल्स उन्हें बदलना चाहेगी।

भूस्खलन के कारण केदारनाथ यात्रा अस्थायी रूप से रोकी गई

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड में सोनप्रयाग के पास मुनकटिया में भूस्खलन के कारण केदारनाथ यात्रा को अस्थायी रूप से रोक दिया गया है। भारी बारिश के कारण हुए भूस्खलन से सड़क पूरी तरह से अवरुद्ध हो गई है। राज्य आपदा प्रतिवादन बल (एसडीआरएफ) ने गौरीकुंड से लौट रहे करीब 40 फंसे हुए केदारनाथ तीर्थयात्रियों को सुरक्षित सोनप्रयाग पहुंचाया। रुद्रप्रयाग पुलिस ने सूचित किया है कि सड़क साफ होने के बाद यात्रा फिर से शुरू होगी। वार्षिक चार धाम यात्रा, जिसमें केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री की तीर्थयात्राएं शामिल हैं, हिंदू धर्म में सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक यात्राओं में से एक है। उत्तराखंड में लगातार भारी भारी बारिश के कारण व्यापक व्यवधान जारी है। चमोली पुलिस के अनुसार, ताजा भूस्खलन के कारण बद्रीनाथ राष्ट्रीय राजमार्ग उमट्टा में अवरुद्ध हो गया है। यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग पर भी सड़क संपर्क बुरी तरह प्रभावित हुआ है, जिसके कुछ हिस्से बह गए हैं। उत्तरकाशी पुलिस ने बताया है कि यमुनोत्री राष्ट्रीय राजमार्ग दो स्थानों पर अवरुद्ध है और इसे बहाल करने में समय लग सकता है। इस वर्ष केदारनाथ धाम में तीर्थयात्रियों की अभूतपूर्व आमद देखी गई है, जिसका श्रेय बेहतर सुविधाओं और बढ़ती आध्यात्मिक रुचि को दिया जा रहा है। अधिकारियों ने उच्च ऊंचाई वाली यात्रा को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए बढ़ी हुई सुरक्षा और चिकित्सा प्रतिक्रिया टीमों को भी तैनात किया है। भगवान शिव को समर्पित केदारनाथ मंदिर हिमालय में 11,000 फीट से अधिक की ऊंचाई पर स्थित है। इस वर्ष केदारनाथ यात्रा के द्वार 2 मई को श्रद्धालुओं के लिए खोले गए थे।

16 वर्षीय दुष्कर्म पीड़िता को गर्भ समाप्त करने की अनुमति को एम्स देगा चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) ने दिल्ली उच्च न्यायालय के उस आदेश को चुनौती दी है, जिसमें एक 16 वर्षीय दुष्कर्म पीड़िता को 27 सप्ताह का गर्भ समाप्त करने की अनुमति मिली थी। एम्स ने मुख्य न्यायाधीश डी.के. उपाध्याय और न्यायमूर्ति अनीश दयाल की पीठ के समक्ष तर्क दिया कि गर्भपात से लड़की के भविष्य के प्रजनन स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। एम्स की ओर से अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्या भाटी ने कहा कि मेडिकल बोर्ड की राय है कि लड़की के स्वास्थ्य की रक्षा होनी चाहिए। उन्होंने अदालत से अपील की कि वे बच्ची के कानूनी संरक्षक बनें। वकील भाटी ने बताया कि गर्भधारण अधिनियम के तहत, 24 सप्ताह के बाद गर्भावस्था केवल तभी समाप्त की जा सकती है जब महिला के जीवन को गंभीर खतरा हो या भ्रूण में जन्मजात असामान्यताएं हों। सिंगल बेंच ने अपने आदेश में सुप्रीम कोर्ट के विभिन्न फैसलों का हवाला दिया था, जहां 27 सप्ताह से अधिक और इतना ही नहीं 33 सप्ताह की गर्भावधि वाले मामलों में भी गर्भपात की अनुमति दी गई थी। अदालत ने एम्स को भ्रूण के ऊतकों को संरक्षित करने और डीएनए पहचान के लिए रिकॉर्ड रखने का भी आदेश दिया था। राज्य प्राधिकारियों को लड़की की चिकित्सा प्रक्रिया और देखभाल का खर्च वहन करने का निर्देश दिया गया था। लड़की के वकील के अनुसार, उसका यौन उत्पीड़न 2024 में दिवाली पर और फिर मार्च 2025 में हुआ। उसे अपनी गर्भावस्था का पता तब चला जब वह अपनी बहन के साथ डॉक्टर के पास गई। पुलिस ने मार्च में हुए यौन उत्पीड़न के आरोपी को गिरफ्तार किया है, लेकिन पिछले साल के आरोपी को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है।

मणिपुर : तीन उग्रवादी गिरफ्तार, हथियार और गोला-बारूद जब्त

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के इंफाल घाटी जिलों में सुरक्षा बलों ने विभिन्न प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े तीन उग्रवादियों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बिष्णुपुर जिले के मैत्रम इलाके से प्रतिबंधित प्रेपक (प्रो) संगठन के एक सदस्य को गिरफ्तार किया जिसकी पहचान ओइनम हेमनजीत सिंह के रूप में हुई है। इंफाल पूर्वी जिले के सेकमाइजिन मानिंग लेईकाई इलाके से सुरक्षा बलों ने प्रतिबंधित 'कांगलीपाक कम्युनिस्ट पार्टी' (पीडब्ल्यूजी) संगठन से जुड़े एक उग्रवादी को भी गिरफ्तार किया। गिरफ्तार किए गए उग्रवादी की पहचान ओइनम तोम्बा सिंह (57) के रूप में हुई जो काकचिंग और थौबल जिलों में विभिन्न पेट्रोल पंपों से जबरन वसूली की गतिविधियों में लिप्त था। पुलिस ने काकचिंग जिले के एलांग खांगपोकपी अवांग लेईकाई से पीडब्लूजी के एक सदस्य को भी गिरफ्तार किया जिसकी पहचान लौरेम्बम सुरेश (47) के रूप में हुई है। इस बीच, सुरक्षा बलों ने एंड्रो खुमन (बरुनी हिल) की तलहटी से एक .303 राइफल, मैगजीन सहित दो नौ एमएम पिस्तौल, एक 12 बोर सिंगल बैरल बंदूक, चार हथगोले, चार्जर सहित एक वायरलेस सेट और दो डेटोनेटर जब्त किए।

गुरुग्राम के मानेसर में 500 एकड़ में बनेगा डिज्नीलैंड, नायब सिंह सैनी सरकार ने दी मंजूरी

गुरुग्राम (एजेंसी)। हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार ने मानेसर में पचगांव चौक के पास करीब 500 एकड़ भूमि पर डिज्नीलैंड बनाने को मंजूरी दे दी है। यह परियोजना कुंडली-मानेसर-पलवल एक्सप्रेसवे और हरियाणा ऑर्बिटल रेल कॉरिडोर पर स्थित होगी। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में एक विश्व स्तरीय मनोरंजन केंद्र स्थापित करना है, इससे हरियाणा में पर्यटन को बढ़ावा मिले और राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिले। मुख्यमंत्री सैनी के अनुसार, डिज्नीलैंड परियोजना से हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होने है। बुनियादी ढांचे का विकास होगा और आसपास के क्षेत्रों में भी बड़ा बदलाव आएगा। गुरुग्राम को परियोजना के लिए सबसे आदर्श स्थान माना गया है, क्योंकि यहां कई फॉर्च्यून कंपनियों के मुख्यालय हैं और यह राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके अलावा वर्तमान में हर साल होने वाले सूरजकुंड मेले की सफलता को देखते हुए, सरकार ने अब साल में तीन बार मेले आयोजित करने का विचार किया है।

लापरवाही से गाड़ी चलाने में मौत होने पर बीमा कंपनियां मुआवजा देने बाध्य नहीं

-सड़क हादसे और बीमा से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट ने सुनाया अहम फैसला

नई दिल्ली (एजेंसी)। सड़क हादसे और बीमा से जुड़े मामले में सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। कोर्ट ने साफ कहा कि अगर कोई लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए दुर्घटना का शिकार होता है और उसकी जान चली जाती है तो बीमा कंपनियां उसे पैसे देने के लिए बाध्यु नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने दो टूक कहा कि ओवरस्पीड या स्टंट मामले में हादसा होने पर बीमा का पैसा नहीं मिलेगा। इसके लिए बीमा कंपनियों को मजबूर नहीं किया जा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और आर महादेवन की पीठ ने इस फैसले के साथ ही पीड़ित परिवार को राहत देने से इनकार करते हुए कहा कि तेज गति और लापरवाही से गाड़ी चलाते हुए दुर्घटना में जान गई है तो इसका भुगतान बीमा कंपनियों को नहीं करना होगा। कोर्ट ने आदेश में कहा कि शिकायतकर्ता ने लापरवाही से गाड़ी चलाई, नियम तोड़े और कार पलट गई, जिसमें उसकी जान चली गई। ऐसे मामलों में बीमा कंपनियों पर देनदारी नहीं

बनती है। बता दें हादसे में जान गंवाने वाले एनएस रविशा के परिवार ने यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी से 80 लाख रुपए मुआवजे की मांग की थी। इस मांग को खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने कहा कि जब मौत व्यक्ति की अपनी गलती से होती है और कोई बाहरी कारण शामिल नहीं होता, तो परिवार मुआवजा नहीं मांग सकता। सुप्रीम कोर्ट ने कर्नाटक हाईकोर्ट के पिछले साल 23 नवंबर के फैसले को बरकरार रखा, जिसमें उनके मुआवजे के दावे को खारिज कर दिया गया था।

बता दें यह मामला 18 जून 2014 का है, जब एनएस रविशा मल्लासंद्रा गांव से अरसीकेरे शहर की ओर अपनी कार से जा रहे थे। उनके साथ पिता, बहन और बच्चे भी थे। लापरवाही से तेज गति में गाड़ी चलाई और यातायात नियमों का उल्लंघन किया, जिससे वाहन से नियंत्रण खो दिया और कार पलट गई। हादसे में रविशा की मौत हो गई। इसके बाद उनकी पत्नी, बेटे और माता-पिता ने 80 लाख रुपए मुआवजे की मांग की थी। उनका दावा था कि वह एक ठेकेदार थे और प्रति माह 3 लाख रुपये कमा रहे थे। पुलिस ने अपनी चार्जशीट में खुलासा किया कि दुर्घटना रविशा की लापरवाही से गाड़ी चलाने के कारण हुई। लिहाजा मोटर दुर्घटना ट्रिब्यूनल ने परिवार के दावे को खारिज कर दिया था।

भारत ने फिर की सख्ती : बैन हुए पाकिस्तानी सेलिब्रिटीज के सोशल मीडिया हैंडल

नई दिल्ली। पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई कदम उठाए हैं। उनमें पाकिस्तानी सेलिब्रिटीज के सोशल मीडिया अकाउंट्स को बैन करने जैसी कार्रवाई भी शामिल है। हालांकि बुधवार को उनके अकाउंट अनब्लॉक किए गए थे, लेकिन इसके एक दिन बाद ही एक बार फिर से ब्लॉक कर दिए गए हैं। गुरुवार सुबह से ही शाहिद अफरीदी, मावरा होकेन, युमना जैदी, हानिया आमिर और फवाद खान जैसे लोकप्रिय सितारों के इंस्टाग्राम और ट्विटर अकाउंट्स भारतीय यूजर्स के लिए बैन हो गए हैं। सरकार की ओर से बैन हटाने या दोबारा लागू करने को लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। ऐसे में यह स्पष्ट नहीं है कि यह कदम स्थायी है या अस्थायी। पाकिस्तानी सेलिब्रिटीज के खिलाफ यह प्रतिबंध भारत के सैन्य अभियान ऑपरेशन सिंदूर के बाद लगाया गया था। भारत ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में आतंकवादियों के ठिकानों को निशाना बनाया था। भारत के द्वारा आतंकवादियों के खिलाफ उठाए गए कदमों की कई पाकिस्तानी हस्तियों ने सोशल मीडिया पर आलोचना की थी, जिसके बाद भारतीय यूज़र्स के लिए उनके अकाउंट्स को ब्लॉक कर दिया गया था। बुधवार को इन सितारों के अकाउंट्स कुछ घंटों के लिए फिर से भारत में दिखाई देने लगे थे, जिससे लगा कि शायद सोशल मीडिया बैन हटा लिया गया है। लेकिन गुरुवार सुबह तक भारतीय यूज़र्स को इंस्टाग्राम पर संदेश दिखने लगा जिसमें लिखा आ रहा है, भारत में यह अकाउंट उपलब्ध नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमने इस सामग्री को प्रतिबंधित करने के लिए कानूनी अनुरोध का अनुपालन किया है। बुधवार को अचानक इन अकाउंट्स के लौटने पर फैंस ने आश्चर्य जताया और सोशल मीडिया पर खूब चर्चा हुई। लेकिन एक दिन बाद ही दोबारा बैन लग जाने से अब यूजर्स में नाराजगी और भ्रम की स्थिति है।

एंड पिक्चर्स ला रहा है धमाकेदार फिल्म फेस्टिवल चीनीवुड : मॉन्स्टर एडिशन

मुंबई (एजेंसी)। इस मानसून, तैयार हो जाइए एक ऐसे तूफान के लिए जो बारिश से नहीं, बल्कि आग उगलते राक्षसों, काले जादू और जबर्दस्त जंग से भरा होगा। इस जुलाई, एंड पिक्चर्स पेश कर रहा है चीनीवुड : मॉन्स्टर एडिशन– एक अनोखा फिल्म फेस्टिवल, जहां फैंटेसी और फ्यूरी आमने-सामने होंगे, और राज करेंगे खतरनाक मॉन्स्टर्स। तो एंड पिक्चर्स के साथ कदम रखिए उस दुनिया में, जहां एनर्जी है फुलऑन और रोमांच है बेमिसाल। 4 जुलाई से, हर शुक्रवार, एंड पिक्चर्स लेकर आएगा एक बेहद रोमांचक सफर झ ऐसी मॉन्स्टर मूवीज के साथ, जो जबर्दस्त एक्शन से भरपूर होंगी, जहां आमने-सामने होंगे साहसी योद्धा और खौफनाक राक्षस, और जादुई कहानियां। इन फिल्मों में आप रहस्यमयी दुनिया की सैर करेंगे, जबर्दस्त लड़ाइयां देखेंगे, और महसूस करेंगे उन कहानियों का जादू जहां कुछ भी मुमकिन है। चाहे वो आसमान में उड़ता ड्रैगन हो या अंधेरे में छिपा कोई रहस्यमयी साम्राज्य – हर फिल्म देगी आपको थ्रिल, ड्रामा और ऐसे पल जो आप कभी नहीं भूलेंगे। एंड पिक्चर्स हमेशा से अपने युवा दर्शकों के लिए नया और कुछ अलग एंटरटेनमेंट पेश करता रहा है। इसकी दमदार प्रोग्रामिंग में भारत और दुनियाभर की फिल्मों का जबर्दस्त संगम है। इन्हीं पेशकशों में से एक है चीनीवुड, जो अपने भव्य विजुअल्स और हाई-एनर्जी कहानियों के लिए दर्शकों के बीच खास पहचान बना चुका है। अब उसी चीनीवुड का अगला स्तर है – मॉन्स्टर एडिशन, जिसमें होंगे खतरनाक जीव, हैरतअंगेज एक्शन और बिना रुके चलने वाला एडवेंचर। ये एडिशन वाकई में एक मॉन्स्टर हिट बनेगा जो लेकर आएगा ताजगी, थ्रिल और एक ऐसा सिनेमाई अनुभव जो आम नहीं, बेहद खास होगा।

भारतीय संविधान में राजनैतिक हित के लिए धर्मनिरपेक्ष शब्द को जोड़ा गया : अविमुक्तेश्वरानंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती महाराज ने भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्ष शब्द को लेकर बड़ा बयान दिया। शंकराचार्य ने कहा कि यह शब्द मूल रूप से भारतीय संविधान का हिस्सा नहीं था, बल्कि धर्मनिरपेक्ष को राजनैतिक हित के लिए बाद में जोड़ा गया। उनके अनुसार यह शब्द संविधान की मूल प्रकृति से मेल नहीं खाता, इसकारण अक्सर चर्चा का विषय बन जाता है। स्वामी सरस्वती ने कहा कि मूल रूप से संविधान में धर्मनिरपेक्ष शब्द नहीं था, इस शब्द को बाद में जोड़ा गया। इसी कारण हैं कि यह भारतीय संविधान की प्रकृति के अनुरूप नहीं है और इस मुद्दे को बार-बार उठाया जाता है।

महाराज के अनुसार कि धर्म का अर्थ है

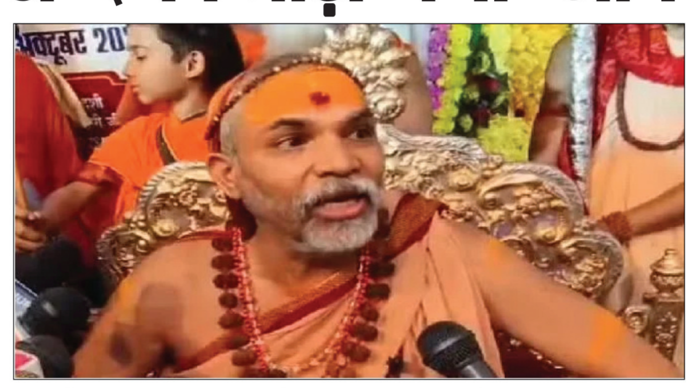

सही और गलत के बारे में सोचना और सही को अपनाना और गलत को अस्वीकार करना। शंकराचार्य ने कहा, धर्मनिरपेक्ष होने का मतलब है कि हमें सही या गलत से कोई लेना-देना नहीं है। ऐसा किसी के जीवन में नहीं हो सकता। इसलिए यह शब्द भी सही नहीं है। उन्होंने कहा कि ये शब्द आपातकाल के दौरान जोड़े थे और ये बीआर अंबेडकर द्वारा तैयार मूल पाठ का हिस्सा नहीं थे।

कांग्रेस नेताओं ने दत्तात्रेय की टिप्पणी को लेकर भारतीय जनता पार्टी और आरएसएस की आलोचना की है, जबकि उपाध्यक्ष जगदीप धनखड़ और केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने उनकी मांग का समर्थन किया है। सीपीआई सांसद पी संदोष कुमार ने संघ प्रमुख मोहन भागवत को पत्र लिखकर सवाल किया कि क्या संगठन वास्तव में भारतीय संविधान को स्वीकार करता है। भागवत को लिखे पत्र में सीपीआई सांसद ने कहा कि अब समय आ गया है कि आरएसएस ध्रुवीकरण के लिए इन बहसों को भड़काना बंद करे। उन्होंने कहा कि ये शब्द ÷मनमाने ढंग से डाले गए÷ नहीं बल्कि आधारभूत आदर्श हैं।

सुप्रीम कोर्ट की वकील को 9 दिन रखा डिजिटल अरेस्ट, जालसाजों ने ठग लिए 3 करोड़

नोएडा। सेक्टर-47 में रहने वाली सुप्रीम कोर्ट में वकील रह चुकी बुजुर्ग महिला को नौ दिन तक डिजिटल अरेस्ट कर तीन करोड़ 29 लाख रुपये ठग लिए। आरोपियों ने उनसे दिल्ली, महाराष्ट्र और कोलकाता में खुले बैंक खातों में रकम ट्रांसफर कराई। आशंका जताई जा रही है कि ठगी की रकम किराये के खातों में गई। पूछताछ के क्रम में जालसाजों ने महिला को 16 जून से 24 जून तक डिजिटल अरेस्ट करके रखा। महिला के बैंक खातों और उसमें जमा राशि के बारे में जानकारी एकत्र की। महिला से कहा गया कि वह अपनी एफडी तुड़वा लें और सारी रकम उनके बताए गए खाते में ट्रांसफर कर दें। ठगों द्वारा यह भी वादा किया गया कि जांच के बाद पूरी रकम मूल खाते में वापस आ जाएगी। महिला को लगा वह सच में बड़े संकट में फंस गई हैं और पुलिस अधिकारी उसको केस से बाहर निकालने में मदद कर रहे हैं। झांसे में आने के बाद महिला ने ठगों द्वारा बताए खाते में पांच बार में करीब तीन करोड़ 30 लाख रुपये ट्रांसफर कर दिए।

यूपी में दुकानों के साइनबोर्ड पर नाम और पहचान लिखने को लेकर राजनीति शुरू

-सपा कर रही तुष्टिकरण की राजनीति, नाम लिखने में क्या दिक्कत : पाठक

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी सरकार ने कांवड़ यात्रा मार्ग पर स्थित सभी दुकानों को अपने साइनबोर्ड पर मालिक का नाम और पहचान दिखाना अनिवार्य कर दिया है। इस फैसले पर सपा समेत विपक्षी दलों ने सवाल उठाए हैं। इस पर यूपी के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने विपक्ष पर तुष्टिकरण की राजनीति का आरोप लगाया है।

पाठक ने गुरुवार को कहा कि समाजवादी पार्टी के लोग हमेशा प्रदेश में तुष्टिकरण की राजनीति करते हैं। उनका तुष्टिकरण का पुराना इतिहास है। हमारी प्रतिबद्धता कानून व्यवस्था को चाक-चौबंद करना है और हर स्थिति में कानून व्यवस्था को मेंटेन करेंगे। धर्म-कर्म के लिए कांवड़ यात्रा पर जाने वाले लोगों को कोई दिक्कत न हो, इसकी व्यवस्था की जाएगी। साथ ही व्रत के दौरान खाने-पीने की दुकान शुद्ध मिले, इसकी भी व्यवस्था करेंगे।

उन्होंने कहा कि हर खरीदार का अधिकार है कि वह जाने कि विक्रेता कौन है और वह

किससे सामग्री खरीद रहा है। इस मुद्दे को उठाकर सपा राजनीति कर रही है। सपा प्रदेश को आतंक और दंगों की आग में झोंकना चाहती है। मैं पूछता हूं कि अगर कोई खाने-पीने का सामान बेच रहा है तो उसे नाम लिखने में क्या दिक्कत है? समाजवादी पार्टी के लोगों के बयान निंदनीय हैं। वहीं मंत्री दयाशंकर ने कहा कि मुझे लगता है कि किसी को पहचान बताने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मैं खुद मंत्री हूं और जहां भी जाता हूं या रहता हूं, मुझसे भी पहचान पत्र मांगा जाता है और मैं दिखाता भी हूं। इसमें अपमानजनक कुछ नहीं है।

मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि अगर सरकार सावन के पवित्र महीने में पवित्र कांवड़ यात्रा में भाग लेने वाले हमारे भक्तों की सुरक्षा के लिए काम कर रही है, तो इससे किसी को क्या परेशानी है? हमें इस बात की निगरानी क्यों नहीं करनी चाहिए कि उन्हें क्या परोसा जा रहा है? मैं पूछता हूं कि नाम छिपाने के पीछे कौन सी मजबूरी है?

कांवड़ियों के लिए मेरठ रोड और एक्सप्रेसवे पर बंद होंगे भारी वाहन, वन वे होगा लागू

गाजियाबाद (एजेंसी)। कांवड़ियों को कहीं कोई असुविधा न हो इसके लिए दिल्ली-मेरठ रोड पर भारी वाहनों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी चल रही है। वहीं, 15 जुलाई से इन मार्गों को वन-वे किया जा सकता है। इसके अलावा दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे पर डासना से मेरठ तक भी यही व्यवस्था लागू करने की योजना है। कांवड़ यात्रा को शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के लिए पुलिस लाइन में अंतरराज्यीय स्तर पर समन्वयक बैठक हुई। इसमें कांवड़ यात्रा को लेकर की गईं तैयारियों पर चर्चा की गई। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त आलोक प्रियदर्शी ने बताया कि 11 जुलाई से दिल्ली-मेरठ रोड और दिल्ली मेरठ एक्सप्रेसवे के चौथे फेज (डासना से मेरठ) पर भारी वाहनों का संचालन बंद कर करने की तैयारी है। इस दौरान गंगनहर पटरी और पाइपलाइन मार्ग पर भी भारी वाहनों का प्रवेश पूरी तरह बंद करने की योजना है।

उन्होंने बताया कि दूधेश्वरनाथ मंदिर के आसपास और जीटी रोड पर अंतिम चार दिन के दौरान रूट डायवर्जन किया जा सकता है। ऐसे में वाहन चालकों को वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करना होगा। इस बार अतिरिक्त मार्गों पर पुलिसबल मौजूद रहेगा, ताकि कोई भी वाहन कांवड़ मार्ग पर न आ सके। शिवरात्रि और कांवड़ यात्रा के दौरान दूधेश्वरनाथ मंदिर समेत सभी मार्गों की ड्रोन से निगरानी होगी।

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त के अनुसार, रूट डायवर्जन प्लान लागू होने के बाद दिल्ली से आने वाले वाहन चौधरी चरण सिंह मार्ग (रोड नंबर 58) का प्रयोग कर यूपी गेट (गाजीपुर बॉर्डर) होते हुए एनएच-9 से जा सकेंगे। वहीं, दिल्ली से जिन्हें हरिद्वार, अमरोहा, मुरादाबाद और लखनऊ आदि स्थानों पर जाना है, वे यूपी गेट से प्रवेश कर एनएच-9 का प्रयोग करते हुए डासना से ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे होते हुए जा सकेंगे। इसके अलावा एनएच नौ के जरिये हापुड़ होते हुए मेरठ भी जा सकेंगे। वहीं, बुलंदशहर और हापुड़ की ओर से आने वाले वाहन लालकुआं से सीधे गाजियाबाद शहर की ओर न आकर एनएच-9 का प्रयोग करते हुए दिल्ली जा सकेंगे।

जीटी रोड भी बंद होगा

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त के मुताबिक, सावन के पहले सोमवार से जीटी रोड स्थित दूधेश्वरनाथ मंदिर के आसपास का मार्ग बंद करने की योजना है। अभी बनी योजना के अनुसार, चौधरी मोड़ से हापुड़ तिराहा या मेरठ तिराहा की ओर जाने वाले वाहन घंटाघर फ्लाईओवर से होकर भेजे जा सकते हैं। फ्लाईओवर के नीचे से किसी भी वाहन को जाने नहीं देने की योजना है। विजयनगर की तरफ से भी वाहन को गोशाला बैरियर से आगे दूधेश्वरनाथ की ओर नहीं भेजने की योजना है। हालांकि, यह व्यवस्था श्रद्धालुओं की भीड़ देखते हुए लागू की जाएगी।

बिहार वोटर लिस्ट पर जो काम हो रहा है उसकी निगरानी करें: आयोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने चुनाव आयोग से मुलाकात कर बिहार में चुनाव से ठीक पहले हो रहे विशेष गहन संशोधन (एसआईआर) से संबंधित मुद्दों पर

अपनी शंका, आपत्ति दर्ज की तो आयोग ने उन्हें संवैधानिक व्यवस्था में आयोग को दिये गए लिखित अधिकारों की पुस्तिका पकड़ा दी। फिर उनसे पूछा, आप बताएं आयोग कहाँ और कौन सा गैर कानूनी, गैर संवैधानिक कार्य कर रहा है। आयोग वही कर रहा है जो आयोग का कर्तव्य है। अधिकार है।

चर्चा के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने निर्वाचन आयोग के मुख्यालय में मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार, निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधु और डॉ. विवेक जोशी के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। यह बैठक आज शाम को आयोजित की गई, जिसमें सभी पक्षों के विचारों को सुनने के लिए आयोग ने प्रत्येक राजनीतिक दल से दो-दो प्रतिनिधियों को शामिल करने का निर्णय लिया। कुछ प्रतिनिधियों को अपॉइंटमेंट दिया गया था, जबकि कुछ बिना अपॉइंटमेंट, बिना पूर्व सूचना के आये आयोग सूत्रों ने बताया उन्हें भी बैठक में शामिल होने की अनुमति प्रदान की गई। निर्वाचन आयोग ने स्पष्ट किया कि बिहार में विशेष गहन संशोधन (एसआईआर) का आयोजन भारत के संविधान के अनुच्छेद 326, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम (आरपी एक्ट) 1950 और 24 जून 2025 को जारी निर्देशों के अनुसार किया जा रहा है। यह प्रक्रिया मतदाता सूची को अद्यतन और सटीक बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई है ताकि कोई भी पात्र मतदाता मतदान के अधिकार से वंचित न रहे। बैठक के दौरान राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों ने एसआईआर से संबंधित कई महत्वपूर्ण चिंताएँ और सुझाव रखे। इनमें मतदाता सूची में त्रुटियों का सुधार, नए मतदाताओं का पंजीकरण, डुप्लिकेट प्रविष्टियों को हटाना और तकनीकी व प्रशासनिक प्रक्रियाओं को और अधिक प्रभावी बनाने जैसे मुद्दे शामिल थे। आयोग ने प्रत्येक प्रतिनिधि द्वारा उठाए गए सभी मुद्दों का विस्तार से जवाब दिया और उनकी चिंताओं का समाधान करने का पूर्ण आश्वासन दिया। आयोग ने इस प्रक्रिया को पारदर्शी, समावेशी और निष्पक्ष बनाने के लिए सभी दलों के सहयोग की सराहना की। निर्वाचन आयोग ने विशेष रूप से सभी राजनीतिक दलों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने एसआईआर प्रक्रिया को जमीनी स्तर पर मजबूत करने के लिए 1.5 लाख से अधिक बूथ लेवल एजेंट्स (बीएलए) नियुक्त किए।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह*, प्रधान संपादक- देवेंद्र सिंह** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**